04 - नए वैश्विक संकट के समय 80 वीं यूएन महासभा

05 - दीप्त सुरों का अवसान - जुबिन दा की धुनें रह जाएंगी

A Daily News Magazine

इंदौर

शुक्रवार, 26 सितंबर, 2025

06 - पंडित दीनदयाल का सारा जीवन सेवा, समर्पण और राष्ट्रभक्ति का अनुपम...

07 - फ़ाइल में दफ़न ज़िंदगी

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 10 अंक 342, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

प्रसंगवश

लद्दाख में हिंसक आंदोलन संयोग है या कोई विदेशी प्रयोग?

नीरज कुमार दुबे

लद्दाख में गृह मंत्रालय ने स्थिति को शाम चार बजे तक नियंत्रण में लाने की पुष्टि की और साथ ही यह भी कहा कि पुरानी या भड़काऊ वीडियो सोशल मीडिया पर न फैलाएं। इससे यह संकेत मिलता है कि हिंसा फैलाने में सोशल मीडिया की भी बड़ी भूमिका रही।

भारत के लिए रणनीतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण और संवेदनशील क्षेत्र लद्दाख हाल के कुछ समय से लगातार राजनीतिक उथल-पुथल और असंतोष का केंद्र बना हुआ है। ऐसा लगता है कि कोई साजिश है जो इस क्षेत्र को लगातार गलत कारणों से सुर्खियों में रख रही है। ऐसा लगता है कुछ ताकतें हैं जो यहां असंतोष भड़काने में लगी हुई हैं। कश्मीर में पत्थरबाजी बंद होना और लद्दाख में शुरू होना कोई संयोग है या विदेशी ताकतों का प्रयोग, इस बात का पता तो जांच एजेंसियां लगा ही लेंगी लेकिन इतना तो स्पष्ट दिख ही रहा है कि स्वभाव से शांत रहने वाले इस केंद्र शासित प्रदेश में अशांति फैलाने के प्रयास निरंतर हो रहे हैं। देखा जाये तो लद्दाख में एक दिन पहले हुई हिंसक घटनाओं ने पूरे देश को चौंका दिया, जिसमें चार लोगों की मृत्यु हो गयी और 80 से अधिक लोग घायल हो गये। खास बात यह रही कि इन घटनाओं के केंद्र में पर्यावरण कार्यकर्ता सोनम वांगचुक का नाम एक बार फिर प्रमुखता से उभर कर सामने आया है।

सोनम वांगचुक स्वयं को जलवायु कार्यकर्ता के रूप में प्रस्तुत करते हैं, लेकिन उनके बयानों और आंदोलनों ने कई बार लद्दाख में अस्थिरता पैदा की है। वर्ष 2024 में उन्होंने दिल्ली की ओर एक पदयात्रा के दौरान प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा था कि लद्दाख को लोकतांत्रिक अधिकारों से वंचित किया जा रहा है और बेरोज़गारी बढ़ रही है। उनके शब्दों में, 'लद्दाखियों के पर काट दिए गए हैं, उन्हें लोकतंत्र नहीं दिया गया और उनके हाथ काट दिए गए हैं, क्योंकि रोजगार उपलब्ध नहीं है।' ऐसे बयानों ने न केवल युवाओं में असंतोष को हवा दी बल्कि यह संदेश भी दिया कि केंद्र सरकार जानबूझकर स्थानीय लोगों को दरकिनार कर रही है।

उल्लेखनीय है कि सोनम वांगचुक दिल्ली बॉर्डर पर धरना दे चुके हैं और वहाँ से लौटकर उन्होंने लद्दाख के युवाओं में आंदोलन की लहर जगाने की कोशिश की थी। आरोप है कि वह बार-बार ऐसे मंच चुनते हैं, जहाँ से उनका संदेश सीधे-सीधे लद्दाख के संवेदनशील समाज को आंदोलित करता है।

बुधवार को जिस तरह से राज्य के दर्जे और 'छठी अनुसूची' की मांग को लेकर प्रदर्शन हिंसक हुआ, वह लद्दाख के हालिया इतिहास का सबसे काला दिन कहा जा सकता है। लेह की सड़कों पर कर्फ्यू लगाना पड़ा, वाहन जलाए गए, पुलिस पर हमले हुए और अंततः सुरक्षा बलों को भीड़ पर नियंत्रण के लिए आंसू गैस छोड़नी पड़ी। देखा जाये तो यह कोई स्वस्फूर्त घटना नहीं, बल्कि लगातार चल रही असंतोष की राजनीति का परिणाम था। केंद्रीय गृह मंत्रालय ने स्थिति को शाम चार बजे तक नियंत्रण में लाने की पुष्टि की और साथ ही यह भी कहा कि पुरानी या भड़काऊ वीडियो सोशल मीडिया पर न फैलाएं। इससे यह संकेत मिलता है कि हिंसा फैलाने में सोशल मीडिया की भी बड़ी भूमिका रही।

देखा जाये तो लद्दाख की भौगोलिक स्थिति इसे और भी संवेदनशील बनाती है। यह क्षेत्र सीधे पाकिस्तान और चीन की सीमा से सटा हुआ है। यहां किसी भी प्रकार की अशांति भारत की सुरक्षा और सामरिक हितों पर सीधा प्रभाव डाल सकती है। विशेषज्ञों का मानना है कि यदि स्थानीय स्तर पर असंतोष को हवा दी जाती है, तो इसका फायदा दुश्मन देशों द्वारा उठाया जा सकता है। चीन और पाकिस्तान लंबे समय से लद्दाख में अस्थिरता पैदा करने की कोशिश करते रहे हैं। ऐसे में वांगचुक जैसे लोगों के भड़काऊ बयान और आंदोलन न केवल स्थानीय शांति को खतरे में डालते हैं, बल्कि यह राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए भी जोखिमपूर्ण हैं।

हालांकि यह सच है कि लद्दाख के लोगों की कुछ वास्तविक चिंताएँ हैं जैसे- राज्य की मांग, संविधान की छठी अनुसूची में सुरक्षा और रोजगार के अवसर। लेकिन जब इन्हीं मुद्दों को इस तरह प्रस्तुत किया जाता है कि लोग शासन से पूरी तरह मोहभंग महसूस करें और हिंसा पर उतारू हो जाएँ, तब यह आंदोलन लोकतांत्रिक अधिकारों की मांग से हटकर अराजकता का रूप ले लेता है। सोनम वांगचुक पर आरोप है कि वह अपनी लोकप्रियता का इस्तेमाल जनभावनाओं को शांत करने की बजाय भड़काने में करते हैं।

देखा जाये तो लद्दाख को स्थायी शांति और विकास की ओर ले जाने के लिए केंद्र सरकार को अब और अधिक संवेदनशील तथा संतुलित दृष्टिकोण अपनाना होगा। गृह मंत्रालय ने संवैधानिक सुरक्षा देने की बात दोहराई है, जो कि सही दिशा में कदम है। लेकिन साथ ही यह भी आवश्यक है कि समाज के भीतर से ऐसे तत्वों को चिन्हित किया जाए जो आंदोलन की आड़ में क्षेत्र को अस्थिर करने का प्रयास करते हैं।

लद्दाख भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा का प्रहरी है। यहां हिंसा और अव्यवस्था किसी भी कीमत पर स्वीकार्य नहीं हो सकती। सोनम वांगचुक जैसे नेताओं को यह समझना होगा कि उनके शब्द और कार्य केवल आंदोलन को नहीं, बल्कि पूरे देश की सुरक्षा को प्रभावित करते हैं। लोकतंत्र में असहमति का स्थान है, लेकिन जब असहमति हिंसा में बदल जाए, तो यह न केवल उस क्षेत्र बल्कि पूरे राष्ट्र के लिए खतरे का संकेत बन जाती है।

साथ ही लद्दाख के युवाओं को भी यह समझना होगा कि वह ऐसे नेताओं से सावधान रहें जो लोकतांत्रिक तरीकों से अपनी बात सरकार तक पहुँचाने की बजाय उग्र आंदोलनों और टकराव की राह चुनते हैं। सोनम वांगचुक जैसे लोग भले ही आंदोलनों की शुरुआत करें और युवाओं को सड़कों पर उतरने के लिए प्रेरित करें, लेकिन जब स्थिति हिंसा में बदलती है, तो वही लोग शांति की अपील करके स्वयं किनारे हो जाते हैं। तब तक नुकसान केवल उन मासूम युवाओं का होता है, जिनका भविष्य दांव पर लग चुका होता है। यह समय है कि लद्दाख के युवा विवेकपूर्ण निर्णय लें और लोकतांत्रिक व्यवस्था के भीतर रहकर अपनी मांगें रखें, ताकि उनका आंदोलन दुश्मन की साजिश का हिस्सा न बने और न ही उनका जीवन हिंसा की आग में झुलसे।

(प्रभासाक्षी डॉट कॉम पर प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

बांके बिहारी के दर्शन, फिर निधिवन की लगाई परिक्रमा

18 कोच वाली विशेष ट्रेन से मथुरा पहुंचीं राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू

- **कन्नौज का इत्र और विशेष पूजा की अनूठी झलक-** इस दर्शन की खासियत यह रही कि राष्ट्रपति की पूजा-अर्चना में कन्नौज से मंगाए गए विशेष इत्र का प्रयोग किया गया। माना जाता है कि कन्नौज का इत्र वृंदावन की परंपरा और भक्ति रस से गहरे तौर पर जुड़ा हुआ है। मंदिर प्रबंधन ने इसे राष्ट्रपति के स्वागत के लिए खास तौर पर तैयार करवाया था। पूरे कार्यक्रम के दौरान सुरक्षा के इतने कड़े इंतजाम रहे कि बांके बिहारी मार्ग पर स्थित घरों के दरवाजे तक बंद करवा दिए।

मथुरा (एजेंसी)। भारत की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू गुरुवार को विशेष ट्रेन से वृंदावन पहुंचीं। यह सिर्फ एक औपचारिक दौरा नहीं था, बल्कि आस्था और परंपरा से जुड़ा वह क्षण था, जिसने मथुरा-वृंदावन को एक बार फिर राष्ट्रीय फलक पर ला दिया। सुबह लगभग आठ बजे दिल्ली से रवाना हुई ट्रेन करीब दस बजे वृंदावन रोड रेलवे स्टेशन पहुंची। राष्ट्रपति के लिए विशेष रूप से तैयार इस ट्रेन में 18 कोच लगाए गए थे, जिनमें से 12 कोच केवल राष्ट्रपति और उनके स्टाफ के लिए आरक्षित थे। इन डिब्बों में प्रेसिडेंशियल सुइट, डीलक्स सुइट, रेस्टोरेंट, लाउंज और पावर कार तक मौजूद थी। स्टेशन पर राष्ट्रपति का स्वागत गन्ना विकास एवं चीनी उद्योग मंत्री चौधरी लक्ष्मी नारायण, मथुरा के मेयर विनोद अग्रवाल और एडीजी अनुपमा कुलश्रेष्ठ ने किया। इसके साथ ही स्थानीय प्रशासन और पुलिस बल पहले से ही पूरी मुस्तैदी में दिखे। वृंदावन पहुंचते ही राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू का पहला पड़ाव विश्व विख्यात ठाकुर बांके बिहारी मंदिर रहा।

कांग्रेस सरकार में टैक्स व महंगाई दोनों चरम पर थी

- **पीएम मोदी बोले-भाजपा सरकार में तो बचत ही बचत है**

पीएम ने कहा-तभी देश जीएसटी बचत उत्सव मना रहा

बांसवाड़ा (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुरुवार को बांसवाड़ा के नापला में कहा- कांग्रेस राज में लूट ही लूट थी। भाजपा सरकार में बचत ही बचत है। तभी देश जीएसटी बचत उत्सव मना रहा है। पीएम ने कहा- कांग्रेस के समय हालात खराब क्यों थे। कांग्रेस सरकार देश के लोगों को लूट रही थी। कांग्रेस सरकार में टैक्स और महंगाई दोनों चरम थी। 2014 के पहले की बात कर रहा हूं। आपने जब मोदी को आशीर्वाद दिया तो हमारी सरकार ने कांग्रेस की लूट को बंद किया। ये आजकल मुझ पर बहुत गुस्से में रहते हैं, इसका कारण ये ही है। कांग्रेस सरकार 100 रुपए की खरीद पर 31 रुपए टैक्स लेती थी। 2017 में यही सामान 118 रुपए में आने लगा। अब जीएसटी में बदलाव के बाद 105 रुपए देना पड़ता है। कांग्रेस की तुलना में 26 रुपए बचत हो रही है। कांग्रेस के राज में आपको 500 रुपए का जूता 575 रुपए का आता था।

कांग्रेस 500 रुपए के जूते पर 75 रुपए टैक्स वसूलती थी। नवरात्र के पहले दिन जीएसटी में बहुत बड़ा सुधार किया है। भारत जीएसटी बचत त्योहार मना रहा है। घर में माताओं-बहनों के लिए रसोई का खर्च कम हो गया है। कांग्रेस सरकारों ने बिजली के लिए कुछ नहीं किया, पहले बिजली जाना नहीं, बिजली आना न्यूज हुआ करती थी। मोदी ने कहा- विकास की गाड़ी दौड़ रही है।

पीएम बोले-

बिजली है तो दुनिया हमारे पास है- पीएम बोले- बिजली है तो दुनिया हमारे पास है, लेकिन हमारे देश में कांग्रेस की सरकारों ने बिजली के महत्व पर ध्यान ही नहीं दिया। 2014 में जब मुझे सेवा का मौका दिया और दायित्व संभाला, तब देश के ढाई करोड़ घर ऐसे थे, जहां बिजली का कनेक्शन नहीं था। आजादी 70 साल के बाद भी बिजली नहीं थी। गांवों में पोल तक नहीं थे। गांवों में तो 4 से 5 घंटे बिजली आ जाए तो बड़ी बात हो जाती है। लोग चुटकला सुनाते थे कि हमारे यहां बिजली गई ये न्यूज नहीं थी, बिजली आई ये न्यूज थी। हमारे यहां 1 घंटे बिजली आई इसका चुटकुला सुनाते थे।

देवी मां का पांचवां रूप स्कंदमाता के नाम से प्रचलित है। भगवान् कार्तिकेय का एक नाम स्कन्द भी है जो ज्ञानशक्ति और कर्मशक्ति के एक साथ सूचक हैं। स्कन्द इन्हीं दोनों के मिश्रण का परिणाम है।

सुप्रभात

उस ने दूर रहने का
मशवरा भी लिखा है
साथ ही मुहब्बत का
वास्ता भी लिखा है

उस ने ये भी लिखा है
मेरे घर नहीं आना
साफ़ साफ़ लफ़्ज़ों में
रास्ता भी लिखा है

कुछ हुरूफ़ लिखे हैं
ज़ब्त की नसीहत में
कुछ हुरूफ़ में उस ने
हौसला भी लिखा है

शुक्रिया भी लिखा है
दिल से याद करने का
दिल से दिल का है
कितना फ़ासला भी लिखा है

क्या उसे लिखें 'मोहसिन'
क्या उसे कहें 'मोहसिन'
जिस ने कर के बे-जाँ,
फिर जान-ए-जाँ भी लिखा है।

- मोहसिन नक़वी

बुंदेलखंड की धरती से सीएम मोहन यादव का ऐलान

जैसीनगर का नाम 'जय शिवनगर' होगा

किसानों को मिलेगा उनकी उपज का वाजिब दाम

भोपाल/सागर (नप्र)। मध्य प्रदेश के बुंदेलखंड स्थित सागर जिले की जैसीनगर तहसील का नाम अब 'जय शिवनगर' होगा। मुख्यमंत्री मोहन यादव ने बृहस्पतिवार को इसकी घोषणा की। सीएम मोहन यादव ने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के विचारक पंडित दीनदयाल उपाध्याय की जयंती के अवसर पर 'अन्न सुरक्षा संकल्प समारोह' को संबोधित करते हुए कहा कि जैसीनगर का नाम 'जय शिवनगर' करने की मैं घोषणा करता हूं। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के सागर जिले के जैसीनगर आगमन पर बुंदेली परम्परा अनुसार स्वागत किया गया। किसानों को भावांतर भुगतान योजना से उनके खाते में बोनस का पैसा दिया जाएगा।

जैसीनगर को नगर परिषद का भी दर्जा- उन्होंने कहा कि जैसे ही इस बारे में प्रस्ताव आएगा, औपचारिक प्रक्रिया पूरी की जाएगी। उन्होंने जैसीनगर को नगर परिषद का दर्जा देने की भी घोषणा की। जैसीनगर सुरखी विधानसभा क्षेत्र का हिस्सा है। मोहन यादव ने इस दौरान लगभग 200 रुपये करोड़ की लागत के विभिन्न विकास कार्यों का भूमिपूजन एवं लोकार्पण भी किया तथा 'सिटी गैस डिस्ट्रीब्यूशन पोर्टल' की शुरुआत की। इसके तहत पाइप लाइन बिछाकर घरों तक पाइप वाले प्राकृतिक गैस कनेक्शन दिए जाएंगे।

धीरे-धीरे बड़े-बड़े गांव तक गैस के कनेक्शन घर-घर मिलेंगे- सीएम ने कहा कि सिटी पोर्टल के माध्यम से नगर निगम, नगर पालिका, नगर परिषद, उसके बाद धीरे-धीरे बड़े-बड़े गांव तक गैस के कनेक्शन घर-घर मिलेंगे। एकल खिड़की पोर्टल के माध्यम से कंपनियों को घर घर कनेक्शन देने का काम होगा। उन्होंने कहा कि बुंदेलखंड के लोग जो मांगेंगे, सरकार वह सब देने के लिए तैयार है। मुख्यमंत्री ने लाड़ली बहना योजना को लेकर भी घोषणा की और कहा कि भैया दूज से लाड़ली बहनों को 1500 रुपये प्रति माह दिए जाएंगे।

बिहार चुनाव से वोटों की गिनती का नया सिस्टम

- **जब तक सभी पोस्टल बैलेट न गिने जाएं, तब तक ईवीएम के आखिरी राउंड की काउंटिंग नहीं होगी**

चुनाव आयोग ने वोटों की गिनती के नियमों में किया बदलाव

नई दिल्ली (एजेंसी)। चुनाव आयोग ने वोटों की गिनती के नियमों में बदलाव किया है। अब पोस्टल बैलेट की गिनती में अगर देरी होती है तो ईवीएम काउंटिंग रोक दी जाएगी। साथ ही बैलट ज्यादा होने पर काउंटिंग टेबल भी बढ़ाई जाएंगी। दरअसल काउंटिंग के दिन बैलट की गिनती सुबह 8.00 बजे शुरू होती है, जबकि ईवीएम काउंटिंग 8.30 बजे की जाती है। अभी तक यह होता था कि कई सेंटर पर मशीन से काउंटिंग जल्दी पूरी हो जाती थी, जबकि बैलट में समय लगता था। अब चुनाव आयोग के नए नियम के अनुसार, बैलट की गिनती बाकी होने पर ईवीएम के सेकेंड लास्ट राउंड की काउंटिंग को रोक दिया जाएगा। तब तक बैलट की काउंटिंग को पूरा करना होगा। इलेक्शन कमीशन ने गुरुवार को प्रेस नोट जारी करके इसकी जानकारी दी। नए नियम की शुरुआत बिहार विधानसभा चुनाव से होगी। मान लीजिए किसी बूथ पर ईवीएम मशीनों में 10 हजार वोट डाले गए हैं। इन्हें 5 राउंड में पूरा गिना जा सकता है। लेकिन बैलट वोट 1 हजार हैं और उनकी काउंटिंग में समय लग रहा है। तो ईवीएम काउंटिंग को चौथे राउंड पर रोक दिया जाएगा।

सीबीएसई 10वीं और 12वीं की परीक्षा 17 फरवरी से

- **10वीं के छात्र दो बार परीक्षा दे सकेंगे, दूसरे एग्जाम 15 मई से 1 जून तक**

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की 10वीं और 12वीं की बोर्ड परीक्षाएं 17 फरवरी से होंगी। यह पहली बार है जब कक्षा 10वीं की बोर्ड परीक्षा एक शैक्षणिक सत्र में दो बार होगी। सीबीएसई परीक्षा नियंत्रक संयम भारद्वाज ने कहा, पहली परीक्षा 17 फरवरी से 6 मार्च, 2026 तक होने की संभावना है। जबकि दूसरी बार परीक्षा 15 मई से 1 जून तक हो सकती है। उन्होंने कहा कि कक्षा 12वीं की परीक्षा 17 फरवरी से 9 अप्रैल, 2026 तक होने की संभावना है। भारद्वाज ने कहा, सामान्य दिशानिर्देश के अनुसार, उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन प्रत्येक विषय की परीक्षा के लगभग 10 दिन बाद शुरू होगा और 12 दिन के भीतर पूरा हो जाएगा। उदाहरण के लिए, यदि कक्षा 12वीं की फिजिक्स की परीक्षा 20 फरवरी, 2026 को होगी, तो मूल्यांकन 3 मार्च, 2026 को शुरू होगा।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 30 °c | न्यूनतम 25°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ शुक्रवार, 26 सितंबर 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

97 तेजस विमानों से हवा में मार करने की बढ़ेगी रफ्तार

भारतीय वायुसेना के लिए रक्षा मंत्रालय ने किया खास करार

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय वायुसेना को मजबूत करने के लिए गुरुवार को एक अहम करार किया गया। इसके तहत रक्षा मंत्रालय ने गुरुवार को भारतीय वायुसेना के लिए 97 तेजस लड़ाकू विमान खरीदने के लिए हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (एचएएल) के साथ 62,370 करोड़ रुपए के अनुबंध पर हस्ताक्षर किए। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता वाली सुरक्षा मामलों की कैबिनेट समिति (सीसीएस) द्वारा इस बड़ी खरीद को हरी झंडी दिए जाने के लगभग एक महीने बाद अनुबंध पर हस्ताक्षर किए गए हैं। एयरोस्पेस क्षेत्र की इस सरकारी दिग्गज कंपनी के साथ किया गया यह दूसरा ऐसा अनुबंध है। फरवरी 2021 में, रक्षा मंत्रालय ने भारतीय वायुसेना के लिए 83 तेजस एमके-1ए जेट विमानों की खरीद के लिए एचएएल के साथ 48,000 करोड़ रुपए का सौदा किया था। मंत्रालय ने बताया कि भारतीय वायुसेना के लिए 62,370 करोड़ रुपए (करों को छोड़कर) की लागत से 97 तेजस हल्के विमान 'एमके-1ए' और संबंधित उपकरणों की खातिर अनुबंध पर हस्ताक्षर किए।

भाजपा ने 3 राज्यों के लिए नियुक्त किए चुनाव प्रभारी

नई दिल्ली (एजेंसी)। भाजपा ने गुरुवार को बिहार, पश्चिम बंगाल और तमिलनाडु में विधानसभा चुनाव के लिए प्रभारी और सह प्रभारी नियुक्त किए हैं। बिहार के लिए केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान को चुनाव प्रभारी, उत्तर प्रदेश के उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य और केंद्रीय जल शक्ति मंत्री सीआर पाटिल को सह-प्रभारी बनाया है। वहीं, केंद्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री भूपेंद्र यादव को पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव का प्रभारी और त्रिपुरा के पूर्व मुख्यमंत्री बिप्लब कुमार देब सह प्रभारी बनाया गया है। इसके अलावा, तमिलनाडु में भाजपा सांसद बैजयंत पांडा को प्रभारी और मुरलीधर मोहोल को सह प्रभारी नियुक्त किया गया है। बिहार में अक्टूबर-नवंबर में विधानसभा चुनाव होने हैं, यहां फिलहाल नीतिश कुमार की जेडीयू और भाजपा गठबंधन की सरकार है।

बिहार चुनाव में महागठबंधन का कैंपेन लीड करेगी कांग्रेस

तेजस्वी यादव को साफ संदेश, मुश्किल में लालू के लाल

पटना (एजेंसी)। बिहार विधानसभा चुनाव 2025 में महागठबंधन के प्रचार को कांग्रेस लीड करेगी। पार्टी अपने मुद्दों को महागठबंधन के चुनावी घोषणा पत्र में भी शामिल कराएगी। कांग्रेस महासचिव नासिर हुसैन ने गुरुवार को यह बात कही है। राजनीतिक गलियारों में कांग्रेस के इस बयान पर चर्चा शुरू हो गई है। माना जा रहा है कि कांग्रेस ने तेजस्वी यादव की पार्टी राष्ट्रीय जनता दल (आरजेडी) को साफ संदेश दे दिया है कि बार गठबंधन में बड़े भाई की भूमिका में कौन रहेगा। तेजस्वी को मुख्यमंत्री का चेहरा घोषित करने के सवाल को भी कांग्रेस के आला नेता अब तक टालते रहे हैं। कांग्रेस महासचिव नासिर हुसैन ने पटना स्थित पार्टी प्रदेश कार्यालय सदाकत आश्रम में गुरुवार को प्रेस वार्ता की। इस दौरान उन्होंने कहा कि कांग्रेस अपने मुद्दों को मैनिफेस्टो में शामिल कराएगी और सत्ता में आने पर अपने वादों को पूरा भी करेगी। उन्होंने नासिर हुसैन ने अति पिछड़ा वर्ग के आरक्षण को बढ़ाने के कांग्रेस के संकल्प को दुहराया। उन्होंने कहा कि

पार्टी ने कांग्रेस शासित राज्यों कर्नाटक और तेलंगाना में इसे लागू करवाया है। बिहार में भी इसे लागू करवाया जाएगा। बिहार में अगले महीने में विधानसभा चुनाव की घोषणा संभव है।

भारत की मारक क्षमता में इजाफा

ट्रेन से लॉन्च हुई अग्नि मिसाइल, 2000 किमी तक प्रहार

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत ने अपनी सामरिक क्षमताओं को और मजबूत करते हुए गुरुवार को मध्यम दूरी की अग्नि-प्राइम मिसाइल का सफल उड़ान परीक्षण किया। यह परीक्षण पहली बार विशेष रूप से तैयार किए गए रेल-आधारित मोबाइल लॉन्चर प्रणाली से किया गया। इस उपलब्धि की जानकारी रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर साझा की। रक्षा

मंत्री ने अपने संदेश में कहा, अग्नि-प्राइम मिसाइल के सफल परीक्षण पर डीआरडीओ, स्ट्रैटेजिक फोर्सेज कमांड और सशस्त्र बलों को बधाई। इस परीक्षण ने भारत को उन चुनिंदा देशों की श्रेणी में शामिल कर दिया है, जिन्होंने रेल नेटवर्क से 'ऑन द मूव' कैनिस्टराइज्ड लॉन्च सिस्टम विकसित किया है। उन्होंने कहा कि यह अगली पीढ़ी की मिसाइल 2000 किलोमीटर तक की मारक क्षमता के लिए डिज़ाइन की गई है और कई उन्नत सुविधाओं से लैस है। नया रेल-आधारित मोबाइल लॉन्चर बिना किसी पूर्व शर्त के देशभर में काम करेगा।

स्वास्थ्य विभाग में की जाएगी 2,000 विशेषज्ञ डॉक्टर्स की भर्ती : उप मुख्यमंत्री शुक्ल

बिलकिसगंज में 'स्वस्थ नारी - सशक्त परिवार अभियान' के स्वास्थ्य शिविर का किया शुभारंभ

भोपाल। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के जन्म दिवस से प्रारंभ किए गए सेवा पखवाड़ा एवं स्वस्थ नारी - सशक्त परिवार अभियान के अंतर्गत सीहोर जिले के बिलकिसगंज सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (सीएचसी) में आयोजित स्वास्थ्य शिविर का शुभारंभ किया। इस अवसर पर उन्होंने शिविर में दी जा रही चिकित्सा सेवाओं और रक्तदान शिविर का अवलोकन किया तथा रक्तदान करने वाले नागरिकों को प्रोत्साहित भी किया। अस्पताल के निरीक्षण के दौरान श्री शुक्ल ने चिकित्सकों से योजनाओं और गतिविधियों की जानकारी प्राप्त की और प्रबंधन एवं संचालन को और बेहतर बनाने के निर्देश दिए। उन्होंने टीबी मुक्त भारत अभियान के तहत टीबी मरीजों को पोषण टोकरी भी वितरित की।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में देश और प्रदेश में स्वास्थ्य सेवाओं का लगातार विस्तार और सुदृढ़ीकरण किया जा रहा है। सरकार का लक्ष्य है कि प्रत्येक नागरिक तक गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सुविधाएँ पहुँचें और विशेष रूप से महिलाओं के स्वास्थ्य और सशक्तिकरण पर ध्यान दिया जाए। उन्होंने कहा कि स्वस्थ नारी - सशक्त परिवार अभियान का मुख्य उद्देश्य महिलाओं और किशोरियों की स्वास्थ्य एवं पोषण संबंधी समस्याओं की

पहचान कर उनका त्वरित समाधान सुनिश्चित करना है। इस अभियान में ईट-राइट, पोषण माह, योग जैसे वेलनेस कार्यक्रम और निक्षय मित्र जैसी पहल भी शामिल हैं। सेवा पखवाड़ा के अंतर्गत रक्तदान शिविरों का आयोजन कर जरूरतमंद मरीजों को रक्त उपलब्ध कराने का प्रयास किया जा रहा है।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि यह अभियान मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में प्रधानमंत्री श्री मोदी के जन्म दिवस (17 सितंबर) से प्रारंभ होकर 2 अक्टूबर तक चल रहा है। इसके अंतर्गत आयोजित स्वास्थ्य शिविरों में उच्च रक्तचाप, मधुमेह, विभिन्न प्रकार के कैंसर, एनीमिया और सिकल सेल रोग जैसी गंभीर बीमारियों की जांच और उपचार की व्यवस्था की जा रही है। उन्होंने कहा कि जिन स्वास्थ्य केंद्रों में विशेषज्ञ चिकित्सकों की कमी है, वहाँ इस कमी को दूर करने के लिए 2,000 विशेषज्ञ डॉक्टर्स की भर्ती की जाएगी। साथ ही टेलीमेडिसिन प्रणाली को बढ़ावा दिया जा रहा है, ताकि नागरिकों को विशेषज्ञ परामर्श के लिए अनावश्यक भागदौड़ न करनी पड़े और वे डिजिटल माध्यम से सीधे स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर सकें।

लाड़ली बहनों और किसानों से विश्वासघात, वादों की असलियत सामने : जीतू पटवारी

देवास। देवास ज़िले के ग्राम टोकखुर्द में नवरात्रि के पावन अवसर पर आयोजित चुनरी यात्रा में प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष श्री जीतू पटवारी ने भारी जनसमूह को संबोधित किया। इस अवसर पर पूर्व मंत्री श्री सज्जन सिंह वर्मा, पूर्व जिला कांग्रेस अध्यक्ष श्री मनोज राजानी, ग्रामीण जिला कांग्रेस अध्यक्ष श्री मनीष चौधरी सहित कांग्रेसजनों और हजारों की संख्या में ग्रामीणजन मौजूद रहे।

सभा को संबोधित करते हुए श्री जीतू पटवारी ने भाजपा सरकार पर सीधा हमला बोला और कहा किसोयाबीन 6,000 और गेहूँ 2,700 देने का वादा कर किसानों से वोट लिया गया, लेकिन किसानों को अब तक लाभ नहीं मिला। लाडली बहनों को 3,000 देने का वादा कर वोट लिए, लेकिन सरकार केवल 1,250 दे रही है। शेष 1,800 की चोरी की जा रही है। यह महिलाओं और किसानों से खुला विश्वासघात है। उन्होंने जनता से सवाल करते हुए कहा कि जिन बहनों को हर माह 3,000 देने का वादा किया गया था, क्या उन्हें यह राशि मिल रही है? और जब भीड़ से 'नहीं' की आवाज़ आई तो उन्होंने कहा कि यह सरकार वादों के नाम पर केवल वोट लेने आई थी, देने का इरादा कभी नहीं था।

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष ने मुख्यमंत्री मोहन यादव को सीधी चेतावनी दी कि मोहन यादव जी मातृशक्ति के हक़ के रू. 3,000 तुरंत दीजिए, वरना बीजेपी के ही लोगो से आपको कुर्सी बचाना मुश्किल हो जाएगा।

किसानों के समर्थन मूल्य और बहनों की योजनाओं पर भाजपा सरकार का दोहरा रवैया उजागर। लाड़ली बहनों को 3,000 देने की माँग, 1,800 की चोरी बंद करने की चेतावनी।किसानों को सोयाबीन और गेहूँ के लिए घोषित दरों पर तुरंत भुगतान की मांग।

जनता से अपील: कांग्रेस आपके अधिकारों की लड़ाई पूरी ताकत से लड़ रही है।श्री जीतू पटवारी ने कहा कि कांग्रेस केवल वादों की राजनीति नहीं करती, बल्कि धरातल पर जनहित की योजनाओं को लागू करने में विश्वास रखती है। उन्होंने जनता को भरोसा दिलाया कि कांग्रेस हमेशा किसानों, महिलाओं और आमजन के साथ खड़ी है।

माध्यमिक एवं प्राथमिक शिक्षक चयन परीक्षा-2024 का परिणाम जारी

भोपाल। मध्यप्रदेश कर्मचारी चयन मंडल ने गुरुवार को माध्यमिक शिक्षक एवं प्राथमिक शिक्षक चयन परीक्षा-2024 का परिणाम जारी कर दिया है। यह परीक्षा मध्यप्रदेश शासन के स्कूल शिक्षा विभाग एवं जनजातीय कार्य विभाग के अंतर्गत कुल 9,882 पदों पर शिक्षकों की सीधी भर्ती के लिए आयोजित की गई थी।

नागपुर। वरिष्ठ पत्रकार डॉ. सुधीर सक्सेना को हिंदी में विज्ञान लेखन के लिए नागपुर में महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेन्द्र फडणवीस ने सम्मानित किया। इस अवसर पर केन्द्रीय मंत्री नितिन गडकरी भी मौजूद थे।

भारत-कनाडा संबंधों में धीरे-धीरे बन रही है बात !

अगले महीने भारत आ रही हैं विदेश मंत्री अनीता आनंद

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत और कनाडा के बीच संबंधों में आई तल्खी दूर होती दिख रही है। इस साल जून में प्रधानमंत्री मोदी की अपने कनाडाई समकक्ष मार्क कार्नी से मुलाकात की थी। अब भारत और कनाडा संबंधों को

सामान्य बनाने की दिशा में एक और कदम बढ़ाने के लिए तैयार दिख रहे हैं। कनाडा की विदेश मंत्री अनीता आनंद अगले महीने नई दिल्ली की यात्रा पर आ सकती हैं। 2023 में दोनों देशों के संबंधों में कड़वाहट आ गई थी। उस समय मार्क कार्नी के पूर्ववर्ती जस्टिन ट्रूडो ने आरोप लगाया था कि भारत सरकार कनाडा की धरती पर खालिस्तानी अलगाववादी हरदीप निज्जर की हत्या में शामिल थी। उसके घटना के बाद से यह दोनों देशों के किसी विदेश मंत्री की पहली द्विपक्षीय यात्रा होगी।

अब पाली के कुल्हड़ में रेलवे स्टेशनों पर परोसी जाएगी चाय

● रेलमंत्री बोले-यहां के सिकोरे की क्वालिटी काफी अच्छी, रेलवे इस्तेमाल करेगा

पाली (एजेंसी)। पाली में बने कुल्हड़ में देशभर के रेलवे स्टेशनों पर चाय परोसी जाएगी। रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा कि पाली में बन रहे मिट्टी के सिकोरे की क्वालिटी काफी अच्छी है। पाली देश के लिए रोल मॉडल बने, इसलिए यहां की महिलाओं द्वारा बनाए गए मिट्टी के सिकोरे रेलवे उपयोग में लेगा। इससे देशभर में प्लेटफॉर्म पर सिकोरे में लोग चाय पीते नजर आएंगे। महिलाओं के रोजगार में इजाफा होगा। रेल मंत्री गुरुवार सुबह करीब 6 बजे ट्रेन से पाली रेलवे स्टेशन पर उतरे।

● **कुर्सी छोड़ जाजम पर बैठकर सुना महिलाओं का संघर्ष-** रेल मंत्री पाली के निकट हेमावास गांव गए। जहां लघु उद्योग भारती की ओर से महिलाओं से चूड़ी पर नग लगाने का काम करवाने के प्रोजेक्ट का निरीक्षण किया। उन्होंने मशीन के जरिए प्लास्टिक की चूड़ियों पर नग लगाने का काम करते देखा। उन्होंने महिलाओं से बातचीत भी की।

एशिया का सबसे बड़ा फूड पार्क बनाएंगे मुकेश अंबानी

सरकार के साथ किया 40,000 करोड़ का समझौता

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत और एशिया के सबसे बड़े रईस मुकेश अंबानी की कंपनी रिलायंस इंडस्ट्रीज फूड सेक्टर में बड़ा दांव खेलने जा रही है। रिलायंस की सहयोगी कंपनी रिलायंस कंज्यूमर प्रोडक्ट्स लिमिटेड ने देश भर में एकीकृत खाद्य विनिर्माण सुविधाएं स्थापित करने के लिए खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय के साथ 40,000 करोड़ रुपये के समझौते पर हस्ताक्षर किए है। सूत्रों ने यह जानकारी दी। सूत्रों ने बताया कि एमओयू पर विश्व खाद्य भारत 2025 कार्यक्रम के दौरान गुरुवार को हस्ताक्षर किए गए। रिलायंस इंडस्ट्रीज ने अगस्त में घोषणा करते हुए कहा था कि वह एआई-संचालित टिकाऊ प्रौद्योगिकियों के साथ फूड पार्क बनाएगी।

सांची विवि में 'मोदी युग' और 'अमृतकाल में भारत' पर विशेष चर्चा

● पत्रकार और शिक्षाविद् प्रो. संजय द्विवेदी से संवाद

भोपाल। साँची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय, सांची में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी पर केंद्रित दो किताबों 'मोदी युग-संसदीय लोकतंत्र का नया अध्याय' और 'अमृतकाल में भारत' पर पुस्तक के लेखक प्रो. संजय द्विवेदी से विशेष परिचर्चा हुई। सेवा पर्व -2025 के अवसर पर अधिष्ठाता प्रो. नवीन कुमार मेहता ने लेखक से संवाद किया।

भरतीय जन संचार संस्थान के महानिदेशक रहे प्रो. संजय द्विवेदी ने सवालों के जवाब में बताया कि उन्होंने 2014 के पहले ही एक लेख में कह दिया था कि देश के अगले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी होंगे। उन्होंने कहा कि अन्ना हज़ारे के आंदोलन के बाद प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी, लोगों के अंदर उम्मीदों को जगाने वाले नेता बन गए, जिन्होंने सोशल इंजीनियरिंग को देश में धरातल पर उतारा है। नरेंद्र मोदी ने भारत की छवि का निर्माण किया है और वो भारत के लोगों को स्थायी विकास की ओर लेकर गए हैं। प्रो. द्विवेदी से जब राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के विषय में सवाल किया गया तो उन्होंने कहा कि संघ को समझने के लिए दिमाग़ से ज़्यादा दिल की ज़रूरत है। उन्होंने कहा कि संघ का कोई विचार नहीं है, भारतीयता और हिंदुत्व का विचार ही संघ का विचार है। संघ विशुद्ध रूप से आचरण पर चलता है।

प्रो. द्विवेदी ने कहा कि उपभोक्तावाद और आकांक्षावाद के कारण समाज दुखी हो रहा है। उन्होंने कहा कि गांधी जी का दर्शन था कि कम वस्तुएं उपयोग करो तो सुखी रहोगे। छात्रों से उन्होंने कहा कि वो सुधीर चंद्रा की लिखी किताब 'गांधी एक असंभव संभावना' ज़रूर पढ़ें जो कि गांधी जी की प्रार्थना सभाओं में उनके विचारों का विश्लेषण है। प्रो. संजय द्विवेदी ने कहा कि हर पत्रकार की एक 'पोलिटिकल लाइन' होनी चाहिए लेकिन 'पार्टी लाइन' नहीं होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि विचारधारा हर एक व्यक्ति की होनी चाहिए और इसमें कोई समस्या नहीं है। आज विचारधारा का नहीं होना संकट है। जब उनसे पूछा गया कि लोग आजकल कम पढ़-लिख रहे हैं तो उन्होंने कहा कि आज का दौर आवाज़, वीडियो और स्थानीय भाषाओं का है क्योंकि मोबाइल पर लोग कम समय में जानकारी जानना पसंद करते हैं। लेकिन किताबें भी भारत में बहुत पढ़ी और बेची जा रही हैं। भले ही मोबाइल कितना भी भटकाव क्यों न पैदा करे। उन्होंने कहा कि लोगों को मीडिया साक्षरता देना आवश्यक हो गया है। अपने अध्यक्षीय संबोधन में विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. वैद्यनाथ लाभ ने लेखक को उनकी किताबों के सृजन के लिए साधुवाद दिया। उन्होंने संस्कृत, पालि के ग्रंथों में भगवान बुद्ध के वर्णन पर भी प्रकाश डाला। इंटरव्यू के माध्यम से ही डीन प्रो. मेहता ने प्रो. संजय द्विवेदी का परिचय भी कराया। छात्रों-अधिकारियों ने भी उनसे सवाल पूछे। धन्यवाद ज्ञापन कुलसचिव श्री विवेक पाण्डेय ने किया। उन्होंने सेवा पर्व के आयोजन के लिए मध्य प्रदेश शासन के संस्कृति मंत्री धर्मेंद्र लोधी व अतिरिक्त मुख्य सचिव शिवशेखर शुक्ला को भी धन्यवाद ज्ञापित किया। सेवा पर्व के उपलक्ष में ही विश्वविद्यालय द्वारा 29 सितंबर को दोपहर 11 बजे से 2 बजे तक एक राष्ट्रीय चित्रकारी प्रतियोगिता आयोजित कर रहा है, जिसमें सभी आयु वर्ग के लोग हिस्सा ले सकते हैं। अलग-अलग आयु वर्ग में प्रथम पुरस्कार 7000, 5000 और 3000 रखे गए हैं।

पेंशनरों ने मांगा लंबित डीआर-सीएस से हस्तक्षेप की मांग

भोपाल। पेंशनर्स वेलफेयर एसोसिएशन ने वित्त विभाग के अपर मुख्य सचिव मनीष रस्तोगी को पत्र लिखकर जनवरी 2025 से बकाया 2 प्रतिशत महंगाई राहत देने की मांग की है। एसोसिएशन के प्रदेश अध्यक्ष आमोद सक्सेना ने बताया कि मध्यप्रदेश राज्य पुनर्गठन अधिनियम 2000 की धारा 49(6) का संबंध ना तो एकीकृत मध्यप्रदेश के पेंशनरों से है और ना ही उत्तरवर्ती मध्यप्रदेश के पेंशनरों से सक्सेना ने दो पत्र उदाहरण के रूप में ज्ञापन के साथ संलग्न कर स्पष्ट किया कि छत्तीसगढ़ राज्य द्वारा एकीकृत मध्यप्रदेश के पेंशनरों को महंगाई राहत की सहमति दी जा रही है ना की उत्तरवर्ती मध्यप्रदेश के पेंशनरों के लिए। एसोसिएशन के संरक्षक गणेश दत्त जोशी ने बताया कि महालेखाकार मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ द्वारा एकीकृत मध्य प्रदेश के पेंशनरी दायित्वों का प्रभाजन कर उत्तरवर्ती मध्यप्रदेश से 73.38 प्रतिशत एवं उत्तरवर्त्ती छत्तीसगढ़ से 26.62 प्रतिशत की वसूली की जा रही है एवं संलग्न वसूली तालिका में पेंशनरों को दी गई महंगाई राहत राशि का कोई उल्लेख नहीं है एवं उत्तरवर्ती मध्यप्रदेश के पेंशनरों को महंगाई राहत देने के संबंध में आज तक छत्तीसगढ़ राज्य द्वारा कोई सहमति नहीं दी गई है ।जोशी ने पेंशनरों के महंगाई राहत के संबंध में मुख्य सचिव से हस्तक्षेप की मांग की है।

जिला शिक्षा अधिकारी, सहायक श्रम आयुक्त को शोकाज नोटिस

इंदौर। कार्य के प्रति लापरवाही बरतने पर कलेक्टर शिवम वर्मा ने जिला शिक्षा अधिकारी और सहायक श्रम आयुक्त को शोकाज नोटिस जारी किया है। कलेक्टर टीएल बैठक में सीएम हेल्पलाइन के लंबित प्रकरणों की समीक्षा कर रहे थे। उन्होंने विभागवार सीएम हेल्पलाइन एवं लोक सेवा गारंटी अधिनियम के प्रकरणों की समीक्षा करते हुए कहा कि सात दिन में निराकरण की गति में ठोस प्रगति लाई जाए। अपर कलेक्टरों को भी निर्देशित किया कि वे अपने अधीनस्थ विभागों की लंबित शिकायतों की व्यक्तिगत मॉनिटरिंग करें। जनसुनवाई आमजन की समस्याओं के समाधान का सबसे प्रभावी मंच है। सभी अधिकारी जनसुनवाई के दिन अनिवार्य रूप से कलेक्टर कार्यालय में उपस्थित रहें और नागरिकों की समस्याएं सुनकर उनका तत्काल सकारात्मक निराकरण करें। बैठक में बताया कि सेवा पखवाड़ा का प्रभावी क्रियान्वयन किया जा रहा है। समयबद्ध कार्यक्रम हो रहें हैं। कलेक्टर ने कहा कि कार्यक्रमों का प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जाए और यह देखा जाए कि हितग्राहियों तक योजनाओं का वास्तविक लाभ पहुंचे। साथ ही उन्होंने पखवाड़े के तहत सभी विभागों को अपने-अपने कार्यालयों में स्वच्छता गतिविधियां चलाने, साफ-सफाई बनाए रखने और लंबित प्रकरणों का शीघ्र निराकरण करने के भी निर्देश दिए। कलेक्टर ने सभी अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए कि आमजन से जुड़ी शिकायतों और योजनाओं के प्रकरण समय-सीमा में निपटाए जाएं। उन्होंने चेतावनी दी कि लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी और दो अधिकारियों को शोकॉज नोटिस जारी किए गए। बैठक में अपर कलेक्टर गौरव बेनल, जिला पंचायत सीईओ सिद्धार्थ जैन, स्मार्ट सिटी के सीईओ सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारी मौजूद रहे। कलेक्टर ने सीएम हेल्पलाइन और लोक सेवा गारंटी के मामलों पर सख्ती बरतने, लंबित शिकायतों की व्यक्तिगत मॉनिटरिंग करने और जनसुनवाई में पूरी गंभीरता से नागरिक समस्याओं का निराकरण करने के निर्देश दिए।

गरबे में विवाद पर युवक पर हमला

इंदौर। बाणगंगा क्षेत्र में मंगलवार रात गरबा आयोजन के दौरान धक्का लगने के विवाद में आरोपियों ने युवक पर हमला कर दिया। विवाद कुशवाह नगर में कमल मूर्ति के पास रात 10.30 बजे हुआ। घायल का नाम विशाल पिता बादाम सिंह ओझा निवासी कर्मा नगर है। फरियादी वहां गरबा देखने गया था। तभी धक्का लगने पर आरोपी और साथी गालियां देने लगे गालियां देने से मना किया तो आरोपी ने मारपीट की। पुलिस ने केस दर्ज कर लिया है।

विधायक गोलू शुक्ला पर आरोप लगाए

इंदौर। विधायक गोलू शुक्ला की बस से रिंगनोदिया में चार लोगों की मौत हो गई थी। मौत के बाद मृतकों के परिजनों ने कोर्ट में केस दायर किया है। केस लगते ही विधायक के समर्थकों ने मृतकों के परिजनों को धमकाना शुरू कर दिया है। मृतकों की रिश्तेदार खुशबू सोलंकी ने बताया कि पिछले दिनों कुछ समर्थकों ने मेरे परिवार के विशालसिंह गौड़ की फेसबुक बंद कर दी। इसके बाद उन्हें कहा कि वे सांवेर थाने में दर्ज शिकायत और कोर्ट केस वापस ले, अन्यथा गंभीर परिणाम भुगतना होंगे। युवती ने सोशल मीडिया पर कहा कि विशाल के साथ कुछ भी अनहोनी होती है तो उसके जिम्मेदार विधायक होंगे। हादसे के बाद आक्रोशित लोगों ने बस चालक के साथ रिंगनोदिया और लव कुश चौराहा पर मारपीट की थी। उधर, मामले में सांवेर पुलिस ने कमजोर धाराओं में बस चालक पर केस दर्ज किया था, जिससे चालक को आसानी से जमानत का लाभ मिल गया। विधायक ने भी स्वीकार किया था कि रिंगनोदिया मे उन्हीं की बस ने टक्कर मारी थी।

200 शवों की अस्थियां नर्मदा में विसर्जित

इंदौर। 40 वर्षों में अब तक 11 हजार 700 से अधिक लावारिस शवों का अंतिम संस्कार करने वाली संस्था 'महाकाल सेवा संस्थान' एवं 'सुल्तान-ए-इंदौर' ने गांधी हाल में 200 शवों की अस्थियों का पूजन कर उन्हें नर्मदा नदी में प्रवाहित किया। ओंकारेश्वर में पिंडदान, तर्पण तथा अस्थि विसर्जन की सभी रस्में संपन्न की गई। संस्था प्रमुख अशोक गोयल ने बताया कि इस अवसर पर सुरेश मोरे, फिरोज पठान, रिंकू ठाकुर एवं विजयेन्द्र यादव उपस्थित थे। जल संसाधन मंत्री तुलसी सिलावट, अण्णा महाराज, भागवताचार्य पुष्पानंद पवन तिवारी एवं समाजसेवी हरि अग्रवाल के आतिथ्य में अस्थि कलश वाहन में ओंकारेश्वर रवाना किया था। कार्यक्रम में गुरुद्वारे से आए पंच प्यारों ने भी अस्थियों के समक्ष अरदास की।

महिला के सिर पर गिरा गरबे का होर्डिंग्स

इंदौर। नवरात्रि पर्व में शहर में बड़े पैमाने पर गरबे के आयोजन हो रहे हैं। कई क्षेत्रों, मार्गों में गरबे के बड़े-बड़े होर्डिंग्स लगे हैं। इन होर्डिंगों में मंत्री, सांसद, विधायक के पोस्टर चस्पा रहते हैं। दबाव प्रभाव के चलते पुलिस और नगर निगम बिना अनुमति लगे इन होर्डिंगों को निकालने की जहमत नहीं उठाती। यही कारण है कि जनप्रतिनिधियों के होर्डिंग बैनर से शहर बदरंग है। लसूड़िया मोरी चौराहा पर गरबा के 500 मीटर लंबा होर्डिंगस दीवार के सहारे लगा हुआ था। इन होर्डिंग्स पर सांवेर विधायक तुलसी सिलावट सहित कई जनप्रतिनिधियों के फोटो लगे थे। पुलिस के अनुसार, सुबह 9 बजे गांव की महिला कहीं जाने के लिए इस होर्डिंग के नीचे से निकल रही थी, तभी होर्डिंग उसके सिर पर गिर गया, जिससे महिला को गंभीर चोट आई। तत्काल राहगीर और ग्रामीण जन उसे अस्पताल लेकर पहुंचे। महिला की पहचान नहीं हो पाई है। पुलिस ने होर्डिंग पर लिखे आयोजक के खिलाफ केस दर्ज कर लिया है।

पुलिस को देख अनियंत्रित कार पेट्रोल पंप की दीवार से टकराई

इंदौर। अनियंत्रित गति से आ रहे चालक ने कार को सयाजी होटल के पास पेट्रोल पंप की दीवार में घुसा दिया। इससे पंप पर काम करने वाले तीन कर्मचारी घायल हो गए। एक घायल की हालत गंभीर बताई जा रही है। घटना विजयनगर थाना क्षेत्र में रात 10.50 बजे की है। पुलिस को पेट्रोल पंप मैनेजर संजय मेवाड़ा निवासी न्यू महेश बाग कॉलोनी ने बताया कि वह पेट्रोल पंप पर बैठे थे। उसी समय बापट चौराहे की ओर से आ रही फोर्ड कार (एमपी-09-ईबी-7828) के ड्राइवर ने ओमनी गार्डन की ओर मुड़ते हुए जैसे ही पुलिस चेकिंग देखी, कार को तेज रफ्तार में रिवर्स किया और पंप की दीवार में टक्कर मार दी, जिससे दीवार गिर गई। इस हादसे में कार चालक ने पंप कर्मचारी मुकेश चौहान को कुचल दिया। इसके बाद दो अन्य वाहन चालकों को टक्कर मारी और आखिर में कार वहां खड़े ट्रक में जाकर भिड़ गया। ट्रक से टकराने के बाद भी चालक भाग निकला। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और कार जब्त कर थाने ले गई। घायल कर्मचारी मुकेश चौहान की हालत गंभीर बताई जा रही है और उसे निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। **सीसीटीवी फुटेज सामने-** हादसे की पूरी घटना पेट्रोल पंप पर लगे सीसीटीवी कैमरों में कैद हो गई है। लेकिन, पंप मैनेजर का आरोप है कि पुलिस ने उनसे कहा कि वीडियो किसी को न दिया जाए। उन्हें धमकाया भी गया। यह भी कहा कि पुलिस ने वीडियो सार्वजनिक करने पर बदनामी होने की बात कही। पुलिस रोजाना रात को ड्रिंक एंड ड्राइव अभियान चलाती है। इस दौरान शराब पीकर वाहन चलाने वालों की धरपकड़ की जाती है। लेकिन, जिस तरह से कार चालक ने हादसे को अंजाम दिया, उससे पुलिस के ड्रिंक एंड ड्राइव अभियान की पोल खुल गई।

इंदौर की डॉक्टर ने 'एक्स' पोस्ट कर नगीना के सांसद पर निशाना साधा

यूपी के सांसद को आत्महत्या करने की धमकी दी, 'तेरे नाम पर जहर खाऊंगी'

इंदौर। स्वीटजरलैंड में रह रही इंदौर की पीएचडी स्कालर डॉ रोहिणी घावरी ने यूपी के सांसद को धमकी भरा 'एक्स' पोस्ट किया है। इसमें लिखा है कि मैं तेरी प्रताड़ना से तंग आकर जहर खाकर आत्महत्या कर लूंगी। इसके बाद युवती ने पोस्ट में सांसद, उसकी पत्नी और बच्चे की तस्वीर भी लगाई।

जानकारी के मुताबिक, यूपी की नगीना सीट से सांसद और भीम आर्मी के संस्थापक चंद्रशेखर आजाद पर यौन उत्पीड़न का आरोप लगाने वाली पीएचडी स्कॉलर डॉ रोहिणी घावरी ने सुसाइड की धमकी दी। बुधवार दोपहर 2 बजे रोहिणी ने एक्स पर सुसाइड की धमकी दी थी। उन्होंने अकाउंट पर 4 घंटे के अंतराल पर तीन पोस्ट किए। एक पोस्ट में रोहिणी ने चंद्रशेखर, उनकी पत्नी और बच्चे की

तस्वीर पोस्ट की। इसमें चंद्रशेखर को गाली देते हुए लिखा कि ये अय्याश मेरा जीवन बर्बाद कर खुशियां मना रहा है। आज ही तेरे नाम पर जहर खाऊंगी। तूने मुझे खत्म कर दिया। रोहिणी ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और पीएमओ को टैग करते हुए लिखा कि मेरी लाश भी भारत वापस मत लाना। किसी ने नहीं सुनी मेरी। सब अपराधी का साथ देते रहे। तुम सबको मेरा अंतिम अलविदा ...। क्राइम ब्रांच पुलिस इस पोस्ट के बाद जांच शुरू कर दी है। डॉ रोहिणी घावरी इंदौर के बीमा अस्पताल में काम करने वाली सफाईकर्मी की बेटी हैं। वह 2019 में हायर एजुकेशन के लिए स्विट्जरलैंड गई थीं। पढ़ाई के दौरान ही वह और चंद्रशेखर एक दूसरे के संपर्क में आए थे। तीन साल तक रिलेशनशिप में रहे। बाद में रोहिणी ने चंद्रशेखर पर यौन उत्पीड़न के आरोप लगाए। डॉ घावरी स्विट्जरलैंड में जॉब कर रही हैं और एनजीओ चला रही हैं। **ऊपर से ऑर्डर नहीं-** आत्महत्या की धमकी पर रोहिणी ने कहा कि मैंने दिल्ली के पुलिस कमिश्नर से कई बार मुलाकात की, सभी सबूत दिए। लेकिन कोई सुनवाई नहीं हो रही। एयरपोर्ट थाने ने पूरे मामले की जांच भी की है। लेकिन, चंद्रशेखर के प्रभाव में पुलिस कार्रवाई नहीं कर रही है। सोशल मीडिया पर जहर खाने की बात लिखे जाने के बारे में कहा कि मैं बहुत परेशान हो चुकी हूं। मेरी कहीं कोई सुनवाई नहीं हो रही। मेरे पास जान देने के अलावा और क्या चारा बचता है! मुझे किसी पर भरोसा नहीं है। हमारे देश में पीड़िता को न्याय के लिए मरना पड़ता है। जब तक आत्महत्या का प्रयास नहीं करती हैं, तब तक कोई सुनता नहीं है। उन्होंने कहा कि जब भी मैं दिल्ली पुलिस कमिश्नर से बात करती हूं तो वे कहते हैं कि ऊपर से कार्रवाई का कोई ऑर्डर नहीं आया है।

18 व्यापारियों का सामान लेकर ट्रक ड्राइवर फरार, 3 थानों पर केस दर्ज

इंदौर में ट्रांसपोर्टर का माल लेकर मिनी ट्रक ड्राइवर फरार

इंदौर। एक ट्रांसपोर्ट का ट्रक ड्राइवर 18 व्यापारियों का माल लेकर भाग गया। ट्रांसपोर्टर की शिकायत पर रावजी बाजार पुलिस ने ड्राइवर के खिलाफ मामला दर्ज किया है। एक हफ्ते पहले ही नौकरी करने आया ड्राइवर ट्रांसपोर्टर की बाइक और मोबाइल भी ले गया। इस मामले की जांच राजेंद्र नगर, द्वारकापुरी और रावजी बाजार पुलिस कर रही है।

मनीष यादव गाड़ी अड्डा पर यादव रोड लाइंस नाम से ट्रांसपोर्ट चलाते हैं। वे मिनी ट्रक से मानपुर के व्यापारियों का माल भेजते हैं। 21 सितंबर को उन्होंने इंदौर से मानपुर के लिए ट्रक रवाना किया। जिसे मूसाखेड़ी का विशाल उर्फ सोनू तोमर चला रहा था। विशाल को ट्रक लेकर निकले काफी समय हो गया था और रास्ते में पड़ने वाले टोल टैक्स पर शुल्क कटने का मैसेज भी नहीं आया। मनीष ने विशाल को कॉल किया, तो उसका मोबाइल बंद था। 5 घंटे बाद विशाल का मोबाइल चालू हुआ तो उसने बताया कि ट्रक खराब हो गया है। ट्रांसपोर्टर ने बताया कि आरोपी ने पहले गाड़ी खराब होने का बहाना बनाकर उनकी टू-व्हीलर ली थी। इसके बाद मोबाइल गुम होने की बात कही, तो मनीष ने उसे किस्तों पर लिया हुआ मोबाइल भी दे दिया। आरोपी बाइक और मोबाइल लेकर भी फरार हो गया।

खाली ट्रक खड़ा मिला - विशाल के बताए पते पर मनीष पहुंचे तो उसे चाबी लगा ट्रक तो मिल गया, पर उसमें माल नहीं था और ड्राइवर विशाल भी गायब था। मनीष को फोन पर भी कोई रिस्पांस नहीं मिला। सीसीटीवी फुटेज में आरोपी विशाल को केंट रोड स्थित एक पेट्रोल पंप के पास खाली ट्रक खड़ा करते हुए देखा गया है। पुलिस के मुताबिक आरोपी ने यादव रोड लाइन्स से जुड़े प्रतिष्ठान (शंकर ट्रेडर्स, जय अम्बे ट्रेडर्स, सिंध ट्रेडर्स, श्याम ट्रेडर्स, सुभाष फ्रूट्स, तोतला ब्रदर्स, सच्चिदानंद ट्रेडर्स, कृष्णा ट्रेडर्स, सतीश ट्रेडर्स, स्वदेशी अब्दुल ट्रेडर्स, रानी इलेक्ट्रिक, सर्विस प्रोविजन, हजारीमल, श्री फलौदी, सतगुरु ट्रेडर्स, अग्रवाल फर्नीचर, सागर एग्रो, नितिन ट्रेडर्स, जानवी ट्रेडर्स) समेत अन्य फर्मों का माल गायब किया।

बच्चे के पिता ने स्कूल संचालक को पीटा

इंदौर। बच्चे को स्कूल में रोका तो पिता ने नाराज होकर संचालक से मारपीट की। मामला परदेशीपुरा थाना क्षेत्र के अन्नपूर्णा बाल मंदिर कुलकर्णी भट्ट की है। फरियादी जगदीश पंड्या ने बताया कि वह स्कूल के संचालक हैं। दो माह से पढ़ाई में कमजोर बच्चों को लेकर एक्स्ट्रा क्लास चला रहे हैं। मंगलवार दोपहर स्कूल की छुट्टी होने के बाद जो बच्चे पढ़ाई में कमजोर थे उन्हें रोका गया था। इस दौरान बच्चे को रुकने के लिए जगदीश के बेटे शिखर ने कहा। तब बच्चे ने रुकने से इनकार कर दिया। इस पर शिखर ने कहा कि अगर आज नहीं रुके तो कल से स्कूल नहीं आए। छात्र बहस करते हुए चले गया। बाद में उसके पिता निर्मल स्कूल में पहुंचे। तब जगदीश अपने कमरे में बैठे थे। निर्मल ने बाहर से अपशब्द कहे और आफिस में घुसकर जगदीश को थप्पड़ मार दिया। इस दौरान उनका बेटा शिखर और पत्नी बाहर आए तो निर्मल ने इस दौरान अपशब्द कहे और धमकी दी कि बेटे को स्कूल से बाहर निकाला तो ठीक नहीं होगा। इसके बाद जगदीश थाने गए और एफआईआर करवा दी। पुलिस ने जांच शुरू कर दी है।

एयरपोर्ट के चूहा कांड में डॉक्टर को हटाया, पेस्ट कंट्रोल पर कार्रवाई नहीं

यात्री को चूहे के काटने के बाद भी कोई चिकित्सा सुविधा नहीं मिली

इंदौर। यात्री को चूहे के काटने की घटना के बाद एयरपोर्ट मैनेजमेंट ऐक्शन में आया। एयरपोर्ट के मेडिकल रूम में तैनात डॉ हर्षवर्धन सिंह को जिम्मेदारी से हटा दिया गया। उनको लापरवाही को लेकर नोटिस भी दिया गया है। डॉक्टर पर यात्री के इलाज में लापरवाही बरतने का आरोप लगाया गया। इंदौर एयरपोर्ट की देशभर के हवाई अड्डों में तीसरी रैंकिंग है। घटना के बाद एयरपोर्ट परिसर का पेस्ट कंट्रोल किया गया, पर एयरपोर्ट पर साफ-सफाई का जिम्मा संभाल रही पेस्ट कंट्रोल ऑफ इंडिया (पीसीआई) के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की। एयरपोर्ट डायरेक्टर वीके सेठ के मुताबिक, पीड़ित यात्री को हरसंभव सहायता उपलब्ध कराई जाएगी। चूहों को खत्म करने के लिए विशेष अभियान चला रहा है। यह घटना 23 सितंबर की है, जब भोपाल के अरुण मोदी इंडिगो एयरलाइंस की फ्लाइट से बेंगलुरु जा रहे थे। उनकी पत्नी साथ थीं। फ्लाइट इंदौर एयरपोर्ट से दोपहर 3 बजकर 5 मिनट उड़ान भरती है। मोदी दंपती दोपहर करीब 1 बजे एयरपोर्ट पहुंचे। फ्लाइट में समय बाकी होने के कारण वे एयरपोर्ट के ग्राउंड फ्लोर पर डिपार्चर हॉल में

इंतजार कर रहे थे। अरुण रिकलाइनर्स पर आराम करने के लिए बैठे थे। इसी दौरान एक चूहा उनकी पैंट में घुस गया। अरुण हड़बड़ाकर उठे। उन्होंने बाहर से ही चूहे को पकड़ा। इस पर चूहे ने उन्हें घुटने के पीछे काट लिया। उन्होंने पैंट उतारी और चूहे को पकड़ा। शोर सुनकर एयरपोर्ट स्टाफ वहां पहुंचा। अरुण को मेडिकल रूम में ले गया। **रैबीज का इंजेक्शन नहीं मिला** - अरुण मोदी हैदराबाद की आईटी कंपनी में सॉफ्टवेयर डेवलपर हैं। वह इंदौर से बेंगलुरु होते हुए कालीकट जा रहे थे। उन्होंने कहा कि मैंने अपने डॉक्टर को फोन लगाया। उन्होंने मुझे तुरंत रैबीज का इंजेक्शन लगाने की सलाह दी। इंदौर एयरपोर्ट के मेडिकल रूम में इंजेक्शन नहीं था। मैंने कहा कि प्रिस्क्रिप्शन लिखकर दे दें, ताकि मैं कहीं और ये इंजेक्शन लगवा सकूं। इस पर डॉक्टर ने प्रिस्क्रिप्शन लिखकर दिया। जिसके आधार पर मैंने बेंगलुरु पहुंचकर इंजेक्शन लगवाया। यात्री ने कहा कि मैंने एयरपोर्ट के मेडिकल रूम में स्टाफ

से टिटनेस का इंजेक्शन लगाने को कहा, तो उन्होंने वो भी नहीं होने की बात कही। नाराजगी जाहिर करने के बाद एयरपोर्ट मैनेजर ने दखल दिया। तब जाकर स्टाफ ने टिटनेस का इंजेक्शन लगाया गया।

चूहों और गंदगी की शिकायत - इंदौर एयरपोर्ट पर इससे पहले भी चूहों को लेकर यात्री कई बार शिकायत कर चुके हैं। कुछ समय पहले एक यात्री ने टर्मिनल में फूड काउंटर के पास चूहों को देखकर उनका वीडियो बनाकर शेयर किया था। एयरपोर्ट पर मच्छर, कॉकरोच और आवारा कुत्तों की शिकायत भी की जा चुकी हैं। तीन दिन पहले भी एक यात्री ने एयरपोर्ट के वॉशरूम में गंदगी के फोटो सोशल मीडिया पर शेयर किए थे। जिसके जवाब में एयरपोर्ट प्रबंधन ने तुरंत सफाई करवाई थी। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की जयंती को देखते हुए एयरपोर्ट पर 17 सितंबर से 2 अक्टूबर तक स्वच्छता ही सेवा पखवाड़ा चलाया जा रहा है।

सिटी बस ने राजबाड़ा के सामने बुजुर्ग को टक्कर मारी, चोट लगी

इंदौर। शहर में एआईसीटीएसएल की सिटी बसें बेलगाम होकर दौड़ती है। यही कारण है कि आए दिन इन बसों के कारण हादसे होते हैं। बुधवार को सिटी बस ने राजबाड़ा के सामने दोपहिया वाहन से खरीदी करने जा रहे बुजुर्ग को टक्कर मारकर घायल कर दिया। इसके बाद राहगीरों ने बस चालक को उतारा और उसकी जमकर लू उतारी। टक्कर लगने से बुजुर्ग के चेहरे पर मामूली चोट आई। जैसे ही हादसा हुआ, वहां से गुजर रहे लोगों ने तुरंत अपनी गाड़ियां बस के आगे खड़ी कर उसे रोका। कुछ लोग बस के केबिन में चढ़ गए और चालक को नीचे उतारकर उसकी पिटाई कर दी। मौके पर मौजूद लोगों ने घायल बुजुर्ग के परिजनों को सूचना देकर बुला लिया। घटना की जानकारी मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस ने बताया कि घायल बुजुर्ग को प्राथमिक उपचार के बाद घर भेज दिया गया है। घटना को लेकर पीड़ित पक्ष ने कोई लिखित शिकायत दर्ज नहीं कराई है। बस चालक कुछ देर रुकने के बाद बस लेकर आगे बढ़ गया। पुलिस ने कहा कि भीड़भाड़ वाले समय में ट्रैफिक नियंत्रण के लिए अतिरिक्त पुलिस बल तैनात किया गया है और व्यवस्था को सुचारू रखने के प्रयास जारी है। लोगों की मानें तो चालक लापरवाहीपूर्वक वाहन चलाते हैं। बसों में जीपीएस और कैमरा लगा होने के बाद भी चालक की गतिविधियों पर नजर नहीं रखी जाती है। कई बार चालक हादसा कर देते है,लेकिन उन पर कोई कार्रवाई नहीं हो पाती है।

समय सीमा तय होने के बाद भी ट्रकों पर कोई असर नहीं

यातायात पुलिस ने चिन्हित किए 19 चौराहे, ट्रक यहां से न गुजरे

इंदौर। रामचंद्र नगर में हुए भयावह सड़क हादसे को पुलिस ने गंभीरता से लिया है। घटना की पुनरावृत्ति रोकने थाने और यातायात पुलिस का अमला लगातार प्रतिबंधित मार्गों पर तैनात होकर ट्राला और ट्रक चालकों पर कार्रवाई कर रही है। ट्रकों का भारी भरकम चालान काटकर उन्हे थाने पर खड़ा किया जा रहा है। कार्रवाई के दौरान ट्रक और ट्रांसपोर्ट एसोसिएशन की मांग पर जिला प्रशासन ने प्रतिबंधित मार्गों पर इन भारवाहक वाहनों की आवाजाही के लिए सुबह 9 से दोपहर 12 तथा शाम 7 से रात 9 बजे तक प्रवेश प्रतिबंधित कर दिया। समयसीमा का निर्धारण होने के बाद भी ट्रकों की आवाजाही पर असर नहीं पड़ा। नतीजतन, दो दिन में यातायात पुलिस ने 5 ट्रकों पर 5-5 हजार रुपए का दंड लगाया। **इन मार्गों को बैन किया-** यातायात पुलिस के अनुसार, ट्रक चालक सुपर कारीडोर चौराहा से एयरपोर्ट की ओर, बिजासन टी से एयरपोर्ट की ओर, चंदन नगर चौराहा से गंगवाल बस स्टैंड, राजीव गांधी चौराहा से भंवरकुआ, अग्रसेन चौराहा से सपना संगीता- छावनी, तेजाजी नगर से आईटी पार्क, तीन इमली चौराहा से मूसाखेड़ी-नवलखा, बिचौली मर्दाना अंडरपास से पीपल्याहाना चौराहा, कनाडिया अंडरपास से बंगाली चौराहा, रेडिसन चौराहा से विजयनगर चौराहा-खजराना, देवासनाका से सत्यसाई चौराहा, बापट चौराहा से विजयनगर, चंद्रगुप्त मौर्य चौराहा से कनकेश्वरी मंदिर परदेशीपुरा, देवगुराडिया से तीन इमली बस स्टैड, नवलखा की तरफ से आजाद नगर की ओर, आईटी पार्क से भवरकुआ की ओर, फूटीकोठी से महूनाका, ट्रांसपोर्ट नगर तिराहा से भंवरकुआ चौराहा, हीरानगर चौराहा से न्याय नगर पर प्रवेश को बैन किया है। **नो एंट्री के लिए सुझाव-** पुलिस ने ट्रांसपोर्ट एसोसिएशन की बैठक ली। इसमें नो इंट्री के संबंध में एसोसिएशन ने सुझाव दिए कि पालदा से नौलखा होते हुए अग्रसेन चौराहा मार्ग पर येलो लाइन का निर्धारण किया जाए। पालदा से अग्रसेन चौराहे तक लोहामंडी क्षेत्र में स्थाई एवं अस्थाई अतिक्रमण को अविलंब दूर किया जाए। नो एंट्री का सुबह का समय बढ़ाकर आठ बजे किया जाए, ताकि रात्रि में लोडिंग वाले ट्रकों को निकलने में सुविधा हो। प्रशासन, व्यावसायिक संस्थाओं और ट्रांसपोर्टर्स के बीच नियमित बैठकें हो। लोहामंडी, छावनी, अनाज मंडी, पालदा, ट्रांसपोर्ट नगर, देवास नाका, सांवेर रोड, पोलोग्राउंड, लकड़ी मंडी, चोइथराम सब्जी मंडी तक भार वाहक वाहनों का संचालन अनवरत जारी रखा जाए। तीन इमली चौराहे के पास पीपीपी मॉडल के अंतर्गत ट्रक पार्किंग बनाया जाए तथा ट्रकों की आवाजही राऊ से इंदौर सब्जी मंडी एवं ट्रांसपोर्ट नगर की तरफ जो भारवाहक वाहनों का मार्ग प्रतिबंधित किया गया हैं उसे पूर्व की व्यवस्था के अनुरूप आवागमन वापस लागू किया जाए।

संपादकीय

नीतीश के वोट बैंक में सेंध?

बिहार कांग्रेस नेता राहुल गांधी की वोट चोरी विरोधी यात्रा की सफलता से कांग्रेस कुछ ज्यादा ही उत्साहित लग रही है। अचानक उसके तेवर राज्य में छोटे भाई से बड़े भाई वाले होते जा रहे हैं। यही कारण है कि वो जहां एकतरफ विस चुनाव में महागठबंधन में 70 सीटें मांग रही है, वहीं उसने तेजस्वी यादव को मुख्यमंत्री पद का दावेदार घोषित करने भी कन्नी काट ली है। माना जा रहा है कि पार्टी सीटों पर कड़ी सौदेबाजी के बाद ही तेजस्वी को भावी सीएम के तौर पर स्वीकार करेगी। लेकिन हाल में उसने बड़ा दांव बिहार की राजधानी पटना में 85 साल बाद कांग्रेस कार्यसमिति (सीडब्लूसी) की बैठक कर के दिया है। इस बैठक में पारित संकल्प पत्र के खास मायने हैं। यह संकल्प पत्र कांग्रेस और महागठबंधन ने जारी किया है। इसे उस अति पिछड़ा वर्ग के मतदाताओं को लुभाने की रणनीति के तौर पर देखा जा रहा है जो नीतीश कुमार का मज़बूत वोट बैंक रहा है। बिहार की राजनीति में अति पिछड़ा वर्ग का 36 प्रतिशत वोट बैंक है। इसे मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का मजबूत आधार माना जाता है। कांग्रेस और इसके सहयोगी दलों ने 'अतिपिछड़ा न्याय संकल्प' पत्र को अति पिछड़ा वर्ग के सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक उत्थान के लिए एक रोडमैप के रूप में पेश किया है। पत्र में आबादी के अनुपात में आरक्षण की सीमा को 50 फीसदी की सीमा को बढ़ाने के लिए प्रयास करने और अति पिछड़ा वर्ग के लिए स्थानीय निकाय चुनाव में आरक्षण को बढ़ाने का वादा भी किया गया है। इसके अलावा कई और फ़ैसले लिए गए हैं। इसके अलावा सभी प्राइवेट कॉलेज-यूनिवर्सिटी में आरक्षण लागू करने, नियुक्तियों में "Not Found Suitable" जैसी व्यवस्था खत्म करने, अतिपिछड़ा वर्ग की सूची में सही प्रतिनिधित्व के लिए कमेटी बनाने, एससी, एसटी, ओबीसी तथा ईबीसी के आवासीय भूमिहीनों को जमीन देने, प्राइवेट स्कूलों की आधी आरक्षित सीटें आरक्षित वर्ग के बच्चों को देने, 25 करोड़ रुपये तक के सरकारी ठेकों में पचास फीसदी आरक्षण, अतिपिछड़ों के खिलाफ़ अत्याचार रोकने का कानून बनाने, आरक्षण की निगरानी के लिए प्राधिकरण बनाने जैसे वादे शामिल हैं। इनमें से कुछ की व्यावहारिकता पर संदेह है। फिर भी कांग्रेस और महागठबंधन का मानना है कि अगर नीतीश के ईबीसी वोट बैंक में सेंध लगा दी जाए तो सत्ता की चाबी उसके हाथ आ सकती है। राहुल गांधी ने इसे ऐतिहासिक 'अतिपिछड़ा न्याय संकल्प पत्र' निरूपित करते हुए कहा कि बिहार में 20 साल से नीतीश कुमार की सरकार है, लेकिन उन्होंने अतिपिछड़ा समाज को न्याय दिलाने के लिए फैसले नहीं लिए। नीतीश सिर्फ वोट ले रहे थे और बदले में अतिपिछड़ा समाज के हक की आवाज दबा रहे थे। हम सरकार बनते ही अतिपिछड़ा न्याय संकल्प को लागू करेंगे। गौरतलब है कि पिछले दो दशकों से नीतीश कुमार ने अति पिछड़ा वर्ग को पंचायती राज में आरक्षण, जीविका योजना और अभियान बसेरा जैसी अपनी नीतियों के जरिए अपने साथ जोड़े रखा है। नीतीश की समाजवादी विचारधारा और 'न्याय के साथ विकास' की नीति ने ईबीसी को एक मजबूत आधार दिया, जिसके चलते वह बार-बार सत्ता में रहे हैं। सवाल यह है कि क्या यह संकल्प पत्र नीतीश कुमार के मजबूत वोट बैंक में सेंध लगा पाएगा? क्या ईबीसी नीतीश की जगह दूसरे किसी को सीएम मानने को तैयार होंगे? बिहार में 2023 के जातीय सर्वेक्षण ने दिखाया कि ईबीसी और ओबीसी मिलकर 63 प्रतिशत आबादी हैं। बेशक अति पिछड़ा न्याय संकल्प महागठबंधन का एक रणनीतिक कदम है। लेकिन यह नीतीश कुमार की अपनी सुशासन बाबू की छवि पर कितना भारी पड़ेगा, अभी कहना मुश्किल है।

नजरिया

डॉ. कन्हैया त्रिपाठी

लेखक राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी रह चुके हैं और अहिंसक सभ्यता के पैरोकार हैं।

नए वैश्विक संकट के समय 80वीं यूएन महासभा

विश्व में प्रतिबद्धताओं का अभाव संयुक्त राष्ट्र को निराश करती रही है। इस महासभा में यह बात उभरकर सामने भी आ गई। अध्यक्ष ऐनालेना बेयरबॉक ने स्वयं कहा कि बीजिंग घोषणापत्र, महिला अधिकारों, संसाधनों और प्रतिनिधित्व की दिशा में एक अभूतपूर्व उपलब्धि थी, लेकिन 30 वर्ष बाद, यह क्राँति अभी अधूरी है। पूरी दुनिया को पता है कि चीन की राजधानी बीजिंग में वर्ष 1995 में दुनिया के देशों ने एक साथ मिलकर एक घोषणापत्र पर हस्ताक्षर किया था। बीजिंग सम्मेलन को महिला अधिकारों को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण दस्तावेज़ माना जाता है। इसके 30 वर्ष पूर्ण होने पर इस 80वीं महासभा में महिला सशक्तीकरण के विषय पर एक अन्तरराष्ट्रीय बहस में ऐनालेना बेयरबॉक की यह टिप्पणी चिंता में डाल देती है। यदि स्त्रियों के सशक्तीकरण ही नहीं कर पा रहे हैं तो इसका अर्थ है कि यह हमारी सभ्यतागत पिछड़ापन है। उनकी गरिमा की रक्षा के साथ ही हम किसी मानव विकास सूचकांक के दावे कर सकते हैं।

यह न्यूयॉर्क है जहाँ हर वर्ष वैश्विक महापंचायत होती है। न्यूयॉर्क के मैनहैटन इलाक़े में ईस्ट रिवर के नज़दीक स्थित संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय दुनिया भर के लिए सितंबर महीने में आकर्षण का केंद्र बन जाता है। यहाँ कई बार कुछ ऐसे भी राष्ट्राध्यक्ष या राष्ट्रों के प्रतिनिधि भाग लेते हैं जिनके लिए यह आयोजन वास्तव में अविस्मरणीय और कुतूहल भरा होता है। जैसा कि पूरे विश्व को पता है कि महासभा का वार्षिक उच्चस्तरीय अधिवेशन सप्ताह आरम्भ हो चुका है। संयुक्त राष्ट्र महासभा सबसे व्यस्ततम समय होता है और हर पल का यहाँ हिसाब रहता है। कब, किससे कौन मिलेगा। किस विषय पर मिलेगा। बातचीत का मोड क्या होगा। बातचीत में भविष्य के लिए क्या उम्मीदें हैं। इस दृष्टि से भी महासभा में कार्यरत लोगों के लिए बहुत सुनियोजित, संयमित, अनुशासित व उद्देश्यपूर्ण कर्तव्य निर्वहन का यह वक्त होता है। अब सोचिये कि 150 से अधिक विश्व के शीर्ष नेता, जनरल डिबेट में प्रतिभागिता के लिए न्यूयॉर्क पहुँच रहे हैं, वहां किस पैमाने पर तैयारियां होंगी। वे महासभा के मंच से दुनिया के समक्ष अपनी बात रखते हैं और विभिन्न स्मरणीय आयोजनों, सम्मेलनों और बैठकों में हिस्सा लेते हैं। दुनिया के इस महाकुंभ को कवर करने के लिए अंतरराष्ट्रीय मीडियाकर्मियों का भी आगमन होता है ताकि कोई भी मोमेंट छूट न जाए। कोई भी महत्वपूर्ण बातें लोगों की पहुँच से दूर न रह जाएँ।

यूएन की स्थापना के 80 वर्ष पूरे होने पर एक विशेष आयोजन हुआ तो इस ऐतिहासिक क्षण की बात ही कुछ और थी। महासभा का हॉल नीली रौशनी में भीगकर सबको अपनी ओर रिझा रहा हो जैसे। साथ में यह सन्देश भी कि 'एक साथ हैं, तो बेहतर हैं।' यह बेटर, टुगेदर का नारा महासभा की नई अध्यक्ष ऐनालेना बेयरबॉक का है जो संपूर्ण पृथ्वी के एकत्व की पक्षधर हैं। एक ऐसे मानवीय मूल्य की पक्षधर हैं जिसे भारतीय धर्मशास्त्रों ने कहा- संघे शक्ति:। भारतीय ज्ञान मीमांसा पूरी पृथ्वी को आकर्षित करती रही है वह चाहे वैचारिकी के माध्यम से ही क्यों न करती रही हो। इस 80वीं महापंचायत में बेटर टुगेदर का नारा भी जर्मनी की ऐनालेना बेयरबॉक के माध्यम से आया है जिसकी जड़ें यदि देखी जाए तो भारत से अमेरिका तक एक जैसी प्रतीत होती हैं। बिना एक साथ आए आज न हम पूरी पृथ्वी की रक्षा करने में सक्षम हैं और न ही किसी भारी समस्या से निपटने में सक्षम हैं। ऐसे में एक सूत्र में बंधकर हम दुनिया की समस्याओं को समाप्त करें, यही ऐनालेना बेयरबॉक की मंशा है। इस ऐतिहासिक नीली रौशनी में डूबे जेनरल असेंबली का भी यही सपना है कि सभी एक साथ मिलकर आगे बढ़ें। एक दूसरे के काम आएं। पृथ्वी पर शांति, सतत विकास और मानवाधिकारों की रक्षा करें। एक साथ हैं, तो बेहतर है। शान्ति, विकास व मानवाधिकारों के लिए, यही सबसे बड़ी प्रतिबद्धता है।

विश्व में प्रतिबद्धताओं का अभाव संयुक्त राष्ट्र को निराश करती रही है। इस महासभा में यह बात उभरकर

सामने भी आ गई। अध्यक्ष ऐनालेना बेयरबॉक ने स्वयं कहा कि बीजिंग घोषणापत्र, महिला अधिकारों, संसाधनों और प्रतिनिधित्व की दिशा में एक अभूतपूर्व उपलब्धि थी, लेकिन 30 वर्ष बाद, यह क्राँति अभी अधूरी है। पूरी दुनिया को पता है कि चीन की राजधानी बीजिंग में वर्ष 1995 में दुनिया के देशों ने एक साथ मिलकर एक घोषणापत्र पर हस्ताक्षर किया था। बीजिंग सम्मेलन को महिला अधिकारों को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण दस्तावेज़ माना जाता है। इसके 30 वर्ष पूर्ण होने पर इस 80वीं महासभा में महिला सशक्तीकरण के विषय पर एक अन्तरराष्ट्रीय बहस में ऐनालेना बेयरबॉक की यह टिप्पणी चिंता में डाल देती है। यदि स्त्रियों के सशक्तीकरण ही नहीं कर पा रहे हैं तो इसका अर्थ है कि यह हमारी सभ्यतागत पिछड़ापन है। उनकी गरिमा की रक्षा के साथ ही हम किसी मानव विकास सूचकांक के दावे कर सकते हैं।

सबसे अच्छी बात है कि ऐनालेना बेयरबॉक दो टूक बात कहती हैं। बेझिझक सच कहती हैं। महिलाओं पर चौथे विश्व सम्मेलन की तीसवीं वर्षगांठ पर महासभा की उच्च-स्तरीय बैठक में उनके द्वारा रखे गए महिलाओं के पक्ष इसकी सबसे बड़ी मिसाल हैं। ऐनालेना ने कहा कि हम सभी जानते हैं कि जब महिलाएँ बातचीत की मेज पर होती हैं, तो कंपनियाँ बेहतर प्रदर्शन करती हैं, शांति संधियाँ लंबे समय तक चलती हैं, और सरकारें अधिक परिणाम देती हैं। उनकी उपस्थिति ही शक्ति है। महासभा के सभी 80 अध्यक्षों में से, मैं केवल पाँचवीं महिला हूँ। महासचिव की तो बात ही छोड़िए, जहाँ 80 वर्षों में हमारे पास कभी कोई महिला महासचिव नहीं रही। यह सिर्फ़ प्रतिनिधित्व का मामला नहीं है, यह विश्वसनीयता का मामला है, हम जो कहते हैं उसे व्यवहार में लाना है। लेकिन सिर्फ़ यह नहीं कि कौन नेतृत्व कर रहा है, बल्कि यह भी है कि हम कैसे नेतृत्व करते हैं। नेतृत्व का अर्थ है सहयोग। उनकी यह निष्पक्ष समालोचनात्मक दृष्टि को पूरी दुनिया को समझना चाहिए। यह समझना चाहिए कि हम वास्तव में क्या कहने और सोचने के लिए किसी विमेन को मजबूर करते हैं। यह तथ्य यदि दुनिया को समझ आती है तो निश्चय ही बीजिंग सम्मेलन की बहस के लिए पूरी दुनिया के राष्ट्राध्यक्ष जो न्यूयार्क में इकठ्ठा हुए हैं, वे सकारात्मक कदम उठाएंगे। वैसे ऐनालेना बेयरबॉक ने धीमी गति से कार्यान्वयन की आलोचना करते हुए कहा भी कि यदि हमारी चाल यूं ही बनी रही तो आने वाले 123 वर्ष में हम बीजिंग घोषणा-पत्र में व्यक्त अपनी प्रतिबद्धताओं को संभवत: पूर्ण कर सकें।

इस महासभा की एक ख़ास बात यह है कि प्रत्येक दिन एक नए विषय पर घनघोर बहस हो रही है। इसमें दुनिया के मानवतावादी, नोबेल पुरस्कार विजेता, मानवाधिकारों के पैरोकार अपनी अपनी बात रख रहे हैं। यथा, यज़ीदी समुदाय की नादिया मुराद के ही शब्द- महिलाओं व लड़कियों की अगली पीढ़ी विरासत में केवल वादे पाने के लिए हक़दार नहीं हैं, बल्कि उन्हें न्याय, समानता व गरिमा की वास्तविकता देनी होगी, लोगों के बीच चर्चा के विषय बन गए हैं। वास्तविकताओं को व्यक्त करना बिना डरे, बिना सहमे और बेबाक जुबान से निश्चय ही विश्व के नागरिकों के पक्ष में है क्योंकि अफगानिस्तान जैसे देश में डरी स्त्रियों की आवाज़ ही दबा दी जा रही है। वास्तविकताओं से अनभिज्ञ यदि महासभा भी रह जाएगी तो उनके हित में कोई ठोस कदम कैसे विश्व स्तर पर उठेंगे? कैसे ऐसे देशों में रहने वाली स्त्रियाँ स्वतंत्र गरिमा के साथ जी सकेंगी? कैसे शिक्षा ले सकेंगी और कैसे ऐनालेना की तरह विश्व के नेतृत्व के लिए तैयार हो सकेंगी?

हवा का रुख़ बदलने का आग्रह तो महासचिव विगत कई वर्षों से कर रहे हैं और इस बार भी वह युद्ध, निर्धनता, मानवाधिकार उल्लंघन, जलवायु परिवर्तन की ओर सबका ध्यान केंद्रित करने की पूरी कोशिश कर रहे हैं। लेकिन सवाल यह है कि वैश्विक संकट नए स्वरूपों में आते जा रहे हैं। बेटर टुगेदर की निति से तत्काल समन्वित कार्रवाई अब ज़रूरी हो गयी है। देखना यह है कि इस महापंचायत में भी वादों की जगह कारवाइयाँ अपना आकर लेती हैं कि नहीं?

विश्व व्यापार

नृपेन्द्र अभिषेक नृप

लेखक स्तंभकार हैं।

भारत-ईयू एफटीए : अवसर की निर्णायक घड़ी

वैश्विक राजनीति और व्यापार की तेजी से बदलती दुनिया में आज हर राष्ट्र अपनी आर्थिक सुरक्षा और रणनीतिक प्रगति के लिए नए-नए अवसर खोज रहा है। यूरोपीय संघ लंबे समय तक अपने पारंपरिक सहयोगी अमेरिका पर निर्भर रहा है, लेकिन बदलते हालातों ने उसे भी वैकल्पिक साझेदारों की ओर रुख करने के लिए बाध्य किया है। यही कारण है कि उसने हाल के वर्षों में दक्षिण अमेरिका के मर्कोसुर समूह, आसियान देशों और इंडोनेशिया जैसे कई उभरते बाजारों के साथ मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) को सिरे चढ़ाया है। इसी कड़ी में भारत के साथ भी वार्ता लंबे समय से चल रही है और अब वह निर्णायक मोड़ पर आ पहुँची है। भारत और यूरोपीय संघ के बीच यह समझौता केवल व्यापार का नहीं बल्कि भविष्य की रणनीतिक साझेदारी का प्रतीक भी हो सकता है। वर्तमान समय में जब भू-राजनीतिक तनाव, ऊर्जा संकट, आपूर्ति श्रृंखलाओं की अस्थिरता और अमेरिका की अनिश्चित नीतियाँ सामने हैं, तो भारत-ईयू एफटीए का महत्व और बढ़ जाता है।

यूरोपीय संघ ने पिछले कुछ वर्षों में यह समझ लिया है कि केवल अमेरिका पर निर्भर रहकर वह अपनी आर्थिक स्थिरता सुनिश्चित नहीं कर सकता। डोनाल्ड ट्रंप जैसे नेता की वापसी की संभावना और अमेरिका की 'अमेरिका फर्स्ट' नीति ने ईयू को झकझोर दिया है। यही कारण है कि ईयू अब स्वतंत्र व्यापार नीति की दिशा में कदम बढ़ा रहा है। उसने आसियान देशों के साथ कई करार किए, इंडोनेशिया के साथ समझौता अंतिम चरण में है और दक्षिण अमेरिका के साथ दिसंबर 2024 में एफटीए पर हस्ताक्षर किए। ईयू की रणनीति अब है कि वह एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका जैसे क्षेत्रों से गहरे संबंध बनाए। भारत इस दृष्टि से उसके लिए सबसे बड़ा और महत्वपूर्ण साझेदार है–क्योंकि भारत न केवल एक विशाल बाजार है, बल्कि उसकी जनसंख्या, उत्पादन क्षमता और तेज़ी से बढ़ती अर्थव्यवस्था यूरोप के लिए आकर्षण का केंद्र है।

भारत लंबे समय से वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं और क्षेत्रीय आपूर्ति शृंखलाओं में बड़ी भूमिका निभाना चाहता है। लेकिन अब तक वह पूरी तरह इसमें एकीकृत नहीं हो सका है। ईयू के साथ एफटीए भारत के लिए इस दिशा में एक बड़ा कदम होगा। इस समझौते के जरिए भारत को यूरोपीय बाजारों तक न केवल बिना बाधा पहुँच मिलेगी, बल्कि अपने निर्यात को टिकाऊ बनाने का अवसर भी मिलेगा। ईयू का विशाल उपभोक्ता वर्ग भारतीय वस्त्र, औषधियाँ, आईटी सेवाएँ, मशीनरी और खाद्य उत्पादों के लिए एक स्थायी गंतव्य बन सकता है। इसके अतिरिक्त, निवेश के क्षेत्र में भी यूरोपीय कंपनियाँ भारत में आकर रोजगार, तकनीकी हस्तांतरण और नवाचार को गति देंगी।

हालाँकि, यह रास्ता इतना आसान नहीं है। एफटीए की वार्ता वर्षों से खिंचती आ रही है और इसकी सबसे बड़ी वजह है- नियमों की जटिलता (Rules of Origin- RoOs) और निवेश से जुड़े प्रावधान। यूरोपीय संघ चाहता है कि भारत में आने वाला कोई भी उत्पाद इस स्तर पर पारदर्शी हो कि उसकी उत्पादन प्रक्रिया और मूल्य संवर्धन स्पष्ट दिखाई दे। जबकि भारत अपनी घरेलू परिस्थितियों के चलते अधिक लचीले नियमों की मांग करता है। इसके अलावा, श्रम मानक, पर्यावरणीय दायित्व और स्थिरता जैसे मुद्दों पर भी ईयू काफी सख्त रुख अपनाता रहा है। उदाहरण के लिए, कार्बन उत्सर्जन घटाने की उसकी प्रतिबद्धता का सीधा असर भारतीय निर्यात पर पड़ सकता है। यदि भारत की उत्पादन इकाइयाँ पर्यावरणीय मानकों को पूरा नहीं कर पातीं तो उन्हें भारी करों और शुल्कों का सामना करना पड़ सकता है।

भारत-ईयू एफटीए सिर्फ आर्थिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि सामरिक दृष्टिकोण से भी उतना ही आवश्यक है। चीन की बढ़ती आक्रामकता और अमेरिका की अनिश्चित नीतियों ने भारत को मजबूर किया है कि वह बहुध्रुवीय साझेदारियाँ बनाए। यूरोपीय संघ इसके लिए सबसे उपयुक्त है, क्योंकि वह भारत की तरह लोकतंत्र, मानवाधिकार और बहुपक्षवाद की भावना को महत्व देता है। इसके अलावा, रक्षा और सुरक्षा सहयोग में भी भारत और ईयू की साझेदारी का विस्तार हो सकता है। यूरोप चाहता है कि हिंद-प्रशांत क्षेत्र में चीन का प्रभाव कम किया जाए, और भारत उसके लिए स्वाभाविक साझेदार है। ऐसे में एफटीए आर्थिक रिश्तों को गहरा करने के साथ-साथ रणनीतिक सहयोग का भी सेतु बनेगा।

यदि यह समझौता होता है तो भारत के लिए दोहरे लाभ के द्वार खुलेंगे। पहला, भारतीय कंपनियों को यूरोप के बाजारों में प्रवेश सरल होगा। दूसरा, यूरोपीय कंपनियों का निवेश भारत में बढ़ेगा। यह निवेश केवल पूँजी तक सीमित नहीं होगा, बल्कि इसमें नई तकनीक, प्रबंधन कौशल और उत्पादन की दक्षता भी शामिल होगी। विशेष रूप से, भारत के सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योग (MSME) क्षेत्र को इससे भारी लाभ मिल सकता है। उन्हें न केवल नए बाजार मिलेंगे, बल्कि वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में जुड़ने का अवसर भी मिलेगा।

एफटीए के सामाजिक और राजनीतिक प्रभाव भी कम महत्वपूर्ण नहीं होंगे। भारत में रोजगार के अवसर बढ़ेंगे, उपभोक्ताओं को अधिक और बेहतर विकल्प मिलेंगे, और प्रतिस्पर्धा से उत्पादों की गुणवत्ता में सुधार होगा। हाँ, कुछ क्षेत्रों में प्रतिस्पर्धा से दबाव भी आएगा, जैसे कृषि और छोटे उद्योग। लेकिन दीर्घकालिक दृष्टि से यह दबाव भारत को और सक्षम बनाएगा।

भारत और ईयू, दोनों ही अब इस स्थिति में हैं कि उन्हें यह समझौता और अधिक देर तक टालना नहीं चाहिए। यदि बातचीत खिंचती रही, तो चीन और आसियान देशों जैसे प्रतिस्पर्धी इसका लाभ उठा लेंगे। भारत के लिए यह अवसर है कि वहअपनी निर्माण क्षमता को मजबूत करे और निर्यात को विविध बनाए। यूरोपीय संघ भी जानता है कि भारत के बिना वह एशियाई बाजारों में प्रभावी उपस्थिति नहीं बना सकता। इसलिए ईयू ने हाल के वर्षों में अपने रुख में लचीलापन दिखाया है। अब यह भारत पर निर्भर है कि वह समय रहते इस अवसर का लाभ उठाए और समझौते को अंतिम रूप दे।

भारत-ईयू मुक्त व्यापार समझौता केवल एक आर्थिक दस्तावेज़ नहीं, बल्कि भविष्य की संभावनाओं का दरवाज़ा है। यह भारत के लिए वैश्विक व्यापार व्यवस्था में अपनी स्थिति मजबूत करने का अवसर है और यूरोपीय संघ के लिए एशियाई विस्तार की कुंजी। दोनों पक्ष यदि परस्पर सम्मान और लचीलेपन के साथ आगे बढ़ें तो यह समझौता आने वाले दशकों तक वैश्विक अर्थव्यवस्था की दिशा तय कर सकता है।

शर्म करो, क्यों एक लेखक के पीछे पड़े हो?

सामयिक

ध्रुव शुक्ल

लेखक साहित्यकार हैं।

हिन्दी के प्रतिष्ठित कवि-कथाकार श्री विनोद कुमार शुक्ल को उनके उपन्यास 'दीवार में एक खिड़की रहती थी' की रायल्टी में मिली बड़ी राशि पर अपमानजनक बकबक सुनकर मुझे शर्म आ रही है। बकबक करने वालों में ज़्यादातर की हैसियत लेखक होने की भी नहीं है। जिनकी कुछ हैसियत भी है, वे आधुनिक अर्थशास्त्रवाद के धुंधलके में स्थापित किये गये साहित्य के उन राजनीतिक प्रतिमानों के दास बनकर अपने लेखक होने को गिरवी रखे हुए हैं जो उन्हें प्रगतिशील होने की पदवी देकर उनके साहित्यिक शील को विवादास्पद बनाये रखते हैं। लेखक बिरादरी में अपने से असहमत लेखकों के बीच अपनी जगह बनाये रखकर भी लेखकों का अपमान करना इन जनवादियों की पुरानी आदत है। ये अपने राजनीतिक फ़ायदे के लिये दुश्मन के मंच का खूब इस्तेमाल करना जानते हैं। इनके कारण कृष्ण बलदेव वैद जैसे अनूठे कथाकार को साहित्य अकादेमी पुरस्कार भी न मिल सका।

श्री विनोद कुमार शुक्ल को लेकर मेरी भी कुछ यादें हैं। बीती सदी के ढलते वर्षों में चित्रकार सैयद हैदर रज़ा ने अविभाजित मध्यप्रदेश में कविता और चित्रकला के लिए पाँच हजार की राशि का 'रज़ा पुरस्कार' स्थापित किया और पहला पुरस्कार श्री विनोद कुमार शुक्ल को ही मिला था। मुझे स्मरण है कि उन दिनों कवि-आलोचक मलयज का परिवार आर्थिक संकट में था तब विनोद कुमार शुक्ल ने अपने पुरस्कार की पूरी राशि मलयज जी के परिवार को चुपचाप भिजवायी। आज से करीब चालीस बरस पहले यह राशि मामूली तो नहीं थी।

संयोगवश 1995-96 में मुझे मध्यप्रदेश साहित्य परिषद का सचिव और 'साक्षात्कार' पत्रिका का सम्पादक होने का अवसर मिला। श्री विनोद कुमार शुक्ल भोपाल में स्थापित निराला सृजनपीठ के अध्यक्ष के पद पर आसीन रहकर ही 'दीवार में एक खिड़की रहती थी' लिखते रहे। यह उपन्यास सबसे पहले 'साक्षात्कार' पत्रिका में ही क्रमशः प्रकाशित हुआ।

मुझे याद है कि श्री अशोक वाजपेयी ने ही विनोद कुमार शुक्ल के पहले कविता संग्रह... 'वह आदमी नया गरम कोट पहनकर चला गया विचार की तरह'... का यह दीर्घ नामकरण किया था। उनकी और भी कई किताबों का नामकरण संस्कार अशोक वाजपेयी ने ही किया है। मुझे याद है कि उनका पहला उपन्यास 'नौकर की कमीज' मध्यप्रदेश सरकार द्वारा स्थापित मुक्तिबोध फैलोशिप के अंतर्गतलिखा गया था। मुझे यह भी स्मरण है कि जब उनका एक और उपन्यास आया तो उसका नाम वाजपेयी जी ने... 'खिलेगा तो देखेंगे'... रखा। मेरा ख़याल है जब एक लेखक हमारे आसपास एक बागीचा बनकर खिला हुआ है तो हम उसकी ख़ुशबू से बचकर तो नहीं निकल सकते। उसकी वीरानियों से भी नहीं।

हिन्दी की साहित्य बिरादरी श्री विनोद कुमार शुक्ल से यह शिकायत कर सकती है कि वे हिन्दी के ऐसे लेखक हैं जिन्होंने आधुनिक हिन्दी के अपने पूर्वज, अपने समकालीन आत्मज और अपने बाद की पीढ़ी के साहित्यकारों के बारे में प्रायः कुछ नही लिखा। वे कहते भी हैं पर बहुत कह नहीं पाते। वे उन गजानन माधव मुक्तिबोध की कविता के बारे में भी कुछ नहीं कह पाये जिन मुक्तिबोध ने उन्हें कवि माना। अगर उनकी कविता की एक पंक्ति के सहारे कहें तो हो सकता है कि... 'बहुत कुछ कर सकते हैं ज़िन्दगी में का काम' बहुत होने के कारण उन्होंने साहित्य के कुछ और ज़रूरी काम छोड़ दिए हों। उन्होंने उस भारतीय सभ्यता पर भी वैचारिक रूप से कभी कुछ नहीं कहा जिसकी उम्मीद एक लेखक से की जाती है।

मुझे बड़ी आत्मीयता से याद आता है कि विनोद जी के निकट रहे समकालीनों में श्री अशोक वाजपेयी, प्रभात त्रिपाठी, जितेन्द्र कुमार और कमलेश जी की कविताओं के बारे में उन्होंने कभी कुछ नहीं कहा। एक बार यह बात उन्होंने कवि-कथाकार उदयन वाजपेयी से ज़रूर कही कि... 'मैं अशोक वाजपेयी की कविताएं सुबह उठकर प्रार्थना की तरह पढ़ता हूँ।' अशोक वाजपेयी ने अपने संपादन में प्रकाशित 'पूर्वग्रह' पत्रिका का विशेषांक विनोद कुमार शुक्ल पर केंद्रित किया था।

कोई शक़ नहीं कि श्री विनोद कुमार शुक्ल हिन्दी की साहित्यिक बिरादरी के बीच अपने लेखन पर सर्वाधिक पुरस्कार पाने वाले कवि-उपन्यासकार हैं। पिछले कुछ वर्षों से उन्हें अपनी किताबों पर प्रकाशकों के द्वारा समुचित रायल्टी न मिलने की शिकायत भी थी। अगर वह शिकायत बहुत बड़े पैमाने पर किसी प्रकाशक ने दूर कर दी और एक लेखक को रायल्टी के रूप में बड़ी राशि भी दे दी तो इस घटना पर व्यर्थ बकबक क्यों हो रही है? क्यों एक सयाने चतुर-सुजान साहित्यकार के मन को आहत किया जा रहा है? विनोद कुमार शुक्ल अपनी ही एक कविता में कहते हैं ... 'रात-दिन जागकर मेरी ज़िन्दगी दुगनी'। आखिर वे रचने के लिये ही रात-दिन जागे होंगे। उनका उक्ति वैचित्र्य पाठकों को आकर्षित करता है। उनका परिवेश भले सीमित है पर वे हमारे बीच एक विशिष्ट रचनाकार के रूप में मौजूद हैं।

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्प्लेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
स्थानीय संपादक
हेमंत पाल
प्रबंध संपादक
रमेश रंजन त्रिपाठी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

पुस्तक समीक्षा

मुकेश राठौर

समीक्षक

जातक कथाओं का कलयुगी वर्जन है घातक कथाएं

घातक कथाएं नवाबी व्यंग्यकार अलंकार रस्तोगी जी का सातवां व्यंग्य संग्रह है। अंक सात का विशेष महत्व है। बकौल व्यंग्यकार घातक कथाएं जातक कथाओं का कलयुगी वर्जन है,इसके पीछे भी उनका उद्देश्य समाज में उच्चतम आदर्श स्थापित करने का जान पड़ता है। संग्रह में कुल तैंतीस लघु व्यंग्य हैं जिनमें गिरगिट,सांप,सियार,लोमड़ी,शेर आदि जानवरों पर करारे कटाक्ष हैं,तो क्या संग्रह इन जानवरों की कहानी है नहीं बिल्कुल नहीं। संग्रह की रचना 'गधे को कर इतना बुलंद' में व्यंग्यकार ने सीधा हमला बोलते हुए लिखा है कि 'असल जानवर तो इंसान होता है जो अपनी जरूरतों के हिसाब से गाय जैसा भोला,गधे जैसा सीधा,भेड़िए जैसा शिकारी,मगरमच्छ की तरह आंसू बहाने वाला और शेर की तरह सत्ता पाने वाला बन जाता है।' कहने का मतबल यह कि संग्रह की हर रचना किसी न किसी जानवर के बहाने इसी असली जानवर की धूर्तता की कहानी है। कुछ घातक पंच देखिए

'जनता की नियति ही है कि वह एक बार धोखा खाने के बाद भी फिर से गधा बनने को तैयार रहती है।'

'नेता भले कितना भी दुष्ट क्यों न हो लेकिन उसको तनिक भी दुष्ट दिखना नहीं चाहिए।'

'इस देश के चुनाव और भूकंप लगभग एक जैसी चीज होते हैं। दोनों ही देश में जान और माल का नुकसान करने के लिए जाने जाते हैं।'

'प्रजातंत्र में कोई चाहे जितना भी एक-दूसरे के प्रति अशिष्ट क्यों न हो लेकिन उनकी मुलाकात को शिष्टाचार भेंट ही बताया जाता है।'

'प्रजातंत में काबिल नहीं बल्कि करिश्माई जीतता है।'

'सरकारे प्रजातंत्र से नहीं बल्कि आस्तीन के सांपों को रिसॉर्ट में दूध पिलाने से बनती है।'

रचनाओं के शीर्षक व्यंग्यात्मक और विषयानुकूल है जो पाठकों को आमंत्रण देते हैं। चालाक लोमड़ी,ढोंगी मगरमच्छ,रंगबदलू गिरगिट/सियार केंचुलीधारी सांप से लेकर वनराज शेर... सभी के शिकार हेतु व्यंग्यकार ने आवश्यकतानुसार वक्रोक्ति, वाग्वैदग्ध, आक्षेप, विद्रूप, छिद्रान्वेषण जैसे व्यंग्य के औजार आजमाए हैं। चूंकि व्यंग्यकार पेशे से अंग्रेजी के शिक्षक है सो भरपूर अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग हुआ है ऐसा इसलिए भी कि भाषा स्कूल, कॉलेज के नए पाठकों को व्यंग्य की ओर आकर्षित कर सकें। बहरहाल,घातक कथाएं टू जीबी संग्रह में वन टीबी वजनदार व्यंग्यों का संग्रह है,जो नए-पुराने सभी पाठकों को पसंद आयेगा।

पुस्तक: घातक कथाएं
लेखक: अलंकार रस्तोगी
प्रकाशक: इंडिया नेटबुक्स प्रा.लि.,नोएडा
मूल्य: रू. 200

स्मृति लेख

लीलू कुमारी

लेखिका एच.के.बी.के. डिग्री कॉलेज, कर्नाटक में सहायक आचार्य हैं।

दीप्त सुरों का अवसान - जुबिन दा की धुनें रह जाएंगी

पंडित दीनदयाल उपाध्याय एक प्रखर राष्ट्रवादी चिंतक थे और राष्ट्र की एकता और अखंडता के पक्षधर थे। उन्होंने राष्ट्र को केवल भूमि, जनसंख्या और शासन की इकाई नहीं माना। उनका मानना था कि 'राष्ट्र एक जीवंत आत्मा है' और भारत की आत्मा उसकी संस्कृति में निहित है।

जुबिन दा का जन्म मेघालय के तुरा में ऐसे कुटुंब में हुआ, जो संस्कृति और संगीत के रंगों से सराबोर था। वे आठ वर्षों तक करीमगंज में रहे, जिसके कारण उन्हे बांग्ला भाषा के प्रति भी खूब लगाव रहा। वह बारंबार कहते थे कि उनकी न कोई जाति है, न कोई धर्म, क्योंकि वह प्रत्येक मनुष्य के प्रति समान आदर व प्रेम का भाव रखते थे। असम की धरती के प्रति उनका प्रेम अनन्य था, मानो वह उनके रक्त में बस्ता हो। उनके पिता मोहिनी मोहन बरठाकुर, मजिस्ट्रेट होने के साथ-साथ कविता और गीत रचना में भी संलग्न थे, जिससे उनकी साहित्यिक और रचनात्मक आत्मा का परिचय मिलता है। जुबिन दा की माता, इला बरठाकुर भी गायिका थीं, जिनके स्वर ने उनके गृह को संगीतमय माहौल से आलोकित किया। ऐसे सौम्य व सृजनात्मक वातावरण में पलते हुए, जुबिन दा के हृदय में संगीत की प्रतिभा और रुचि स्वाभाविक रूप से अंकुरित हुई। उनके परिवार की सांस्कृतिक और संगीतमय पृष्ठभूमि ने उनके लिए सुदृढ़ नींव स्थापित की, जो उनके जीवन को सत्य और सौंदर्य की खोज में दिशा प्रदान करती रही। असम की भूमि पर विगत पाँच दिवसों से शोक का गहन आकाश छाया हुआ है, मानो सृष्टि स्वयं करुणा के अश्रुओं से भीगी हो। जुबिन दा का इस फानी दुनिया से विदा होना न केवल असमवासियों के हृदय पर चोट है, अपितु भारतीय संगीत के उज्ज्वल आकाश में भी एक अपूरणीय क्षति का कारण बना है। वे केवल एक गायक ही न थे, बल्कि लोक के नायक भी थे, जिनके स्वरों व कार्यों ने असंख्य घरों के चूल्हों को प्रज्वलित रखा। वह बार-बार कहते भी थे - 'मॉय धोनी मनुहर लोगोट उठा बोहा भाल नापाउ, मूर उठा बोहा गोरिबोर लोगोत, पगोलोर लोगोत हॉय' अर्थात् 'मैं धनी लोगों के साथ उठना-बैठना पसंद नहीं करता, मैं गरीबों और पागलों के साथ ज्यादा उठता-बैठता हूँ।' और सच में, इस बात को प्रमाणित करने के लिए हमें किसी कथन की जरूरत नहीं, बल्कि पाँच दिनों से शोक में डूबा असम इस बात की गवाही है।

यह भी हृदय को व्यथित करने वाला दुख है कि जुबिन दा के इस संसार से प्रस्थान पर कुछ लोग असमंजस में हैं, यह पूछते हुए कि जुबिन गर्ग कौन हैं? जबकि सत्य यह है कि उनके स्वर ने असम भाषा के अलावा भी विविध भाषाओं में गीत गाये। यहाँ तक कि उन्होंने हिंदी व बांग्ला के गीतों के माध्यम से असंख्य हृदयों को जीता था। उन्होंने लगभग चालीस भाषाओं में गीत गाये, और उनके स्वर ने 38,000 गीतों को अमर किया। एक दिन में छत्तीस गीतों को रिकॉर्ड करने की उनकी उपलब्धि कल्पना से परे है, जो उनकी सृजनशीलता का प्रमाण है। वे बारह वाद्य यंत्र बजा लेते थे जिसमें ढोल, ड्रम, गिटार और हारमोनियम शामिल हैं और उनको तमाम पुरस्कार मिले जिसमें बेस्ट प्ले बैक सिंगर, म्यूजिक डायरेक्टर इत्यादि शामिल हैं। 'या अली और दिल तू ही बता' से उनको हिंदी पट्टी में पहचान मिली और उसके बाद पूरा भारत उनको पहचानने लगा था। जुबिन दा सिर्फ गायक भर नहीं थे, बल्कि समाज में सेवा के लिए उनका योगदान भी बहुत बड़ा था। कोई गायक केवल गाकर इतनी लोकप्रियता अर्जित कर सकता, यह हम सोच भी नहीं सकते। कला से वे इतना प्यार पा लेंगे कि हर वर्ग के लोग, चाहे वे पुलिस हों, सिक्युरिटी गार्ड हों, रिक्शाचालक हों, या निम्नवर्गीय तबका हों, उनके लिए रो दे। इसके लिए चाहिए होता है अपनी भाषा, अपनी माटी और अपने लोगों के लिए किसी भी हद तक जाकर खड़े होना। जुबिन दा ने यही किया। उन्होंने अपने गाने 'या अली' के लिए पुरस्कार नार्थईस्ट को डेडिकेट किया, जो उनके प्रति समर्पण को दर्शाता है। प्रारंभ में प्रत्येक कलाकार धरती से गहराई से जुड़ा रहता है, किंतु जैसे-जैसे यश और ख्याति का प्रकाश उस पर पड़ता है, वह प्रायः जनसामान्य से दूर होने लगता है। परंतु यदि कोई कलाकार, इतनी प्रसिद्धि प्राप्त करने के पश्चात भी, उसी सरलता और स्नेह के साथ जनता से संनादति रहता है जैसा प्रारंभ में था, तो वह निश्चित रूप से लोगों के हृदय में अमिट स्थान बना लेता है। जुबिन गर्ग ऐसे ही दुर्लभ कलाकार थे, जिन्होंने यश के शिखर पर पहुँचने के बाद भी धरती की गोद को नहीं त्यागा। शायद यही कारण था कि उन्होंने मायानगरी मुम्बई में निवास करने से इंकार कर दिया था। प्रत्येक वर्ष, दुर्गा पूजा और बिहू के अवसर पर समस्त असम उनके गीतों की प्रतीक्षा करता था।

जुबिन दा, असम की बर्बादी का जिम्मेदार राजनीतिक पार्टियों को मानते थे। कोविड के दौरान, उन्होंने अपना घर गुवाहाटी में मरीजों और मजबूर लोगों के लिए खोल दिया था। ऐसे कलाकार आज के समय में अपवाद हैं। वे हमें याद दिलाते हैं कि कला का सही अर्थ है समाज के लोगों के लिए खड़े होना, उनकी आवाज बनना, और उनके लिए लड़ना। जुबिन दा की विरासत हमें प्रेरणा देती है कि हम अपनी कला का उपयोग समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए करें। आज के समय में जब हर कोई अपने लिए जीता है, जुबिन दा ऐसे व्यक्ति थे जो दूसरों के लिए जीते थे। असम जैसे राज्य को चाय पत्ती और सुंदरता के लिए जाना जाता है, वैसे ही असम को जुबिन दा के लिए भी जाना जाता है। असम और जुबिन दा एक दूसरे के पर्याय हैं। उन्होंने कई बार कहा कि मेरे मरने पर 'मायाविनि गाना' बजाकर मेरी विदाई करना। यह गाना इस प्रकार है - 'मायाविनि रातिर बुकूत/ देखा पालू तोमार छबि/ धरा दिला गोपने आहि/ हियार कुनोत...'

उनके कहे अनुसार, असम के प्रत्येक कोने में जुबिन दा के गीतों को बजाकर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की जा रही है। जुबिन दा, आपसे प्रेम करने वालों के लिए आप कभी मृत्यु को प्राप्त नहीं हुए, क्योंकि आप हमारे हृदयों में सदा जीवंत हैं, संगीत में जीवंत हैं और जो हृदयों में बसते हैं, वे कभी मरते नहीं। यह लेख उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि है, जिन्होंने अपनी मधुर गायकी और समाज के प्रति समर्पण से असंख्य हृदयों को जीत लिया।

वक्रोक्ति

मुकेश नेमा

लेखक मप्र के प्रशासनिक अधिकारी हैं।

उन्हें झूठ बोलना मैंने नहीं सिखाया है

झूठ तब ज़्यादा असरकारी होता है जब बोलने वाले को भी खुद पर भरोसा हो। लगातार झूठ बोलने में एक गड़बड़ यह कि लोग फिर ऐसा करने वाले पर कुछ वक्त तक भरोसा नहीं करते, उसे गंभीरता से लेना बंद कर देते हैं। अपनी विश्वसनीयता बनाने के लिये फिर कुछ दिनों सच का हाथ पकड़े रहना होता है। ऐसे में झूठ को बतौर जीवनरक्षक दवा की तरह ही इस्तेमाल करना ठीक होता है। तब बोलें झूठ जब सच बोलने पर जान, माशूक़ा, बीबी या कुर्सी जाने का खतरा हो। ख़ासकर प्रेमिका और पत्नी से झूठ बोलना तो शास्त्रीय परम्परा है हमारी। टिकाऊ सैंया बनने के लिये झूठो का सरताज होना ज़रूरी है। और जब झूठ बोल ही चुके हो आप तो उस पर अड़े रहिए, उसे बार बार दोहराकर कर उसमें जान फूँकिए, उसके खिलाफ़ पेश किये गये तमाम तर्कों को बिना सुने ख़ारिज कर दीजिए।

झूठ हमेशा सच के कपड़े पहनकर आता है। सच का सौतेला भाई है वो। झूठ बोलने का क़ायदा ही यही है, उस पर लोग भरोसा तभी करते हैं जब वो सच जैसी शक्ल का हो। झूठ में सच की मिकदार जितनी ज़्यादा होगी उतना ज़्यादा भरोसेमन्द होगा। झूठ, सच के आटे में नमक की तरह हो, सच के दूध में पानी की तरह मिल जाए। जब भी ऐसा होता है, उसमें जो स्वाद आता है उसका कोई मुक़ाबला नहीं। जब झूठ निखालिस हो तो सफ़ेद हो जाता है। सफ़ेदपोश होते ही उसके पकड़े जाने की संभावना बढ़ जाती है ऐसे में सफ़ेद झूठ से परहेज़ करना बेहतर सलाह है।

झूठ तब ज़्यादा असरकारी होता है जब बोलने वाले को भी खुद पर भरोसा हो। लगातार झूठ बोलने में एक गड़बड़ यह कि लोग फिर ऐसा करने वाले पर कुछ वक्त तक भरोसा नहीं करते, उसे गंभीरता से लेना बंद कर देते है। अपनी विश्वसनीयता बनाने के लिये फिर कुछ दिनों सच का हाथ पकड़े रहना होता है। ऐसे में झूठ को बतौर जीवनरक्षक दवा की तरह ही इस्तेमाल करना ठीक होता है। तब बोलें झूठ जब सच बोलने पर जान, माशूक़ा, बीबी या कुर्सी जाने का खतरा हो। ख़ासकर प्रेमिका और पत्नी से झूठ बोलना तो शास्त्रीय परम्परा है हमारी। टिकाऊ सैंया बनने के लिये झूठो का सरताज होना ज़रूरी है। और जब झूठ बोल ही चुके हो आप तो उस पर अड़े रहिए, उसे बार-बार दोहराकर कर उसमें जान फूँकिए, उसके खिलाफ़ पेश किये गये तमाम तर्कों को बिना सुने ख़ारिज कर दीजिए। झूठ को सहारा देने के लिये उप झूठ, गवाह और सबूत भी गढ़ कर रखें। आमतौर पर झूठ बोलने में खर्च भी बहुत आता है, अमीरी का शग़ल है ये। इसलिये गरीब कायदे से झूठ नहीं बोल पाता।

अपने झूठ को पाँव देना बेहद ज़रूरी है। सामने वाले की आँखों में आँखें डालना याद रखें। ऐसा करेगें तो सामने वाले का कॉन्फ़िडेंस भी डगमगा जायेगा और आप जीते बने रहेंगे। सच और झूठ में एक फ़र्क़ ये भी है कि झूठ हमेशा फ़ायदे के लिये बोला जाता है जबकि सच की तासीर नुक़सान करवाने की होती है। झूठ बोलना नैसर्गिक मनोवृत्ति होती है इंसान की जबकि सच बोलने के लिये मन को समझाना पड़ता है। झूठ हमेशा ख़ुशी और राहत का पैग़ाम लेकर आता है जबकि सच बोलने पर आपको मातम का सामना भी करना पड़ सकता है। पर पता नहीं क्यों सच बोलने वाले की सबसे ज़्यादा कद्र झूठ बोलने वाले ही करते है।

हर आदमी झूठ बोलता है और सामने वाले से सच बोलने की उम्मीद करता है और साथ में उसे गधा और बेवकूफ भी समझता है। झूठ के चाहने वाले ज़्यादा है दुनिया मे, क्योंकि ये सच की बनिस्बत जल्दी असर करता है। इसे ऐसा समझें झूठ एलोपैथी है और सच होम्योपैथी। हम दो मिनट में नतीजा चाहते हैं इसलिये मैगी टाईप झूठ बोलते हैं और सच की बीरबल वाली खिचड़ी

से बचते है।

यदि ज़रूरी होने पर भी झूठ बोलने में संकोच या लिहाज़ करेंगे तो मारे जायेगे। आजकल झूठ इसलिये भी ज़रूरी हो गया है क्योंकि बोलबाला झूठों का ही है। यदि झूठ बोलने में संकोच हो तो पहले छोटे मोटे झूठ बोलें। करत करत अभ्यास से जड़मति होय सुजान वैसा नियम इस पर भी लागू होता है। पर जब भी झूठ बोलना पड़े तो धड़ल्ले से बोलिए। हिचकिचाहट झूठ की सबसे बड़ी दुश्मन होती है।

सच जब तक अपने जूते पहनता है, झूठ आधी दुनिया का चक्कर लगा चुका होता है। इसके वावजूद झूठ बोलने वाले हल्के आदमी माने जाते है अब भी। और सच बोलने वाले अब भी कभी कभार इज़्ज़त पा जाते है। यदि आप कुछ जल्दी हासिल करना चाहते है, कही जल्दी पहुँचना चाहते है तब तो झूठ के हवाई जहाज पर चढना बेहतर होगा आपके लिए पर यदि आप यश के एवरेस्ट की चोटी को छूना चाहते है तो आपको सच के साथ पाँव पैदल चलना ही होगा।

हिटलर ने एक काबिल आदमी को अपना प्रचार मंत्री बनाया था। नाम था हिमलर। हिमलर का कहना था कि सौ बार दोहराए जाने पर झूठ भी सच बन जाता है। बात वही है हर झूठ, झूठ होने पर अंतरमन से शर्मिंदा बना रहता है और बस सच हो जाना चाहता है। सच होता है नंगा। फक्कड़ फकीर। और झूठ डिज़ाइनर कपड़ों से लदा रहता है। झूठ चाहता है कि लोग सच की इज़्ज़त न करे,उसकी बातों मे न आए पर विधि का अजब विधान। सच लंबी उमर पाता है और झूठ जल्दी मर जाता है।

पर रूकिए थोड़ा सा। पहले आप बिना वजह शक करना बंद कीजिए। यक़ीन कीजिये मेरा जैसा सोच रहे हैं आप वैसा कुछ नहीं है, उन्हें झूठ बोलना मैंने नहीं ही सिखाया है जिनके बारे में आप फ़िलहाल सोच रहे हैं।

फिल्म के बहाने : जॉली एलएलबी 3

कुमार सिद्धार्थ

लेखक स्तंभकार हैं।

किसानों और भूमि अधिग्रहण की लड़ाई का सिनेमाई आईना

भारतीय सिनेमा लंबे समय से सामाजिक मुद्दों पर अपनी आवाज़ बुलंद करता रहा है। कभी यह आवाज़ सीधी-सपाट दस्तावेज़ी अंदाज़ में आती है तो कभी मनोरंजन की चाशनी में लिपटी हुई। निर्देशक सुभाष कपूर की जॉली एलएलबी फ्रेंचाइजी ने हास्य और व्यंग्य के माध्यम से न्याय व्यवस्था की कमियों को उजागर किया गया। इस मायने में जॉली एलएलबी 3 का दायरा बड़ा और गंभीर है। इस बार अदालत का कटघरा सिर्फ कानूनी पेचीदगियों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि वह देश के किसानों की त्रासदी का साक्षी बनता है।

आज देश के हर कोने में विकास की बड़ी-बड़ी परियोजनाओं का शोर है। राजमार्ग, इंडस्ट्रियल कॉरिडोर, स्मार्ट सिटी, सेमीकंडक्टर पार्क, अभ्यारणय- हर जगह निवेश और रोज़गार का सपना दिखाया जा रहा है। लेकिन इस विकास का सबसे बड़ा ख़ामियाज़ा कौन झेल रहा है? जवाब साफ़ है - किसान, आदिवासी। जिन खेतों से अन्न उपजता है, उन्हें कौड़ियों के दाम पर या अवैध तरीक़े से हड़पा जा रहा है।

जॉली एलएलबी 3 इस मायने में भी महत्वपूर्ण है कि यह केवल काल्पनिक कहानी नहीं है, बल्कि उन असंख्य वास्तविक संघर्षों का रूपक है, जहाँ किसानों और आदिवासियों ने बड़े-बड़े कॉरपोरेट घरानों और सरकारी मशीनरी के खिलाफ आवाज़ उठाई है। अदालत के कटघरे में खड़े किसान और उनकी विधवा हर उस संघर्ष की प्रतीक बन जाते हैं, जिसमें न्याय की उम्मीद अब भी टिकी है।

राजस्थान के परसौल गाँव का एक किसान और कवि अपनी पुश्तैनी ज़मीन एक रसूखदार उद्योगपति हरीभाई खेतान (गजराज राव) की महत्वाकांक्षी परियोजना में खोकर आत्महत्या कर लेता है। उसकी विधवा जानकी (सीमा बिस्वास) दिल्ली की अदालत का दरवाज़ा खटखटाती है और यही मुक़दमा फिल्म की धुरी बन जाता है। यह घटनाक्रम हमें आज देश के सैकड़ों गाँवों की वास्तविक तस्वीर याद दिलाता है, जहाँ किसान अपनी ही ज़मीन पर बेगाने बना दिए गए हैं।

फिल्म का नायक केवल अदालत नहीं है, बल्कि वे तमाम किसान, आदिवासी और सामाजिक कार्यकर्ता भी हैं जो दशकों से ज़मीन, जंगल और नदी बचाने की लड़ाई लड़ रहे हैं। मेधा पाटकर का नर्मदा बचाओ आंदोलन हो, आदिवासियों के मुद्दों पर माधुरी बहन और अरूणा राय जैसे कार्यकर्ताओं की पहल, छत्तीसगढ़ से लेकर झारखंड और ओडिशा तक खनन व विस्थापन विरोधी आंदोलनों की गूंज ङ्क इन सबकी झलक फिल्म में महसूस की जा सकती है।

कोर्टरूम का धड़कता नाटक

फिल्म की सबसे बड़ी ताक़त है इसका कोर्टरूम ड्रामा। सुभाष कपूर ने इसे सिर्फ़ कानून की बहस तक सीमित नहीं रखा, बल्कि यहाँ भावनाओं, व्यंग्य और सच्चाई का गहरा मेल है। जब दोनों जॉली - अक्षय कुमार और अरशद वारसी - अदालत में आमने-सामने आते हैं, तो दर्शक हंसते भी हैं और भीतर तक हिल भी जाते हैं। एक किसान की विधवा बनाम कॉरपोरेट और सत्ता का गठजोड़ - यह मुक़दमा हमें याद दिलाता है कि असली भारत अदालतों और गाँवों में ही साँस ले रहा है।

कुछ दृश्य सचमुच इंटेंस हो जाते हैं। गवाहियों के दौरान किसानों की बेबसी, अदालत में उनकी चीखती आवाज़, और जज (सौरभ शुक्ला) के सवाल - सब मिलकर ऐसा असर छोड़ते हैं कि दर्शक सीट से हिल नहीं पाते। हाँ, बीच-बीच में हल्के-फुल्के मज़ाक और कॉमिक पंच उस गंभीरता को बोझिल नहीं होने देते। यही सुभाष कपूर की सबसे बड़ी कला है - समाज का आईना दिखाते हुए भी मनोरंजन का रंग बनाए रखना।

मेरी ज़मीन, मेरी मर्ज़ी' - दमदार संदेश

फिल्म का सबसे बड़ा योगदान है इसका केंद्रीय संदेश- मेरी ज़मीन, मेरी मर्ज़ी। विकास की आंधी में जब ज़मीन छिनती है, तो सिर्फ़ मिट्टी नहीं जाती, बल्कि उससे जुड़ी अस्मिता, संस्कृति और भविष्य भी उजड़ जाता है। फिल्म यह सवाल उठाती है कि आखिर सरकारें और

कॉरपोरेट किसके लिए विकास कर रहे हैं? यदि किसान ही उजड़ गया, तो विकास का क्या मायने रह जाएगा?

यह संदेश सिर्फ़ परदे पर नहीं, बल्कि वास्तविक जीवन में भी गूंजता है। हाल के वर्षों में कई राज्यों में ज़मीन अधिग्रहण के खिलाफ़ किसानों ने आंदोलन किए हैं। कहीं सड़क निर्माण के लिए, कहीं औद्योगिक परियोजनाओं के लिए, किसानों को उनकी ही ज़मीन से बेदखल किया गया। जॉली एलएलबी 3 इन घटनाओं का सिनेमाई रूपांतरण है, जो दर्शकों को असलियत से रूबरू कराता है।

खामियाँ और सिनेमाई छूट

फिल्म के कुछ दृश्य ओवर-द-टॉप लगते हैं - जैसे अस्पताल के बिस्तर पर गवाही देने का नज़ारा या ऊंटों की रेसिंग कारों के बीच दौड़। लेकिन निर्देशक ने पहले ही डिस्क्लेमर देकर स्पष्ट कर दिया है कि मनोरंजन को मज़बूत करने के लिए ऐसी सिनेमैटिक लिबर्टी ली गई है। ऐसे दृश्य भले ही यथार्थ से दूर हों, पर दर्शकों की रुचि बनाए रखते हैं।

किसानों की वर्तमान स्थिति पर टिप्पणी

फिल्म देखते समय यह सवाल बार-बार मन में आता है कि हम किसानों की वास्तविकता से कितना दूर हो चुके हैं। यही विडंबना जॉली एलएलबी 3 की ताक़त है - वह हमें मजबूर करती है सोचने के लिए कि जिनके बलबूते हम जीवित हैं, उनकी ज़मीनें क्यों छीनी जा रही हैं।

आज गाँव खाली हो रहे हैं, युवा शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं, और उद्योगपति इन खाली पड़ी ज़मीनों पर अपना कब्ज़ा जमा रहे हैं। जब कोई किसान विरोध करता है, तो अक्सर उसे दबा दिया जाता है - कभी प्रशासन के दबाव से, कभी हिंसा से। यह सच्चाई फिल्म के हर संवाद और हर दृश्य में झलकती है।

जॉली एलएलबी 3 सिर्फ़ मनोरंजन नहीं है, बल्कि यह एक आईना है, जो हमें हमारी नीतियों, हमारे रवैये और हमारी प्राथमिकताओं पर सवाल उठाने को मजबूर करता है। यह फिल्म हमें याद दिलाती है कि विकास का मतलब सिर्फ़ चमकती इमारतें और चौड़ी सड़कें नहीं हैं; विकास तभी सार्थक है जब किसान की ज़मीन, उसका भविष्य और उसकी अस्मिता सुरक्षित रहे।

फिल्म में सीमा बिस्वास के पास भले ही ज्यादा डायलॉग न हों, लेकिन उनकी खामोशी बहुत कुछ कह जाती है। उनकी आँखों में विधवा किसान का दर्द, हिम्मत और ताकत साफ दिखती है। क्लाइमेक्स में उनके साथ एक सीन है, जहां वो बिना कुछ कहें सिर्फ रोती हैं और उनको इस तरह से देख रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

फिल्म के अंत में जब अदालत से यह संदेश निकलता है कि किसानों की ज़मीन उनकी मर्ज़ी के बिना छीनी नहीं जा सकती, तो दर्शक तालियाँ बजाते हैं। लेकिन यह तालियाँ सिर्फ़ सिनेमा हॉल तक सीमित न रहें- यही फिल्म का असली मकसद है।

फिल्म में जनआंदोलनों की भूमिका का भी संकेत है - यह याद दिलाता है कि असली बदलाव केवल अदालतों और सरकारों से नहीं, बल्कि ज़मीनी स्तर पर संगठित लोगों से आता है। कई बार अदालत तक आवाज़ पहुँच ही नहीं पाती, अगर ये संगठन किसानों, आदिवासियों और विस्थापित परिवारों की लड़ाई में साथ न खड़े हों।

आज किसानों के लिए कानून वो लोग बना रहे हैं, जिन्हें पालक और सरसों में फर्क नहीं पता, ये डायलॉग है, जॉली एलएलबी 3 का और फिल्म में इस तरह के कई डायलॉग हैं, जो हमें झकझोर कर रख देते हैं। इन डायलॉग को लिखने वाले और 'जॉली एलएलबी' फ्रेंचाइजी के असली मास्टरमाइंड हैं सुभाष कपूर। एक बार फिर अपनी कमाल की राइटिंग और डायरेक्शन से सुभाष कपूर छा गए हैं। उनकी सबसे बड़ी खासियत ये है कि वो एक गंभीर और सामाजिक मुद्दे पर भी दर्शकों को बोर किए बिना असरदार फिल्म बना सकते हैं।

सुभाष कपूर ने एक बार फिर साबित किया है कि वे गंभीर मुद्दों को हास्य और व्यंग्य की परतों में लपेटकर दर्शकों तक पहुँचा सकते हैं। जॉली एलएलबी 3 किसानों की त्रासदी पर बनी उन चुनिंदा फिल्मों में से है, जो मनोरंजन के साथ-साथ एक ठोस सामाजिक संदेश भी देती है।

मानपुर से माता भक्तों ने मालवा की मां वैष्णो देवी दिग्ठान भव्य पैदल दर्शन यात्रा की

पंडित अक्षय तेनगुरिया के साथ भक्तों ने माता को चुनरी ओढ़ाई

दिग्ठान (धार)। श्री हनुमान चालीसा भक्त मानपुर, युवा शक्ति मानपुर के आव्हान पर मानपुर से माता भक्तों ने मालवा की मां वैष्णो देवी दिग्ठान भव्य पैदल दर्शन यात्रा की। पंडित अक्षय तेनगुरिया के साथ माता भक्तों ने मालवा की मां वैष्णो देवी दिग्ठान वाली माता को चुनरी ओढ़ाई । श्री चिंतामण गणेश मंदिर मानपुर से 25 सितंबर सुबह 8 बजे यात्रा शुरू हुई।

यात्रा का जगह जगह भव्य स्वागत हुआ। दिग्ठान में दोनों समितियों ने भव्य पैदल दर्शन यात्रा कर रहे भक्तों का भव्य स्वागत किया। पंडित अक्षय तेनगुरिया और भक्तों ने माता को चुन्नी अर्पित कर देश में सुख शांति और समृद्धि की कामना की । इस अवसर पर माता भक्त सहित अनेक युवा माता के दरबार में उपस्थित थे।

पंडित दीनदयाल का सारा जीवन सेवा, समर्पण और राष्ट्रभक्ति का अनुपम उदाहरण है : नीना वर्मा

भाजपा जिला कार्यालय में मनाई गई पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी की जन्म जयंती

धार। 25 सितंबर को एकात्म मानववाद, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद एवं अंत्योदय के प्रणेता श्रद्धेय पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी की जयंती भाजपा जिला कार्यालय में मनाई गई। भाजपा जिला अध्यक्ष महंत निलेश भारती, धार विधायक नीना वर्मा ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर अपने विचार व्यक्त किए।

भाजपा जिला अध्यक्ष महंत निलेश भारती ने 'एकात्म मानववाद' के प्रणेता, भारतीयता के चिंतक, मानवता के सच्चे उपासक, जनसंघ के संस्थापक सदस्य और हम सभी कार्यकर्ताओं के प्रेरणास्त्रोत पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी की जन्म जयंती पर उन्हें कोटिशः नमन। दीनदयाल जी के विचारों ने भारतीय राजनीति की दिशा को भारतीयता की जड़ों से जोड़ने का काम किया है। सार्वजनिक जीवन में शुचिता एवं गरिमा के उच्चतम आयाम स्थापित करने वाले पं. दीनदयाल उपाध्याय जी ने जीवनपर्यंत समाज के

अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति को मुख्यधारा में लाने के लिए संघर्ष किया। उनका एकात्म मानववाद का दर्शन और अंत्योदय के विचार हम सभी को राष्ट्रसेवा हेतु सदैव मार्गदर्शित करते रहेंगे।

विधायक नीना वर्मा ने कहा की पंडित दीनदयाल जी एकात्म मानव का उनका दर्शन और अंत्योदय के उनके विचार हमारे देश को आत्मनिर्भर, समावेशी और सशक्त बनाने की प्रेरणा हैं। उनका सारा जीवन सेवा, समर्पण और राष्ट्रभक्ति का अनुपम उदाहरण है, जो हम सभी का आज भी मार्गदर्शन करते हैं।

भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा ने बताया कि दीनदयाल उपाध्याय जी की जयंती जिले की धार ,बदनावर,सरदारपुर विधानसभा के सभी 18 मंडलों के 821 बूथों पर चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की गई। जिला कार्यालय में भाजपा नगर मंडल अध्यक्ष विशाल निगम सेवा पखवाड़ा अभियान जिला संयोजक देवेंद्र सोनोने जिला कार्यालय मंत्री जगदीश जाट भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा कोषाध्यक्ष मनीष प्रधान, युवा मोर्चा जिला मंत्री लव प्रजापति देवेंद्र रावल लखन शर्मा, भगवान खंडेलवाल सहित भाजपा पदाधिकारी ने पंडित दीनदयाल को पुष्पांजलि अर्पित की।

स्वच्छता मित्रों का किया स्वास्थ्य परीक्षण

बैतूल। नगर परिषद बैतूलबाजार द्वारा स्वच्छता ही सेवा पखवाड़ा 2025 अंतर्गत स्वच्छता मित्रों का स्वास्थ्य परीक्षण कराया गया। इस अवसर पर स्वच्छता मित्रों के नियमित स्वास्थ्य की जांच कर उन्हें आवश्यक परामर्श दिया गया। नगर परिषद का उद्देश्य स्वच्छता कार्य में जुटे सफाई मित्रों के स्वास्थ्य की सुरक्षा एवं संवर्धन करना है।

स्वच्छता केवल एक अभियान नहीं, बल्कि जीवन का संस्कार है : केंद्रीय मंत्री डीडी उइके

कोतवाली चौक से फांसी खदान टंकी तक किया सामूहिक श्रमदान

बैतूल। जिले में स्वच्छता ही सेवा पखवाड़ा 17 सितंबर से प्रारंभ होकर आगामी 2 अक्टूबर तक मनाया जा रहा है। इसी क्रम में नगर पालिका परिषद बैतूल की स्वच्छता टीम द्वारा गुरुवार को एक दिन, एक घंटा, एक साथ अभियान के अंतर्गत विशेष श्रमदान कार्यक्रम का आयोजन किया। यह श्रमदान थाना चौक कोठी बाजार से फांसी खदान टंकी तक किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि केंद्रीय राज्य मंत्री दुर्गादास उइके रहे। इस अवसर पर नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती पार्वती बाई बारस्कर, पार्षदगण, जनप्रतिनिधि नगर पालिका अधिकारी-कर्मचारी, सफाई मित्र एवं आम नागरिकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। श्रृंखलाबद्ध

कार्यक्रम के दौरान सभी उपस्थित लोगों ने हाथों में झाड़ू लेकर मुख्य मार्ग की सफाई की और आमजन को स्वच्छता का संदेश दिया। नागरिकों ने संकल्प लिया कि वे न केवल अपने घर और आसपास को स्वच्छ रखेंगे बल्कि दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करेंगे।

केंद्रीय राज्य मंत्री श्री उइके ने कहा कि स्वच्छता केवल एक अभियान नहीं बल्कि जीवन का संस्कार है। यदि हम स्वच्छ वातावरण में रहेंगे तो ही स्वस्थ रह सकेंगे। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में 'स्वच्छ भारत मिशन आज एक जन आंदोलन बन चुका है। हमें यह समझना होगा कि स्वच्छता किसी एक दिन की जिम्मेदारी नहीं बल्कि प्रतिदिन की आदत है। जब प्रत्येक नागरिक अपने घर, मोहल्ले और नगर को स्वच्छ रखने का संकल्प लेगा तभी महात्मा गांधी के स्वच्छ भारत का सपना साकार होगा। नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती पार्वती बाई बारस्कर ने भी नागरिकों से अपील की कि वे घर से निकलने वाला कचरा अलग-अलग पात्रों में रखें और नगर को स्वच्छ बनाने में सहयोग करें।

वन विद्यालय परिसर में किया पौधरोपण- वन विद्यालय बैतूल में एक दिन एक घंटा एक साथ विशेष गतिविधि का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विद्यालय परिसर में पर्यावरण संरक्षण के तहत लगभग 51 पौधों का रोपण किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में केंद्रीय राज्य मंत्री उपस्थित रहे। उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा कि पौधारोपण केवल एक दिन का कार्य नहीं, बल्कि भविष्य की पीढ़ियों को स्वस्थ वातावरण देने का संकल्प है। पेड़ हमारी धरती की जीवन रेखा हैं, इसलिए लगाए गए पौधों की देखभाल करना हम सभी का दायित्व है। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार हरित भारत और स्वच्छ भारत के लक्ष्य की दिशा में निरंतर कार्य कर रही है और इसमें जनभागीदारी सबसे महत्वपूर्ण है। इस अवसर पर सुधाकर पवार, वन मंडल अधिकारी नवीन गर्ग, वन विभाग के अधिकारी, कर्मचारी भी उपस्थित रहे।

बीआर अंबेडकर कालेज में सेवा पखवाड़ा का हुआ आयोजन

बैतूल। भीमराव रामराव अंबेडकर शिक्षा महाविद्यालय बैतूल में सेवा पखवाडा के अंतर्गत विभिन्न कार्यक्रमो का आयोजन किया गया। कार्यक्रमों की शुरूआत में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के जन्म दिवस 17 सितम्बर को महाविद्यालय में वृक्षारोपण कार्यक्रम किया गया। इस अवसर पर कार्यकम में मुख्य अतिथि महाविद्यालय के संचालक ध्रुवप्रकाश अग्रवाल रहें। उन्होने कहा कि नशा सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक प्रगति में बाधक है नशे से व्यक्ति शारीरिक एवं मानसिक रूप से अस्वस्थ रहता है। महाविद्यालय के प्रो. सुनिल वर्मा ने कहा कि नशा की आदत पूरे परिवार को बर्बाद कर

प्रधानमंत्री पर लघु फिल्म -चलो जीते है,- दिखाई गई। जिसमें महाविद्यालय के बी.एड. स्कालर्स एवं स्टाफ उपस्थित रहें। स्वच्छता कार्यक्रम के अंतर्गत महाविद्यालय परिसर में साफ सफाई कर आस-पडोस में स्वच्छता के प्रति जागरूकता अभियान चलाया गया। नशा मुक्ति अभियान का आयोजन भी 23 सितंबर को किया गया। नशे के दुष्परिणाम विषय पर बी.एड. स्कालर्स ने अपने-अपने विचार रखे है।

देती है। नशा शराब ही नही अपितु तम्बाकु, गुटका, चरस गांजा आदि भी है। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. देशमुख ने कहा कि मोबाइल की लत आज के समय में जानलेवा नशा है, और छोटे-छोटे बच्चे इसके शिकार होते जा रहे है। डॉ. गांवडे ने कहा कि नशा मुक्ति के लिए जन जागरण अभियान चलाया जाना चाहिए, इसके दुष्परिणामो से अवगत कराना चाहिए। उन्होने कार्यक्रम का सफल संचालन किया गया।

श्री राजेंद्र सूरि शास. महा. सरदारपुर राजगढ़ में सेवा पखवाड़ा के तहत स्वस्थ महिला सशक्त परिवार कार्यक्रम आयोजित

धार। श्री राजेंद्र सूरि शासकीय महाविद्यालय सरदारपुर राजगढ़ में सेवा पखवाड़ा के तहत स्वस्थ महिला सशक्त परिवार कार्यक्रम का आयोजन प्राचार्य प्रो.एल एस अलावा की अध्यक्षता में संपन्न हुआ ।

कार्यक्रम में वाणिज्य अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर के चेयरमैन प्रो.आर. के. जैन ने महिलाओं के स्वास्थ्य एवं सशक्तिकरण पर जोर दिया। सेवा पखवाड़ा नोडल डॉ मोहित सिंह चौहान, डॉ डी एस मुजाल्दा, डॉ बी एस बघेल, प्रो. सुरेन्द्र रावत, डॉ राकेश शिंदे ने भी स्वस्थ महिला सशक्त परिवार विषय पर अपने विचार व्यक्त किए। मुख्य वक्ता महिला कल्याण एवं बालिका सुरक्षा समिति प्रभारी प्रो.सरिता जैन ने महिलाओं को स्वस्थ और सशक्त बनाने पर जोर देते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा धार जिले की बदनावर तहसील के ग्राम भैंसोला में शुरु किए महिलाओं के स्वास्थ्य के लिए विशेष अभियान स्वस्थ महिला सशक्त परिवार की जानकारी दी । पूरे देश में इस महा अभियान के तहत एक लाख स्वास्थ्य शिविर आयोजित किए जाएंगे तथा महिलाओं को होने वाली विभिन्न बीमारियों की निःशुल्क जांच की जाएगी तथा दवाई भी वितरित की जाएगी।

कार्यक्रम दो सत्र में सम्पन्न हुआ दूसरा सत्र सिर्फ छात्राओं को समर्पित था जिसमें प्रो.सरिता जैन ने उन्हे स्वयं की सुरक्षा, आत्मसम्मान, अपनी लक्ष्मण रेखा, अपनी संगति अच्छी रखने की सलाह दी तथा बताया कि आज लड़कियां बोझ या टेंशन नहीं है बल्कि टेन सन (दस पुत्रों) के बराबर है। डॉ ममता दास ने गुड टच बेड टच के बारे में बताया, अंजली भाटी ने छात्राओ को सही समय पर सही कदम उठाने की बात कही। डॉ बसंती मुजाल्दा ने मोबाइल के सही प्रयोग करने की सलाह दी। कार्यक्रम का संचालन लालिमा विजयवर्गीय ने किया तथा नवरात्री पर्व की शुभकामनाएं दी। आभार डॉ राधा अलंसे ने माना। कार्यक्रम में डॉ निधि वाजपेई, डॉ रीना खांडेकर, विजया दरबार,खुशी गेहलोत,मीना अलावा, बिंदु गोखले सहित बड़ी संख्या में महाविद्यालय की छात्राएं उपस्थित थीं।

शासकीय एकलव्य महिला आईटीआई की छात्रा त्रिशा ने जिले को किया गौरवान्वित

कलेक्टर ने राष्ट्रीय मेरिट सूची में आने पर किया सम्मान

बैतूल। शासकीय एकलव्य महिला आईटीआई की छात्रा कु.त्रिशा तावड़े ने सेंट्रल जोन इलेक्ट्रीशियन ट्रेड में प्रथम स्थान प्राप्त करके राष्ट्रीय मेरिट सूची में स्थान बनाया है। इस अवसर पर कलेक्टर नरेंद्र कुमार सूर्यवंशी एवं श्रीमती नीलम सिंह सूर्यवंशी ने गुरुवार को छात्रा त्रिशा को पुष्प गुच्छ एवं मिठाई खिलाकर सम्मानित किया। कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने छात्रा की इस उपलब्धि पर माता-पिता की सकारात्मक प्रेरणा, शासकीय एकलव्य महिला आईटीआई बैतूल के प्रशिक्षकों, प्राचार्य एवं स्टाफ के द्वारा दिए मार्गदर्शन की सराहना की। उन्होंने एकलव्य महिला आईटीआई द्वारा महिला सशक्तिकरण के लिए किए जा रहे नवाचारो एवं रोजगार प्रदान करने के लिए किए जा रहे प्रयासों की भी सराहना करते हुए आईटीआई में महिला प्रवेश में जिला बैतूल को प्रदेश में प्रथम स्थान पर लाने में दिए योगदान

के साथ शत प्रतिशत प्रवेश पूर्ण करने के लिए बधाई दी। इस अवसर पर संस्था प्राचार्य रेवाशंकर पंडाग्रे, नोडल प्राचार्य केशव सातपुते, प्रशिक्षण अधिकारी सचिन सरले, दिलीप कुमार सोनी, विवेक दायमा, राघवेंद्र सिंह ठाकुर, धर्मेंद्र दुंदुभी, निर्मल बाथरी, प्रशिक्षण अधीक्षक श्रीमती विनीता पाटिल, श्री महेश चौधरी सहित अन्य स्टाफ ने उपस्थित थे।

संस्था प्राचार्य रेवाशंकर पंडाग्रे ने बताया कि कु त्रिशा तावड़े ने सेंट्रल जोन में इलेक्ट्रीशियन ट्रेड में प्रथम स्थान प्राप्त करके राष्ट्रीय मेरिट सूची में स्थान बनाया है। त्रिशा मेरिट सूची में स्थान पाने वाली मध्यप्रदेश की एक मात्र प्रशिक्षणार्थी है। जिसने जिले और प्रदेश को गौरवान्वित किया है। इस उपलब्धि के लिए त्रिशा को 2 अक्टूबर 2025 को विज्ञान भवन नई दिल्ली में आयोजित कौशल दीक्षांत समारोह में भी सम्मानित किया जाएगा। छात्र की इस उपलब्धि पर कौशल विकास विभाग के संचालक गिरीश शर्मा, अतिरिक्त संचालक डीएस ठाकुर, उप संचालक आरके ऑस्टिन ने फोन द्वारा छात्रा त्रिशा तावड़े को उसकी उपलब्धि के लिए बधाई दी। प्रशिक्षण अधिकारी सचिन सरले ने बताया कि कु.त्रिशा तावड़े ग्राम भड़ूस के एक संघर्षशील परिवार की छात्रा है। जिनके पिता श्री अजय तावड़े बस ड्राइवर है एवं मां श्रीमती सुशीला तावड़े एक गृहणी है। बड़ी बहन कु.एकता तावड़े भी एकलव्य महिला आईटीआई बैतूल की टॉपर रह चुकी है और वर्तमान में रेलवे में अप्रेंटिस कर रही है।

गंज मैकेनिक चौक, जायका और भाजपा कार्यालय भवन के पास की तीन पुलिया संकरी, ट्रैफिक समस्या झेल रहे लोग

पुलिया चौड़ीकरण के प्लान पर लगा ब्रेक, क्योंकि सड़क निर्माण के लिए नहीं मिला फंड

संजय द्विवेदी, बैतूल। गंज क्षेत्र की संकरी पुलिया को चौड़ा करने के लिए नगरपालिका ने योजना बनाई है। लेकिन सेंट्रल स्कूल से करबला तक बनने वाली सडक़ के लिए फंड नहीं आने से फिलहाल यह काम रूका हुआ है। जबकि पुलिया निर्माण के लिए पाइप भी आकर रखे है। नपा अधिकारियों का कहना है कि यदि सडक़ को प्रशासनिक स्वीकृति मिल जाती है तो नपा सडक़ और पुलिया दोनों साथ-साथ निर्माण कराने पर विचार कर रही है। इससे नगरपालिका अतिरिक्त व्यय से भी बच जायेगी, लेकिन अभी तक सडक़ को लेकर फंड नहीं आया है। इधर गंज क्षेत्र की तीन संकरी पुलिया यातायात में रोढ़ा बन रही है। सबसे ज्यादा समस्या जायका रेसटारेंट के पास है, यहां की पुलिया टूट-फूट चुकी है और इसे पार करने के लिए 8 फीट की जगह मात्र है। यहां होटल, बड़े शारूम होने के कारण वाहनों की आवाजाही ज्यादा है,। पुलिया संकरी होने के कारण ट्रैफिक जाम की समस्या बनी रहती है। इसके

अलावा भारतीय जनता पार्टी कार्यालय के पास आए दिन होने वाले बड़े आयोजनों में सैकड़ों की संख्या में वाहन आते हैं। जिससे यहां पर भी टूटी संकरी पुलिया ट्रैफिक जाम कर देती है। रोजाना स्कूल बस, ट्रक, जीप, कार सहित सैकड़ों वाहनों की आवाजाही के कारण गंज के कांतिशिवा चौक से लेकर भाजपा भवन तक का ट्रैफिक रुक-रुककर चलता है जिसके कारण वाहन चालकों सहित पैदल यात्रियों को भी परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

सडक़ की सिर्फ तकनीकी स्वीकृति, फंड नहीं- बैतूल गंज में आवागमन को सुगम बनाने के लिए शहरी सुधार कार्यक्रम के तहत नगरपालिका ने 27.75 करोड़ रुपए की लागत से नई सडक निर्माण का प्रपोजल बनाकर शासन को भेजा था, जहां से तकनीकी स्वीकृति तो मिल गई है, लेकिन अभी तक सडक़ निर्माण को लेकर फंड नहीं आया है। नपा अधिकारियों का कहना है कि पुलिया निर्माण के लिए प्लान बनाया गया है। लेकिन अभी सडक़ के लिए फंड नहीं मिला है। हम चाह रहे है कि सडक़ के लिए भी फंड आ जाता तो सडक़ और पुलिया का निर्माण साथ-साथ हो जाता, लेकिन वित्तीय स्वीकृति नहीं मिलने से अब पुलिया अलग से बनाने पर विचार किया जायेगा।

आए दिन लगते है छोटे-छोटे जाम - गंज में तीन संकरी पुलिया है। जिसके कारण आए दिन छोटे-छोटे जाम लगते हैं और यातायात बुरी तरह से प्रभावित हो जाता है। गंज में मैकेनिक चौक के पास ही बस स्टैंड है, ट्रक और बस सहित भारी वाहनों की आवाजाही के कारण इन संकरी पुलिया से दो वाहन एक साथ क्रास नहीं हो पाते हैं, इसलिए बार-बार ट्रैफिक जाम हो जाता है। सबस ज्यादा समस्या जायका रेसटारेंट के पास है, यहां की पुलिया टूट-फूट चुकी है और इसे पार करने के लिए 8 फीट की जगह मात्र है, जिसके चलते यहां होटल, बड़े शारूम होने के कारण वाहनों की आवाजाही ज्यादा है जिसके कारण बार-बार ट्रैफिक जाम की समस्या बनी रहती है।

सड़क पुलिया बनने से ट्रैफिक को मिलेगी रफ्तार

सडक़ और पुलिया चौड़ी होने के बाद गंज क्षेत्र में ट्रैफिक को रफ्तार मिलेगी। अभी हालात यह है कि संकरी पुलिया के कारण दो वाहन एक साथ क्रॉस नहीं हो पा रहे है। वहीं बार-बार जाम लग रहा है। गंज में सेंट्रल स्कूल, रेलवे स्टेशन, सहित व्यापारिक क्षेत्र है। जिससे यहां हमेशा यातायात का दबाव बना रहता है। यदि सडक़ सेंट्रल स्कूल से करबला तक टू-लेन सडक़ बनती है तो अंडर ब्रिज, नागपुर नाका होते हुए करबला ब्रिज तक जाएगी। यह सडक़ कुल 2850 मीटर लंबी और 24 मीटर चौड़ी रहेगी। इस परियोजना में डिवाइडर के साथ सेंट्रल पोल लगाकर विद्युतीकरण भी किया जाएगा। सडक़ के दोनों तरफ पक्की नाली, फुटपाथ और यूटिलिटी डक्ट का निर्माण होगा। इस सडक़ के बनने से बैतूल शहर की आठनेर बड़ोरा और करबला ब्रिज-तितली चौराहा से फोरलेन के लिए सीधी कनेक्टिविटी मिलेगी।

इनका कहना है -

पुलिया निर्माण के लिए प्लान बनाया गया है। लेकिन अभी सडक़ के लिए फंड नहीं मिला है। हम चाह रहे है कि सडक़ के लिए भी फंड आ जाता तो सडक़ और पुलिया का निर्माण साथ-साथ हो जाता, लेकिन वित्तीय स्वीकृति नहीं मिलने से अब पुलिया अलग से बनाने पर विचार किया जायेगा। जो पाइप आये है, वह ठेकेदार के है।

- नीरज धुर्वे, एई, नगरपालिका बैतूल

भारतीय किसान संघ की मांगों को लेकर बैठक आयोजित

बैतूल। भारतीय किसान संघ के ज्ञापन संबंधी विभिन्न समस्याओं एवं विषयों को लेकर कलेक्टर सभागृह में वंदना जाट अपर कलेक्टर, अनीता पटेल डिप्टी कलेक्टर एवं समस्त विभाग के जिला अधिकारी बैठक में शामिल हुए। संघ के द्वारा फसल बीमा के अनेक विषयों पर विस्तृत चर्चा की गई। संघ के द्वारा बीमा संबंधित विषयों को उठाया गया, जिसका शासन स्तर पर अवगत कराया जाएगा। आगामी सीजन लेकर किसानों को खाद पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हो,

बिजली संबंधी कार्य समयावधि में कार्यों का मेंटेनेंस कार्य किया जाए। जिससे कि समय पर बुआई की जा सके, समस्त विकास खण्डों मक्का फसल के विक्रय के लिए मंडी का संचालन किया जाए जिससे किसानों को विक्रय आदि की समस्या ना हो पाए। जिले में संचालित विभिन्न जलाशय से जो सिंचाई होती है, उनकी नहरो की साफ सफाई बुआई के पूर्व की जाये। जिससे किसान भाई समय पर अपनी बुवाई कर सके। एवं अनेक बिंदुओं पर सौहार्द्रपूर्ण माहौल में चर्चा की गई। अपर कलेक्टर द्वारा समस्त विभागों को निर्देशित किया गया। जिन विषयो का समाधान जिला स्तर पर हो सकता है। उसका निराकरण अति शीघ्र किया जाएगा। शासन स्तर के निर्णयो का प्रस्ताव को तैयार कर शीघ्र शासन को भिजवाए। कार्यक्रम में भारतीय किसान संघ के पुरुषोत्तम सरले प्रांतीय सदस्य, दीपक कपूर, नरेन्द्र कुमार गोठी, अशोक मलैया, नकूल चंदेल, प्रकाश गाडगे, मनोज नावगे जिला अध्यक्ष, ध्रुव मलैया, मुन्नालाल यादव, घनश्याम वामनकर, वरिष्ठ मार्गदर्शकगण तहसील समिति के पदाधिकारी सम्मिलित हुए।

व्यंग्य

डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त'

लेखक व्यंग्यकार हैं।

फ़ाइल में दफन जिंदगी

रामकांत, जो अपनी माँ की पेंशन की फ़ाइल लेकर सरकारी दफ्तर के चक्कर काट रहा था, उसे लगता था कि समय किसी नदी की तरह बहता है। पर यहाँ, इस सरकारी दफ्तर में, समय सीमेंट की तरह जम गया था। सालों पुरानी धूल की परतें मेजों पर इस तरह बिछी थीं, जैसे किसी प्राचीन सभ्यता का उत्खनन हो रहा हो। हर बाबू की कुर्सी एक सिंहासन थी, जिस पर वे ऐसे बैठे थे, मानो किसी अज्ञात साम्राज्य के अंतिम शासक हों। रामकांत ने जब बाबू के सामने पहली बार फ़ाइल रखी, तो बाबू ने उसे ऐसे देखा जैसे उसने कोई एलियन वस्तु पेश कर दी हो। बाबू ने अपने चश्मे को नाक पर टिकाया, जो सालों की लापरवाही से अपनी पकड़ खो चुका था, और धीमे से बुदबुदाया, 'पेंशन? आज के युग में? बेटे, यह कोई सरकारी योजना नहीं, यह तो एक आध्यात्मिक यात्रा है। इसमें धैर्य चाहिए, तपस्या चाहिए।' रामकांत को लगा कि वह दफ्तर नहीं, किसी आश्रम में आ गया है। बाबू की बात सुनकर उसे लगा कि जैसे मोक्ष के लिए यत्न किया जाता है, वैसे ही यहाँ पेंशन के लिए करना पड़ेगा। 'जिंदगी एक फ़ाइल है और फ़ाइल ही जिंदगी', यह पंचलाइन उसे दर्द दे रही थी। बाबू ने एक गहरी साँस ली और कहा, 'तुम्हारे कागज़ात में एक मामूली सी कमी है।' 'जन्म प्रमाण पत्र' पर 'दाहिना अंगूठा' नहीं लगा है। रामकांत ने अपनी आँखें मलते हुए कहा, 'बाबू जी, अंगूठा लगा है, देखिए।' बाबू ने चश्मा उतारा और उसे एक सिरे से दूसरे सिरे तक, एक फ़िल्मी अंदाज़ में ऐसे देखा जैसे कोई अपराधी को देख रहा हो। बाबू ने सिर हिलाया और कहा, अंगूठा तो लगा है, पर स्याही का रंग 'सरकारी नीला' नहीं है। यह तो बाजार वाला काला है। इसे दुबारा लाओ। रामकांत की आँखों से आँसू छलक आए। बाबू जी, मेरी माँ बहुत बीमार हैं, उन्हें जल्द दवाई दिलानी है, उसने गिड़गिड़ाते हुए कहा। बाबू ने उसे ऐसे देखा जैसे वह किसी फ़ालतू बात में समय बर्बाद कर रहा हो। एक पल के लिए उसे लगा कि वह किसी ऐसे अस्पताल में खड़ा है, जहाँ दवाई की जगह 'कल आने की पर्ची' मिलती है।

अगली सुबह, रामकांत एक नई पेंशन फ़ाइल और 'सरकारी नीली' स्याही वाला अंगूठा लेकर लौटा। लेकिन इस बार बाबू की कुर्सी खाली थी। एक दूसरे बाबू ने उसे ऐसे देखा, जैसे वह कोई भूला हुआ इतिहास हो। वो बाबू? वो तो कल से छुट्टी पर हैं। अब फ़ाइल यहाँ जमा होगी। पर सुनो, उसने एक रहस्यमयी मुस्कान के साथ कहा, इसमें एक नई कमी है। 'आयु प्रमाण पत्र' में 'माँ का नाम'अंग्रेजी में लिखा है, जबकि आवेदन हिंदी में है। यह तो नियम के विरुद्ध है। रामकांत ने कहा, बाबू जी, नाम तो अंग्रेजी और हिंदी में एक ही होता है। बाबू ने एक लंबी साँस ली, जैसे वह किसी मूर्ख को समझा रहा हो। बेटा, यहाँ भाषा का मुद्दा नहीं है, नियम का मुद्दा है।

हमारे 'सरकारी व्याकरण' में एक ही नाम को अलग-अलग जगह अलग-अलग माना जाता है। रामकांत के सिर में दर्द होने लगा। अरे, यह क्या है, आदमी नहीं, नियमों का पुतला है, उसने सोचा। उसे याद आया कि कैसे गाँव में एक पेड़ के नीचे बैठ कर उसने अपनी माँ का नाम दोनों भाषाओं में लिखा था। 'उस वक़्त लगा था कि दुनिया बहुत सरल है,' उसने मन ही मन सोचा। बाबू ने फ़ाइल वापस कर दी और कहा, इसे 'फ़ॉर्म 25 बी' के साथ दुबारा जमा करो। पर सुनो, फ़ॉर्म की एक प्रति 'मुख्य सचिव कार्यालय' में भी जमा करनी होगी, ताकि उनकी 'आशीर्वाद' प्राप्त हो सके। रामकांत ने सोचा कि यह दफ्तर नहीं, बल्कि एक धार्मिक स्थल है, जहाँ हर अधिकारी एक नया देवता बन बैठा है। यहाँ दर्शन के लिए पर्ची नहीं, बल्कि जिंदगी का आधा हिस्सा गिरवी रखना पड़ता है, उसे लगा। वह वहाँ से निकला, पैरों में जान नहीं थी, पर उम्मीद का बोझ अब भी बाकी था।

घर आकर रामकांत ने जब अपनी माँ को देखा, तो उसकी आँखों में नमी आ गई। माँ का शरीर सूखा हुआ था, और उनकी आँखें बेसब्री से रामकांत को देख रही थीं। बेटा, पेंशन की फ़ाइल का क्या हुआ? माँ ने धीमी आवाज में पूछा। रामकांत ने अपने आँसू छुपाते हुए कहा, माँ, बस हो ही गया है। थोड़ा और इंतजार। माँ ने सिर हिलाया, उनकी आँखें बंद हो गईं, मानो उन्हें पता था कि थोड़ा इंतजार का मतलब जिंदगी भर का इंतजार होता है। रामकांत ने माँ के हाथों को छुआ, जो अब सिर्फ हड्डियों का ढाँचा थे। उसे लगा कि उसकी माँ सिर्फ साँस नहीं ले रही हैं, बल्कि सरकारी फ़ाइल की तरह धीरे-धीरे दम तोड़ रही हैं। 'यहाँ, इंसान मरता नहीं, बल्कि फ़ाइल के अंदर दफ़न हो जाता है, उसे लगा। रात भर वह जागता रहा, फ़ाइल को देखता रहा, जिसमें उसकी माँ की एक तस्वीर लगी थी। उस तस्वीर में माँ मुस्कुरा रही थी, एक ऐसी मुस्कान, जो अब सिर्फ अतीत की बात थी। उसे याद आया कि उसकी माँ ने उसे कहा था, बेटा, ईमानदारी से काम करना। सच हमेशा जीतता है। रामकांत ने हँसते हुए सोचा, माँ, यहाँ सच और झूठ की लड़ाई नहीं है। यहाँ सिर्फ फ़ाइल की लड़ाई है, और फ़ाइल हमेशा जीतती है। उसे लगा कि वह अपनी माँ से नहीं, बल्कि एक अदृश्य दुश्मन से लड़ रहा था, जिसका नाम व्यवस्था था।'

अगले दिन, रामकांत ने एक और फ़ाइल तैयार की, जिसमें एक नया फ़ॉर्म, 25 बी, भरा गया था। इस फ़ॉर्म में एक नया कॉलम था- आवेदनकर्ता का अधूरी जिंदगी का प्रमाण पत्र। उसे लगा कि यह कोई फ़ॉर्म नहीं, बल्कि उसकी आत्मा का बायोडाटा था। बाबूराम ने मुस्कुराते हुए फ़ाइल ली और कहा, देखो, अब ठीक है। पर एक और बात, फ़ाइल को अंतिम अनुमोदन के लिए सेक्शन अधिकारी के पास जाना होगा। वो बड़े आदमी हैं, हमेशा व्यस्त रहते हैं। तुम्हें उनसे व्यक्तिगत रूप से मिलना होगा। रामकांत को लगा कि वह पेंशन लेने नहीं, बल्कि किसी देवता का आशीर्वाद लेने जा रहा था। सेक्शन अधिकारी का कमरा ऐसा था, जैसे कोई रहस्यमयी गुफा हो, जिसमें प्रवेश करने के लिए अनुरोध की अर्जी और पचास रुपये का प्रसाद जरूरी था। रामकांत ने हिम्मत करके दरवाजा खटखटाया। अंदर से एक भारी आवाज आई, कौन है? रामकांत ने कहा, साहेब, मैं रामकांत, माँ की पेंशन फ़ाइल... सेक्शन अधिकारी ने उसे एक क्षण के लिए देखा और फिर अपनी फाइल में ऐसे खो गए, जैसे उसे देखा ही न हो। रामकांत को लगा कि वह वहाँ मौजूद ही नहीं है, बल्कि एक अदृश्य भूत की तरह भटक रहा है। सेक्शन अधिकारी ने बिना सिर उठाए कहा, फ़ाइल जमा कर दो और कल आना। और हाँ, यहाँ बात करने के लिए साहब नहीं, मालिक कहा करो। रामकांत को लगा कि वह पेंशन नहीं, बल्कि अपने स्वाभिमान की भीख माँग रहा था।

अगले दिन, रामकांत मालिक के दफ्तर में पहुंचा, जहाँ उसे बताया गया कि फ़ाइल मुख्य सचिव के पास चली गई है। मुख्य सचिव, जो एक पौराणिक जीव की तरह थे, सिर्फ कुछ खास दिनों में ही प्रकट होते थे। रामकांत ने एक चपरासी को पकड़कर पूछा, भाई, मुख्य सचिव से कैसे मिला जा सकता है? चपरासी ने उसकी तरफ ऐसे देखा, जैसे उसने कोई बेतुका सवाल पूछ लिया हो। साहेब, वो तो गुप्त व्यक्ति हैं। उनसे मिलने के लिए विशेष अनुमति पत्र चाहिए। रामकांत ने पूछा, वो कहाँ मिलेगा? चपरासी ने दीवार पर लगी एक तस्वीर की ओर इशारा किया, जिसमें एक अधिकारी मुस्कुरा रहा था।

वो यहाँ मिलेंगे। पर सुनो, उनकी 'मुस्कुराहट' के पीछे की 'फीस' बहुत महंगी है। रामकांत ने सोचा कि यह कोई दफ्तर नहीं, बल्कि एक म्यूज़ियम है, जहाँ हर चीज़ के लिए टिकट खरीदना पड़ता है। 'यहाँ, गरीब को गरीब बने रहने के लिए भी रिश्वत देनी पड़ती है,' उसे लगा। चपरासी ने उसे एक कागज का टुकड़ा दिया, जिस पर एक पता लिखा था, गुप्त मीटिंग स्थल। रामकांत को लगा कि वह किसी जासूसी फिल्म का हिस्सा बन गया है, जहाँ हर कदम पर एक नया रहस्य होता है। उसे पता चला कि वह मीटिंग स्थल कोई दफ्तर नहीं, बल्कि एक होटल का कमरा था। अरे, ये तो 'ऑफिस' की जगह 'ऑफ़िस-ऑफ़-टेंस' (ऑफ़िस-ऑफ़-टेम्पटेन्स) है, उसे लगा।

रामकांत ने अपनी जेब से आखिरी 500 रुपये निकाले और चुपचाप होटल के कमरे में गया। मुख्य सचिव एक सोफे पर बैठे थे, उनके सामने एक और आदमी बैठा था जो उनकी चापलूसी कर रहा था। रामकांत ने अपनी फ़ाइल उनके सामने रखी और पैसे टेबल पर रख दिए। मुख्य सचिव ने एक नज़र फ़ाइल पर डाली और पैसे पर, और फिर दोनों को ऐसे अनदेखा कर दिया जैसे वो वहाँ थे ही नहीं। उन्होंने अपने सामने बैठे आदमी से कहा, देखो, आज 'माहौल' बहुत ख़राब है। लोगों को लगता है कि हम कुछ नहीं कर रहे हैं। हमें उन्हें एक 'संदेश' देना होगा। रामकांत को लगा कि वह अपने जीवन की सबसे बड़ी भूल कर रहा था। मुख्य सचिव ने कहा, इनकी फ़ाइल को 'जल्द से जल्द' खत्म करो, और हाँ, इसे एक 'विशेषाधिकार' के रूप में दिखाना। उन्होंने रामकांत को देखा और एक कठोर मुस्कान के साथ कहा, चिंता मत करो, तुम्हारा काम हो जाएगा। पर अब जाओ, यहाँ से। रामकांत को लगा कि वह अपनी माँ की पेंशन के लिए भीख नहीं, बल्कि अपने स्वाभिमान का आखिरी टुकड़ा बेच रहा था।

वह चुपचाप वहाँ से निकला, अपनी जेब खाली थी, और दिल में एक गहरा छेद था। उसे लगा कि वह सिर्फ एक पेंशन फ़ाइल नहीं, बल्कि अपनी आत्मा का एक हिस्सा बेच आया है। यहाँ, रिश्वत तो बस बहाना है, असली मज़ा तो स्वाभिमान का सौदा करने में आता है, उसे लगा।

रात हो चुकी थी, रामकांत थककर घर लौटा। दरवाजे पर ताला लगा था, जो अक्सर नहीं होता था। उसने खिड़की से झाँका, तो देखा कि पड़ोसी, श्यामू, उसके घर के अंदर था। श्यामू की आँखों में नमी थी। रामकांत ने दरवाजा खोला और श्यामू को ऐसे देखा जैसे वह कोई बुरी खबर देने वाला हो। श्यामू ने धीरे से कहा, भाई, माँ... माँ नहीं रहीं। रामकांत के हाथ से फ़ाइल छूटकर नीचे गिर गई। उसकी आँखों में एक अजीब सी शून्यता छा गई। उसे लगा कि वह यहाँ नहीं, बल्कि किसी और दुनिया में था, जहाँ उसकी माँ एक फ़ाइल का इंतज़ार कर रही थी। उसने फ़ाइल को उठाया और उसे अपने सीने से लगा लिया। वह रोया नहीं, सिर्फ एक लंबी, गहरी आह उसके दिल से निकली, एक ऐसी आह, जिसने उसके पूरे अस्तित्व को हिला दिया। यह आह उसके दुःख की नहीं, बल्कि उसकी हार की थी। उसे लगा कि उसकी माँ ने जानबूझकर यह किया था, ताकि उसे पेंशन की फ़ाइल का बोझ न उठाना पड़े।

अगली सुबह, जब सूरज निकला, तो रामकांत ने फ़ाइल को ऐसे देखा, जैसे वह कोई मृत शरीर हो। फ़ाइल, जिसमें उसकी माँ का नाम, पता, और सारी जानकारी थी, अब एक बेजान कागज़ का टुकड़ा थी। उसे लगा कि उसकी माँ ने सरकारी व्यवस्था से आखिरी जंग जीती थी।

उन्होंने अपनी जिंदगी को फ़ाइल से पहले खत्म करके दिखा दिया था कि इंसान की मौत सरकारी नियमों से ज़्यादा तेज होती है। रामकांत ने फ़ाइल को उठाया और उसे अपने घर के कोने में रख दिया, जहाँ वह सालों तक पड़ी रही, एक ऐसे इतिहास की तरह जिसे कोई याद नहीं करना चाहता था। वह हर दिन उसे देखता और सोचता, 'मेरी माँ ने पेंशन नहीं, बल्कि अपने जीवन का अंतिम संस्कार खुद कर लिया था। उन्होंने दिखा दिया कि इस देश में मरने के लिए भी फॉर्म नहीं, बल्कि हिम्मत चाहिए।'

सभी जिलों में वृहद स्तर पर स्वदेशी मेले का आयोजन किया जाए : कमिश्नर कृष्ण गोपाल तिवारी

सेवा पखवाड़ा के अंतर्गत प्रतिदिन विभिन्न गतिविधियां आयोजित की जाए हितग्राही मूलक योजनाओ में बैंक स्वीकृति प्राथमिकता से कराई जाए राजस्व प्रकरणों के निराकरण में लापरवाही बरतने वाले पीठासीन अधिकारियों के विरुद्ध कार्रवाई कि जाए कमिश्नर ने वीडियो कांफ्रेंस में सभी कलेक्टर्स को दिये निर्देश

नर्मदापुरम (निप्र)। आगामी दिनों में नर्मदापुरम संभाग के हरदा, बैतूल एवं नर्मदापुरम जिले में स्वदेशी वस्तुओं को प्रोत्साहित करने के लिए वृहद्ध स्तर पर स्वदेशी मेला आयोजित किया जाए। स्वदेशी मेला दो से तीन दिन की अवधि तक के लिए आयोजित किया जाए एवं उक्त मेले में स्वदेशी प्रोडक्ट, वस्तुएं एवं उत्पादन का व्यापक प्रचार प्रसार किया जाए। उक्त निर्देश नर्मदापुरम संभाग कमिश्नर श्री कृष्ण गोपाल तिवारी ने नर्मदापुरम संभाग के सभी जिलों के कलेक्टर को वीडियो कांफ्रेंस में दिए। वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग में कमिश्नर श्री तिवारी ने सभी कलेक्टर्स को निर्देश दिए की सेवा पखवाड़ा के अंतर्गत प्रतिदिन विभिन्न विभागों की गतिविधियां आयोजित की जाए।

सेवा पखवाड़ा के अंतर्गत वाद विवाद, निबंध, चित्रकला की प्रतियोगिता आयोजित की जाए। साथ ही सशक्त नारी सशक्त भारत के अंतर्गत स्वास्थ्य शिविर तथा दिव्यांग शिविर भी आयोजित किए जाए। सेवा पखवाड़ा अभियान के अलावा जो भी शासन की बेसिक चीजे हैं बे बिना अभियान के भी अच्छी तरह संचालित की जाए। उन्होंने कहा कि शासन द्वारा जो तिथि सेवा पखवाड़ा के अंतर्गत विभिन्न कार्यक्रम आयोजित करने के लिए निर्धारित की गई है। उस तिथि मे अनिवार्य रूप से कार्यक्रम आयोजित किए जाएं। कमिश्नर ने सभी कलेक्टर्स को निर्देश दिए कि शासन की जितनी भी हितग्राही मुलक योजनाएं हैं, जिनमें बैंक ऋण स्वीकृति की आवश्यकता है, ऐसी सभी योजनाओं में बैंक के अधिकारियों से बात कर प्रकरण स्वीकृत कराए जाए। बताया गया कि पशुपालन विभाग, मत्स्य विभाग, सहकारिता, उद्योग विभाग के हितग्राही मूलक योजनाओं के प्रकरण बैंक स्वीकृति के लिए लगाए गए हैं।

बताया गया कि पशुपालन विभाग की गोट यूनिट के लिए 15 लक्ष्य प्राप्त हुए थे, जिनमे आठ एवं कामधेनु योजना में 10 में से 7 प्रकरण में बैंक स्वीकृति प्राप्त हुई है। वही उधम क्रांति योजना के अंतर्गत नर्मदापुरम में 68, बैतूल मे 101 एवं हरदा में 51 प्रकरण बैंक द्वारा स्वीकृत किए गए हैं, जिनमें ऋण राशि का वितरण किया जाएगा। वही जनजाति कार्य विभाग की बिरसा मुंडा एवं टंट्या भील योजना में भी हितग्राहियों के प्रकरण बैंक स्वीकृति के लिए भेजे गए हैं। कमिश्नर ने सभी कलेक्टर्स को निर्देश दिए कि वह उक्त सभी योजनाओं की एक बार समीक्षा कर ले साथ ही बैंक आधारित सभी योजनाओं का रिव्यू करके प्रकरण प्राथमिकता से स्वीकृत कराएं। राजस्व प्रकरण की समीक्षा करते हुए कमिश्नर श्री तिवारी ने पाया कि नामांतरण, रास्ते का विवाद, अविवादित बटवारा एवं विवादित बंटवारा, सीमांकन के प्रकरण अभी भी लंबित चल रहे हैं। कई पीठासीन अधिकारी का कार्य संतोषजनक नहीं है।

कमिश्नर ने सभी जिलों के एडीएम को निर्देश दिए कि वह राजस्व प्रकरण के लंबित रहने के कारण का पता लगाते हुए सभी राजस्व प्रकरणो को निराकृत कराने का कार्य करें। उन्होंने सभी कलेक्टर्स को निर्देश दिए कि वह एक सप्ताह में राजस्व प्रकरण के निराकरण में अपेक्षित सुधार करवाना सुनिश्चित करें। कमिश्नर ने कहा कि कार्य न करने वाले पीठासीन अधिकारियों के विरुध अनुशासनात्मक कार्रवाई का प्रस्ताव प्रेषित किया जाए। कमिश्नर ने सभी कलेक्टर्स को निर्देश दिए कि वह आगामी स्नान पर्व एवं अन्य त्योहारों के दृष्टिगत रखते हुए अपने अपने जिले में कानून व्यवस्था की स्थिति चाक चौबंद रखें। कमिश्नर ने बारिश के पश्चात भी सड़कों पर आवारा विचरण करने वाले पशुओं की समस्या पर चिंता व्यक्त करते हुए सभी कलेक्टर को निर्देश दिए कि वह अभियान चलाकर निराश्रित पशुओं को गौशालाओं में स्थानांतरित करने का कार्य पुनः शुरू करें। कमिश्नर ने निर्देश दिए की हाईवे एवं सड़क के किनारे निराश्रित गोवंश की मृत्यु होने के बाद भी उनके शव कई दिनों तक पड़े रहते हैं। नगर पालिका की लापरवाही से शवो का निष्पादन नहीं हो पाता है। ऐसी स्थिति में जिला प्रशासन पशुओं की डेड बॉडी को लंबे समय तक सड़कों पर न रखकर तत्काल डेड बॉडी को सड़कों से उठाना सुनिश्चित करें।

कमिश्नर ने विभिन्न कर्मचारियो के लंबित पेंशन प्रकरणों की समीक्षा करते हुए निर्देश दिए की कोर्ट प्रकरण, विभागीय जांच, अव मानना आदि के प्रकरण को छोड़कर शेष प्रकरणों में कर्मचारियों को पेंशन राशि दिलाना सुनिश्चित करें। यदि किसी कर्मचारी की लंबे समय से विभागीय जांच चल रही है तो ऐसे कर्मचारियों की विभागीय जांच जल्द पूर्ण कर उसे प्राथमिकता से पेंशन दिलाना सुनिश्चित किया जाए। बताया गया कि बैतूल जिले में पेंशन के 119, नर्मदापुरम जिले में 19 एवं हरदा जिले में 9 प्रकरण लंबित हैं। ई ऑफिस सिस्टम की समीक्षा करते हुए बताया गया कि कमिश्नर कार्यालय में 1 अप्रैल 2025 से 21 सितंबर 2025 तक की स्थिति में कुल 2395 फाइल ई ऑफिस सिस्टम के माध्यम से निराकृत की गई है। वही कलेक्ट्रेट नर्मदापुरम में 2600, कलेक्टर कार्यालय बैतूल में 3130, कलेक्टर कार्यालय हरदा में 1986 फाइल ऑनलाइन ई ऑफिस सिस्टम के माध्यम से निराकृत की गई है। कमिश्नर ने सभी अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे अपने अवकाश अवधि में अपने लिंक अधिकारी को डाक मार्किंग का कार्य सौप कर ही अवकाश पर जाएं, साथ ही उन्होंने बताया कि गत दिवस उनके द्वारा एसडीएम एवं तहसील कार्यालयों के निरीक्षण के दौरान पाया गया कि अभी भी ई ऑफिस सिस्टम से पूर्ण रूप से कार्य संपादित नहीं किया जा रहा है, इसके लिए उन्होंने सभी एसडीएम, तहसीलदार एवं सीईओ जनपद पंचायत को एक बार पुनः ई ऑफिस सिस्टम का प्रशिक्षण देने के निर्देश दिए। जल जीवन मिशन की समीक्षा करते हुए पाया गया कि नर्मदापुरम में 15061, हरदा में 1433 एवं बैतूल में 3900 नल कनेक्शन करने का कार्य शेष है। कमिश्नर ने हर घर नल कनेक्शन का कार्य जल्द से जल्द पूरा करने के निर्देश दिए।

लक्ष्मी कुशवाह को कृषि कार्य से मिल रही बड़ी आमदनी, मासिक आय हुई 10 हजार से ज्यादा

विदिशा (निप्र)। विदिशा जिले की ग्यारसपुर तहसील के ग्राम औलिंजा की महिला कृषक श्रीमती लक्ष्मी कुशवाह ने आजीविका मिशन से जुड़कर स्व सहायता समूह की मदद से जैविक खेती कर अपनी आमदनी बढ़ा ली है। वह कृष्णा स्व सहायता समूह की सदस्य हैं। कृषि कार्य करने से उनके परिवार को नई तकनीक से खेती करने का तरीका सीखने को मिला है। कृषि सीआरपी के रूप में काम करने से आय बढ़ी , और आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ। वर्तमान में उनकी मासिक आय 10,500 रुपये हो गई है। परिवार का खर्च चलाने में आ रही समस्याओं का समाधान हुआ और उनकी जरूरतों की पूर्ति आसान हो गई। ग्रामीण समुदाय में मध्य प्रदेश राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन द्वारा किए जा रहे कार्यों के प्रति रुझान बढ़ा। शासन द्वारा चलाई जा रही योजनाओं का लाभ लेकर आजीविका से भरण-पोषण करने और बच्चों की शिक्षा पूरी करने में सहायता मिली। परिवार में स्वयं का सम्मान बढ़ा और खुशियों का माहौल आया।

चलित पशु चिकित्सा वाहन से घर पहुंचकर पशुओं का निःशुल्क उपचार, टोल फ्री नंबर 1962 पर कॉल करें

बैतूल (निप्र)। चलित पशु चिकित्सा वाहन का मुख्य उद्देश्य, पशुओं का उपचार, टीकाकरण, गर्भाधान कराना, जिले के प्रत्येक जनपद के लिए चलित पशु चिकित्सा वाहनों संचालित है, प्रदेश सरकार पशुपालकों को हर सुविधा देने के लिए प्रतिबद्ध है, अभी तक डॉक्टर की टीम घर पहुंच कर पशुओं का उपचार करते थे, परंतु अब पशुओं के उपचार के लिए चलित पशु वाहन अस्पताल के रूप में घर-घर पहुंच कर पशुओं का इलाज करेगा। पशुओं के उपचार के साथ टीकाकरण, कृत्रिम गर्भाधान भी कराया जायेगा।

जनपद पंचायत नर्मदापुरम एवं माखननगर में ई आफिस हेतु प्रशिक्षण संपन्न

नर्मदापुरम (निप्र)। कलेक्टर सुश्री सोनिया मीना के नेतृत्व में जिले में सभी कार्यालयों में ई आफिस प्रारंभ कर दिया गया है। ई आफिस के माध्यम से अब सभी नस्तियां आन लाईन चलाई जायेंगी जिसमें नोट शीट एवं ड्राफ्ट तैयार किया जायेगा।

आज जनपद पंचातय नर्मदापुरम एवं माखननगर में जनपद पंचायत के अमले को ई आफिस का प्रशिक्षण कलेक्टर कार्यालय से आये रफीक खान एवं प्रज्जवल शुक्ला के द्वारा दिया गया प्रशिक्षण में ई आफिस में आने वाली समस्याओं का निराकरण किया गया। सीईओ जनपद पंचायत रंजीत ताराम ने बताया कि जनपद पंचायत माखनगर एवं नर्मदापुरम दोनों जगह ई आफिस से कार्य किया जा रहा है। कुछ समस्यायें ई आफिस के दौरान आती हैं जिनके निराकरण के लिये आज इस प्रशिक्षण का आयोजन किया गया है। जनपद पंचायत नर्मदापुरम में किया गया एवं वीसी के माध्यम से माखनगर के अमले ने भी प्रशिक्षण लिया। जिसमें सभी समस्याओं का समाधान श्री खान के द्वारा किया गया।

ई आफिस होने से हम सेकेंडों में डांक को वरिष्ठ कार्यालय भेज सकते हैं एवं वरिष्ठ कार्यालय से आने वाले निर्देशों को भी तुरंत फालो कर सकते हैं। ई आफिस से कर्मचारी अधिकारी का समय बचेगा एवं अनावश्यक पेपर का खर्चा भी कम होगा। ई आफिस से दस्तावेजीकरण भी अच्छा होगा एवं यह दस्तावेज हमेशा के लिये सेव हो जायेंगे। प्रशिक्षण के अंत में ब्लाक समन्वयक रामकुमार गौर के द्वारा सभी को स्वच्छता की शपथ दिलाई।

श्री गौर ने बताया स्वच्छता ही सेवा अभियान अंतर्गत समस्त ग्राम पंचायतों में स्वच्छता की गतिविधियां की जा रही हैं, इसी तारतम्य में इस प्रशिक्षण में भी स्वच्छता की शपथ दिलाई गई।

मुख्यमंत्री जी के कुरवाई में प्रस्तावित दौरा कार्यक्रम की व्यवस्थाओं का विधायक व कलेक्टर ने जायजा लिया

विदिशा (निप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी का 27 सितम्बर को कुरवाई में प्रस्तावित दौरा कार्यक्रम के प्रबंधो की जा रही तैयारियों का आज विधायक श्री हरिसिंह सप्रे, कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता ने जायजा लिया है। जिसमें प्रमुख रूप से हेलीपेड स्थल पार्किंग स्थल, सभा स्थल पार्किंग व्यवस्था उन्होंने विभागीय अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि हितग्राही मूलक योजनाओं से लाभान्वित होने वाले हितग्राही उक्त कार्यक्रम में अनिवार्य रूप से उपस्थित हों के पुख्ता प्रबंध सुनिश्चित किये जाएं। कलेक्टर श्री गुप्ता ने कहा कि मुख्यमंत्री जी द्वारा कार्यक्रम स्थल पर जिन निर्माण कार्यों का लोकार्पण, शिलान्यास किया जाना है उन कार्यों की सूची तैयार की जाए और कार्यक्रम स्तर पर हितग्राहियों को हित लाभ वितरण के लिए विभागवार हितग्राहियों का चयन किया जाए। कार्यक्रम सुव्यवस्थित रूप से संपन्न हो इसके लिए किए जाने वाले प्रमुख प्रबंध तथा वैकल्पिक व्यवस्थाओं पर चर्चा की गई है।

कलेक्टर श्री गुप्ता ने निर्देश दिए कि बारिश के मौसम को ध्यान गत रखते हुए संपूर्ण पांडाल वाटर प्रूफ बनाया जाएगा। प्रदर्शनी लगाने की रूपरेखा के संदर्भ में भी दिशा-निर्देश दिए गए हैं। इसी प्रकार विभिन्न विभागों के अधिकारियों को सौपे जाने वाले विभागीय कार्यो हेतु किए जाने वाले प्रबंधों की पूर्ति समयावधि में पूरी करने के निर्देश दिए गए हैं। मुख्यमंत्री डाक्टर मोहन यादव का कुरवाई प्रस्तावित दौरा कार्यक्रम हेतु हैलिपैड स्थल और सभा स्थल शासकीय महाविद्यालय का कुरवाई विधायक श्री हरि सिंह सप्रे, कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता, अपर कलेक्टर श्री अनिल कुमार डामोर, जिला पंचायत सीईओ श्री ओपी सनोडिया, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री प्रशांत चैबे, स्थानीय एसडीएम श्री मनीष जैन के अलावा विभिन्न विभागों के अधिकारियों द्वारा संयुक्त रूप भ्रमण कर अवलोकन किया गया है। इस दौरान सभा स्थल पर किए जाने वाले प्रबंधों के संदर्भ में चर्चा कर विभागों के अधिकारियों को क्रियान्वयन हेतु निर्देश दिए गए हैं तथा संयुक्त रूप से हेलीपैड स्थल से कार्यक्रम स्थल तक पहुंच मार्ग के बीच में स्वागत द्वार सहित अन्य व्यवस्थाओं के लिए भी चर्चा कर निर्णय लिए हैं।

सचिव, जीआरएस की बैठक कर दिशा-निर्देश दिए

कुरवाई विधायक श्री हरि सिंह सप्रे और कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता ने आज संयुक्त रूप से कुरवाई भ्रमण के उपरांत मुख्यमंत्री जी के प्रस्तावित द्वारा कार्यक्रम के मद्देनजर की जा रही तैयारियों के संबंध में सचिव और रोजगार सहायक जीआरएस की बैठक कर उन्हें योजनाओं के क्रियान्वयन तथा पात्र हितग्राहियों को हित लाभ वितरण संबंध में आवश्यक दिशा-निर्देश दिए हैं।

दिशा निर्देश

मुख्यमंत्री जी का प्रस्तावित दौरा कार्यक्रम के मद्देनजर कुरवाई विधायक श्री हरिसिंह सप्रे ने अधिकारी, कर्मचारियों की बैठक आयोजित कर दिशा निर्देश दिए है। उन्होंने स्थानीय अमले को निर्देश दिए है कि शासन की योजना से लाभांवित होने वाले हितग्राही कार्यक्रम में पहुंचे इसके लिए उन्हें लाने ले जाने के पुख्ता प्रबंध सुनिश्चित किए जाएं। इसके साथ ही हितग्राहियों को किसी भी प्रकार की कोई समस्या का सामना ना करना पडें का ध्यान रखें।

राइट क्लिक

लालू परिवार में सियासी विरासत का संघर्ष और बहुदलीय परिवारवाद...!

अजय बोकिल

लेखक सुबह सवेरे के कार्यकारी प्रधान संपादक हैं।
संपर्क-
9893699939
ajaybokil@gmail.com

बिहार में विधानसभा चुनाव के पहले राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव के परिवार में राजनीतिक विरासत के 'न्यायोचित' बंटवारे को लेकर जो अंतर्कलह मची है, उसे जनता किस रूप में लेगी, लालू इस मामले में कितने न्यायशील रह पाएंगे, यह अभी देखना है, लेकिन जो हो रहा है, वह शायद राजनीति में परिवारवाद की अनिवार्य त्रासदी है। या यूं कहें कि परिवार ही परिवारवादी सियासत का 'दि एंड' होता है। हालांकि लालूजी के सभी नौ बच्चे राजनीति में सक्रिय नहीं है, लेकिन बाकी पांच में उनमें सत्ता की मलाई में हिस्सेदारी की चाहत न हो, यह भी अति आशावाद होगा। लालू परिवार में आज हर कोई अपने-अपने 'त्याग' की कीमत मांग रहा है। जबकि लालू ने अपने सबसे छोटे बेटे तेजस्वी यादव को 'योग्यतम' पाकर अपना सियासी वारिस घोषित किया हुआ है। बड़े पुत्र और सत्ताकांक्षी तेजप्रताप यादव को 'प्रेम सम्बन्धों' के चलते पार्टी से बाहर का रास्ता दिखा दिया गया है। लालू पहले अपनी पत्नी राबड़ी देवी को राजनीति में लाए। फिर बच्चे बड़े हुए तो मीसा भारती, तेजप्रताप और तेजस्वी जनप्रतिनिधि या सत्ताधीश बनवा दिया। ऐसे में उनकी एक और बेटी रोहिणी आचार्य का अपने 'त्याग की कीमत' मांगना स्वाभाविक ही था, जिन्होंने पिता को अपनी एक किडनी दी है। रोहिणी ने 18 सितंबर को एक सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर की पोस्ट को शेयर किया, जिसमें राजद सांसद संजय यादव पर 'बिहार अधिकार यात्रा' के दौरान बस की अगली सीट पर बैठने का आरोप था। यह सीट आमतौर पर लालू प्रसाद या तेजस्वी यादव जैसे शीर्ष नेताओं के लिए आरक्षित रहती है। फिर रोहिणी ने पूर्व विधायक शिव चंद्र राम जैसे हाशिए पर पड़े दलित नेताओं की तस्वीरें शेयर कीं, जो उसी सीट पर बैठे दिख रहे थे। रोहिणी ने लिखा कि राजद के राष्ट्रीय अध्यक्ष लालू यादवजी द्वारा सामाजिक-आर्थिक न्याय के लिए चलाए जा रहे अभियान का मूल उद्देश्य समाज के अंतिम पंक्ति में खड़े वंचित वर्ग को आगे लाना रहा है। इन तस्वीरों में इन्हीं वर्गों से आने वाले लोगों को आगे बैठे देखना सुखद अनुभव है। 'फिर 19 सितंबर को रोहिणी ने सिंगापुर में किडनी दान के दौरान ऑपरेशन थिएटर ले जाते समय की अपनी पुरानी तस्वीर शेयर करते हुए लिखा कि मुझे किसी पद की लालसा नहीं है, न ही कोई राजनीतिक महत्वाकांक्षा। मेरे लिए मेरा स्वाभिमान सर्वोपरि है।' चर्चा है कि रोहिणी विधानसभा चुनाव लड़ना चाहती थीं, लेकिन तेजस्वी ने इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया। शायद वो परिवार में एक और नया प्रतिद्वंद्वी नहीं चाहते। यहां संजय यादव तो एक निमित्त भर है। क्योंकि हर नेता का कोई न कोई 'संजय यादव' होता ही है। असली कारण लालू की राजनीतिक विरासत में बराबरी की हिस्सेदारी है। यहां सवाल यह भी है कि अगर रोहिणी की सचमुच कोई राजनीतिक महत्वाकांक्षा नहीं है तो फिर सोशल मीडिया पर यह सब डालने की जरूरत ही क्या थी?

लालू परिवार के बाकी पांच सदस्यों की राजनीतिक महत्वाकांक्षा कितनी है, यह अभी सामने नहीं आया है। लेकिन इस बार विस चुनाव में महागठबंधन के जीतने की उम्मीदों के बीच उनके सियासी अरमान भी उछाल मारने लगें तो आश्चर्य नहीं होना चाहिए। हालांकि इस बात की कोई गारंटी नहीं है कि महागठबंधन जीत ही जाएगा। लेकिन कुछ लोगों का मानना है कि राहुल गांधी के जोरदार 'वोट चोरी विरोधी अभियान' और तेजस्वी के युवा चेहरे' की छवि ने विधानसभा चुनाव मुकाबले को कांटे का बना दिया है। कभी परिवारवाद के लिए लालू पर तंज कसने वाले मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने भी लंबे अर्से बाद 'कार्यकर्ताओंकी इच्छा' का सम्मान करते हुए अपने बेटे निशांत को राजनीति में आने की इजाजत दे दी है। चूंकि निशांत अकेले हैं, इसलिए सियासी विरासत में बंटवारे का कोई खतरा उनके सामने नहीं है। यही स्थिति अखिलेश यादव, नवीन पटनायक या सुप्रिया सुले के साथ भी है। क्योंकि ये सभी इकलौते हैं।

पिछले दिनों तेजस्वी यादव ने उन पर लग रहे परिवारवादी आरोप के जवाब में नीतीश राज में आयोगों में हो रही नियुक्तियों पर तंज कसते हुए उसे 'जीजा, जमाई, मेहरारू (पत्नी) आयोग' कहा था। तेजस्वी के पलटवार में दम इसलिए था, क्योंकि बिहार में 'लालू के परिवारवाद' के खिलाफ 'प्रति परिवारवाद' की भी बहार है। मसलन बिहार सरकार ने जेडी यू के राज्यसभा सांसद संजय कुमार झा की बेटी सत्या और आद्या झा को सुप्रीम कोर्ट में काउंसलर बना दिया। सरकार में जेडी यू कोटे से मंत्री अशोक चौधरी के दामाद सायन कुणाल को बिहार राज्य धार्मिक विश्वास परिषद का सदस्य बनाया गया। सायन की पत्नी शांभवी चौधरी, जीतन राम मांझी की पार्टी 'हम' से संसद हैं। केंद्रीय मंत्री जीतन राम मांझी के दामाद देवेंद्र कुमार मांझी को बिहार अनुसूचित जाति आयोग का उपाध्यक्ष तो पूर्व केन्द्रीय मंत्री स्वर्गीय राम विलास पासवान के दामाद और वर्तमान केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान के बहनोई मृणाल पासवान को बिहार अनुसूचित जाति आयोग के अध्यक्ष पद से नवाजा गया है। जबकि लालू परिवार में तेजस्वी के बड़े भाई तेज प्रताप विधायक हैं। बहन मीसा भारती राज्यसभा सदस्य हैं। सोशल मीडिया पर मोर्चा खोलने वाली बहन रोहिणी आचार्य लोकसभा चुनाव लड़ चुकी हैं। लालू यादव के साले साधु यादव भी राजनीति में हैं। लालू और राबड़ी देवी तो मुख्यमंत्री रह ही चुके हैं।

यह सच्चाई है कि भारतीय राजनीति के वटवृक्ष के नीचे फल-फूल रहे राजनीतिक परिवारवाद को जन स्वीकृति भी प्राप्त है। इस परिवारवाद ने जनता से वैधता हासिल करने के लिए क्षेत्रीय अखंडता ,जातीय पहचान और भाषिक अस्मिता का च्यवनप्राश भी इसमें चतुराई से मिला दिया है। फिर चाहे वो तमिलनाडु के मुख्यमंत्री स्टालिन हों, महाराष्ट्र में शरद पवार और ठाकरे परिवार के साथ-साथ जम्मू कश्मीर में अब्दुल्ला या मुफ्ती परिवार हो, तेलंगाना में केसीआर का परिवार हो या आंध्र में जगनमोहन रेड्डी का खानदान हो। पंजाब में अकाली दल हो या फिर बंगाल में ममता दीदी व यूपी में मायावती हों, उन्होंने अपना परिवार न होने पर भांजे, भतीजों के सिर पर हाथ रख दिया है। कांग्रेस में तो शीर्ष नेतृत्व ही राजनीति के इस प्रकार का साक्षात उदाहरण है। वामपंथी पार्टियों में परिवारवाद उतना ही हाशिए पर है, जितनी आज खुद वो पार्टियां हैं। उधर भाजपा राजनीति में परिवारवाद और वंशवाद के खिलाफ खुलकर खम ठोकती है, बावजूद इसके कि यह घुन अब उसमें भी लग गया है। बीजेपी में परिवारवाद की कलमें अभी वृक्ष में तब्दील हो रही हैं। आज अधिकांश स्थापित नेताओ के बेटे-बेटियां प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से राजनीति के दरवाजे खटखटा रहे हैं। वैसे भाजपा ने इसकी एक सुविधाजनक परिभाषा भी खोज निकाली है कि 'राजनीति में लंबे समय से सक्रिय' बेटे बेटियों या करीबी रिश्तेदारों को परिवारवाद के ठप्पे से मुक्त रखा जाए।

इसके अलावा एक नया ट्रेंड 'बहुदलीय परिवारवाद' भी है। परिवार का एक सदस्य सत्तापक्ष में तो दूसरा विपक्ष में रहता है। यानी सत्ता प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में परिवार के हाथों में ही रहती है। दोनो एक दूसरे की सार्वजनिक आलोचना भी करते हैं और निजी तौर पर गले मिलते हैं। यह भी बहुदलीय लोकतंत्र खुला मजाक और जनता की आंखो में धूल झोंकना ही है।

चिंता की बात यह है कि इस परिवारवाद को जनता का समर्थन भी मिलता है। एडीआर की रिपोर्ट के मुताबिक 2024 के लोकसभा चुनाव में एडीए गठबंधन ने 128 वंशवादियों को टिकट दिया, जिनमे से 77 जीते। अकेले बीजेपी ने ऐसे 96 टिकट बांटे थे, जिनमें से 57 जीतकर लोकसभा पहुंचे। इसी तरह विपक्षी इंडिया गठबंधन ने कुल 152 परिवारवादियों को टिकट दिए थे, उनमें से 75 को जीत हासिल हुई। इसमे भी अकेले कांग्रेस ने 96 ऐसे टिकट दिए, जिनमें से 40 जीतकर संसद में पहुंचे।

यह सही है कि नेताओं के पुत्र-पुत्रियां व अन्य रिश्तेदार अपने जीवन यापन के लिए कोई और उद्यम करें न करें, वास्तविक पुण्य उन्हें राजनीति में ही दिखाई पड़ता है। खासकर सत्ता का स्वाद चख चुके परिजनों में तो यह भाव और भी गहरे तक पैठा रहता है। उनके लिए किसी तरह सत्ता में आना और उस पर काबिज रहना ही जीवन का सार तत्व है और इसके लिए हर हथकंडा जायज है। ऐसे में जो नेता पुत्र-पुत्रियां व नजदीकी रिश्तेदार सामान्य जीवन जी रहे होते हैं, उन्हें लगता है कि 'पैतृक सम्पत्ति भी हिस्सेदारी' की तरह अगर उन्हें राजनीतिक विरासत में भागीदारी न मिली तो पूरा जीवन ही बेकार है।

बहरहाल, राजनीतिक नजरिए से लालू परिवार की यह अंतर्कलह समय रहते न थमी तो चुनाव में आरजेडी लिए दोहरा खतरा हो सकती है। पहला-चुनावी सीजन में सत्तारूढ़ नीतीश कुमार और बीजेपी इसे तेजस्वी की नेतृत्व क्षमता पर सवाल खड़े करने के लिए भुनाएंगे। दूसरा-पार्टी के पुराने नेता और कार्यकर्ता, जो पहले ही संजय यादव के 'सुपर पावर' से परेशान है, खुलकर बगावत कर सकते हैं। अपने ही परिवार के भीतर से चुनौती मिलने के कारण तेजस्वी की 'युवा' छवि कमजोर पड़ सकती है। हालांकि तेजस्वी मानकर चल रहे हैं कि मुख्यमंत्री की अगली कुर्सी उन्हीं का इंतजार कर रही है। लेकिन मुश्किल यह है कि चुनाव के मुहाने पर छिड़ा यह पारिवारिक संघर्ष कहीं जनता के मुद्दों पर हावी हो गया तो विपक्ष का 'वोट चोरी' और 'बिहार के अधिकारों' का नरेटिव 'विरासत चोरी' और 'परिजनों के अधिकार संघर्ष' में भी बदल सकता है। ऐसे में हाथ आती दिखती सत्ता फिर एक बार फिसल सकती है।

हमने हर काल में आई चुनौतियों का सामना स्वदेशी और आत्मनिर्भरता की ताकत से किया : मुख्यमंत्री

प्रधानमंत्री स्वदेशी के हैं ब्रांड एम्बेसडर, मुख्यमंत्री स्वदेशी जागरण सप्ताह का शुभारंभ कर रैली में शामिल हुए

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि स्वदेशी की ताकत से ही हमारी संस्कृति, हजारों हजार साल से अपने गौरव-गरिमा और समृद्धता के साथ विद्यमान है। हर युग और हर काल में आई चुनौतियों का हमने स्वदेशी और आत्मनिर्भरता की ताकत से ही सामना किया है। महात्मा गांधी ने स्वदेशी के बल पर ही देश को आजादी दिलाई थी। उन्होंने ने जन-जन को विदेशी वस्तुओं को त्यागने और विदेशी वस्त्रों की होली जलाने के लिए प्रेरित किया। अपनी माटी, अपने देश और स्वदेशी व्यवस्था के प्रति हम सबके मन में सम्मान होना चाहिए। महात्मा गांधी और पं. दीनदयाल उपाध्याय के विचारों में बहुत समानता थी। महात्मा गांधी और पं. दीनदयाल उपाध्याय भारतीय संस्कृति की लंबी विचार प्रक्रिया के संवाहक हैं। दोनों का ही विचार था कि स्वावलंबन और स्वदेशी के बीज से ही आत्मनिर्भरता का वटवृक्ष बनेगा और भारत, विश्व की प्रमुख आर्थिक शक्ति के रूप में स्थापित होगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने गुरूवार को पं. दीनदयाल उपाध्याय की जंयती के अवसर पर मध्यप्रदेश जन-अभियान परिषद और स्वदेशी जागरण मंच के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित राज्य स्तरीय स्वदेशी जागरण सप्ताह के शुभारंभ सत्र को संबोधित कर रहे थे। रवीन्द्र भवन में आयोजित कार्यक्रम का मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मंगलाचरण के बीच दीप प्रज्ज्वलित कर शुभारंभ किया।

डॉ. यादव ने रैली में पैदल मार्च कर स्वदेशी अपनाने के लिए जन-जन को किया प्रेरित

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने माँ भारती, महात्मा गांधी और पं. दीनदयाल उपाध्याय के चित्र पर माल्यार्पण किया। इस अवसर पर गायत्री परिवार, ब्रह्म कुमारी संगठन, पंतजलि समूह और विभिन्न सामाजिक संस्थाओं ने स्वदेशी के प्रति अपनी प्रतिबद्धिता व्यक्त करते हुए मुख्यमंत्री डॉ. यादव को स्वदेशी संकल्प समर्थन-पत्र सौंपे। कार्यक्रम में स्वदेशी पर केंद्रित लघु फिल्म का प्रदर्शन भी किया गया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव स्वदेशी जागरण सप्ताह के शुभारंभ अवसर पर निकाली गई रैली में मानस भवन से पैदल मार्च करते हुए शामिल हुए। रैली के माध्यम से उद्योग जगत, व्यापारी बन्धुओं, दुकानदारों, विक्रेताओं, छात्र-छात्राओं और समस्त समाज के सदस्यों को स्वदेशी अपनाने के लिए प्रेरित किया गया। रैली स्वदेशी पर केंद्रित नारों के माध्यम से जन-जागरण करती हुई रवीन्द्र भवन पहुंची।

भोपाल, बैतूल, शिवपुरी और उज्जैन में लगेंगे स्वदेशी मेले

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि स्वदेशी जागरण सप्ताह में स्वदेशी वस्तुओं का प्रचार-प्रसार करने और बढ़ावा देने के उद्देश्य से पूरे प्रदेश में स्वदेशी जागरण सप्ताह का आयोजन किया जा रहा है। यह महाअभियान प्रदेश के 313 विकासखंडों में पं. दीनदयाल उपाध्याय की जयंती 25 सितम्बर से महात्मा गांधी की जयंती 2 अक्टूबर तक चलेगा। प्रसन्नता का विषय है कि आगामी माहों में भोपाल, बैतूल, शिवपुरी और उज्जैन में स्वदेशी मेले आयोजित किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि वर्तमान में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी स्वदेशी के सबसे बड़े ब्रांड एम्बेसडर हैं। उनके मार्गदर्शन में देश की अर्थव्यवस्था तेजी से आगे बढ़ रही है। आत्मनिर्भर बनते भारत की विकास यात्रा का मार्ग स्वदेशी से ही खुलता है।

किसानों और कारीगरों के परिश्रम का सम्मान जरूरी

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने रामायण के प्रसंग का उल्लेख करते हुए कहा कि अपनी मिट्टी, अपनी भूमि के प्रति विश्वास के भाव से ही हम अपने जीवन को सफल और धन्य कर सकते हैं। किसान मिट्टी में श्रम से ही अपने अन्न के भंडार भरते हैं। लघु उद्योग चलाने और उसमें काम करने वाले कारीगर के भी स्वावलंबन के मार्ग पर चलते हैं, उनके परिश्रम का सम्मान आवश्यक है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने नवरात्रि, दशहरा और दीपावली के त्योहारी सीजन में प्रदेशवासियों को स्वदेशी वस्तुएं खरीदने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि किसी भी अभियान की सफलता समाज के सहयोग के बिना मंजिल तक नहीं पहुंच सकती है। दीपक और उसकी बाती के लिए जिस प्रकार ऑक्सीजन जरूरी है, उसी प्रकार स्वदेशी जैसे अभियान की सफलता के लिए समाज की सक्रिय सहभागिता आवश्यक है।

कार्यक्रम में मध्यप्रदेश जन-अभियान परिषद के उपाध्यक्ष श्री मोहन नागर, स्वर्णिम भारत वर्ष फाउण्डेशन, अखिल भारतीय सह प्रमुख स्वदेशी मेला, स्वाबलंबी भारत अभियान और सरस्वती विद्या प्रतिष्ठान मध्यप्रदेश के पदाधिकारी सहित बड़ी संख्या में स्कूल-कॉलेज के छात्र-छात्राएँ उपस्थित थे।

स्वस्थ नारी, सशक्त परिवार अभियान

अभियान की शुरुआत के लिए मप्र का चयन गर्व की बात है : शुक्ल

भोपाल (नप्र)। स्वस्थ नारी, सशक्त परिवार अभियान के अंतर्गत 25 सितंबर को सरोजिनी नायडू शासकीय कन्या महाविद्यालय, शिवाजी नगर भोपाल में विशेष स्वास्थ्य शिविर आयोजित हुआ। शिविर का उद्घाटन उपमुख्यमंत्री राजेंद्र शुक्ल ने किया। शिविर में छात्राओं और शिक्षिकाओं के आयुष्मान भारत डिजिटल हेल्थ आईडी (आभा) बनाए गए। विशेषज्ञ डॉक्टरों की टीम ने ढाई हजार से ज्यादा स्टूडेंट्स में उच्च रक्तचाप, मधुमेह, कैंसर, सिकलसेल, टीबी और किशोरियों में एनीमिया की स्क्रीनिंग की। साथ ही पोषण

परामर्श और योग-प्राणायाम सत्र आयोजित किए गए। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल और राज्यमंत्री नरेन्द्र शिवाजी पटेल ने सरोजिनी नायडू शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय भोपाल में 'स्वस्थ नारी सशक्त परिवार' के अन्तर्गत विशेष स्वास्थ्य शिविर का शुभारंभ किया।

2 अक्टूबर तक चलेगा अभियान

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 17 सितंबर को मध्यप्रदेश के धार जिले के भैंसोला गांव से इस अभियान की शुरुआत की थी। अभियान 2 अक्टूबर तक चलेगा। राज्य के सभी जिलों में महिलाओं और किशोरियों के स्वास्थ्य परीक्षण और जागरूकता गतिविधियां चल रही हैं।

सवाल-जवाब से जाना स्वस्थ रहने का रास्ता

छात्राओं के लिए खुले में पूछो सेशन आयोजित हुआ, जिसमें उन्होंने विशेषज्ञों से स्वास्थ्य संबंधी सवाल पूछे। स्वास्थ्य प्रश्नोत्तरी, जागरूकता खेल और जुंबा सत्र थोड़ी सेहत, थोड़ी मस्ती भी हुआ। शिविर में सुरक्षित रक्तदान की सुविधा उपलब्ध रही और 26 यूनिट रक्तदान किया गया। इस दौरान उपमुख्यमंत्री राजेंद्र शुक्ल ने कहा कि प्रधानमंत्री द्वारा इस अभियान की शुरुआत के लिए मध्यप्रदेश का चयन गर्व की बात है। उन्होंने महिलाओं और किशोरियों से अपील की कि वे अपने नजदीकी शिविरों में जांच जरूर कराएं।

एयरपोर्ट पर नायब तहसीलदार को आया हार्ट अटैक, मौत

खुद कार ड्राइव कर गए थे, सीने में दर्द उठा, जमीन पर गिर पड़े

भोपाल (नप्र)। भोपाल के गोविंदपुरा तहसील में नायब तहसीलदार दिनेश साहू की हार्ट अटैक से मौत हो गई। वे पूर्व चुनाव आयुक्त ओपी रावत की ड्यूटी में एयरपोर्ट पर थे। इस दौरान उन्हें सीने में दर्द हुआ। साथी कर्मचारी उन्हें अस्पताल लेकर पहुंचे, जहां डॉक्टर ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। पूर्व मुख्य निर्वाचन आयुक्त ओपी रावत की गुरुवार दोपहर 12.45 बजे मुंबई के लिए फ्लाइट थी। उनकी लाइजनिंग के लिए नायब तहसीलदार साहू को लॉयजन ऑफिसर बनाया गया था। इसके चलते वे सुबह खुद कार चलाकर एयरपोर्ट पर पहुंचे थे।

दो साल पहले हुआ था प्रमोशन- साहू राजस्व निरीक्षक से नायब तहसीलदार के रूप में करीब दो साल पहले पदोन्नत हुए थे। यहां से उन्हें टीकमगढ़ में पदस्थ किया था। फिर वे ट्रांसफर होकर भोपाल आए। जहां गोविंदपुरा तहसील में उन्हें पदस्थ किया गया।

भोपाल में ही रहता है पूरा परिवार- एसडीएम श्रीवास्तव ने बताया कि साहू का परिवार भोपाल में ही रहता है। उनके दो बेटे हैं, जो घटना के तुरंत बाद ही आ गए। गोविंदपुरा एसडीएम रवीश कुमार श्रीवास्तव, तहसीलदार सौरभ वर्मा समेत प्रशासनिक अधिकारी अस्पताल पहुंचे। जहां शव का पोस्टमॉर्टम किया गया।हुजूर एसडीएम विनोद सोनकिया ने बताया कि साहू बैरागढ़ में राजस्व निरीक्षक रह चुके हैं। उनका अच्छा व्यवहार था। अपने काम को लेकर वे हमेशा गंभीर रहे हैं।

भोपाल के भगवान सिंह का विश्व रिकॉर्ड

साइकल से एवरेस्ट बेस कैंप तक पहुंचने वाले दुनिया के पहले व्यक्ति

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल के साहसी युवक भगवान सिंह ने वो कर दिखाया, जो अब तक दुनिया में किसी ने नहीं किया था। उन्होंने 5,364 मीटर की ऊंचाई पर स्थित माउंट एवरेस्ट बेस कैंप तक अपनी एमटीबी बाइक (साइकिल) पहुंचा कर नया विश्व रिकॉर्ड बना दिया। इस उपलब्धि के साथ भगवान सिंह (52) दुनिया के पहले व्यक्ति बन गए हैं, जिन्होंने दो पहियों पर एवरेस्ट बेस कैंप तक पहुंचने का साहसिक कारनामा किया। भगवान सिंह ने यह सफर 9 दिनों में तय किया। रास्ते में दुर्गम और बर्फीले ट्रैक, पत्थरीली चढ़ाई, माइनस तापमान और ऑक्सीजन की कमी जैसी कठिन चुनौतियां थीं। मातृभूमि के प्रति प्रेम, अदम्य जज्बे और लोहे जैसी हिम्मत ने उन्हें हर मुश्किल पर विजय दिलाई। कई जगह ऐसे मोड़ आए जहां

बाइक को खुद उठाकर ले जाना पड़ा, लेकिन तिरंगा फहराने का सपना हर थकान पर भारी पड़ा।

भगवान सिंह ने मीडिया से साझा किया अपना अनुभव- एवरेस्ट बेस कैंप से से बातचीत में भगवान सिंह ने कहा,जय हिंद! आज तक एमटीबी बाइक (साइकिल) एवरेस्ट बेस कैंप तक नहीं आई थी। मैंने अपने भारत की तरफ से कोशिश की और नौ दिन की कठिन मेहनत के बाद इसको ऊपर लाकर क्लाइम्ब किया। मेरे साथ आशीष और तेजिंग शेरपा दो साथियों ने सपोर्ट किया। आज मैं एमटीबी बाइक लेकर 5,364 मीटर की ऊंचाई पर अपने देश का तिरंगा फैला रहा हूं।

मध्यप्रदेश और देश के लिए गर्व का क्षण

भोपाल निवासी भगवान सिंह की यह ऐतिहासिक उपलब्धि न केवल मध्यप्रदेश बल्कि पूरे देश के लिए गर्व का विषय है। अब तक दुनिया में किसी ने एवरेस्ट बेस कैंप तक बाइक ले जाने का साहस नहीं दिखाया था। भगवान सिंह ने इस कारनामे से साबित कर दिया कि मजबूत इरादों के सामने पहाड़ भी झुक जाते हैं। दुनिया की सबसे ऊंची चोटी माउंट एवरेस्ट 8,848 मी. पर 19 मई 2016 को सुबह 9:30 पर पहुंचकर देश एवं प्रदेश का झंडा फहराया। साथ ही मध्यप्रदेश के प्रथम पर्वतारोही बनकर प्रदेश को गौरवान्वित किया। विश्व की 7वें नंबर की चोटी तथा आस्ट्रेलिया महाद्वीप की सबसे ऊंची चोटी 2.228 मी0 माउंट माउंट कोजिअस्कों पर 15 अगस्त 2024 को सुबह 9:22 बजे देश का ध्वज फहराया एवं राष्ट्रगान गाने वाले प्रथम भारतीय होने का गौरव प्राप्त किया। लद्दाख पैगोंग झील पर 45 डिग्री में 14,600 फीट की ऊंचाई वा 21 किमी की हाफ मैराथन पूरी कर गिनीज बुक वर्ल्ड रिकार्ड में नाम दर्ज कराया। दुनिया की सबसे ऊंची सड़क, कुल्लू मनाली लेह होते हुए खारदुंग-ला दर्श जोक कि 18.380 फीट की उंचाई पर 600 कि.मी. की चढ़ाई है तथा माइनस तापमान में 09 दिन में साइकिल चलाकर लगातार 03 वर्षों 2017,2018 एवं 2019 में पूर्ण कर मध्यप्रदेश के प्रथम साइकिलिस्ट बनने का गौरव प्राप्त किया।